बकरी के दिन

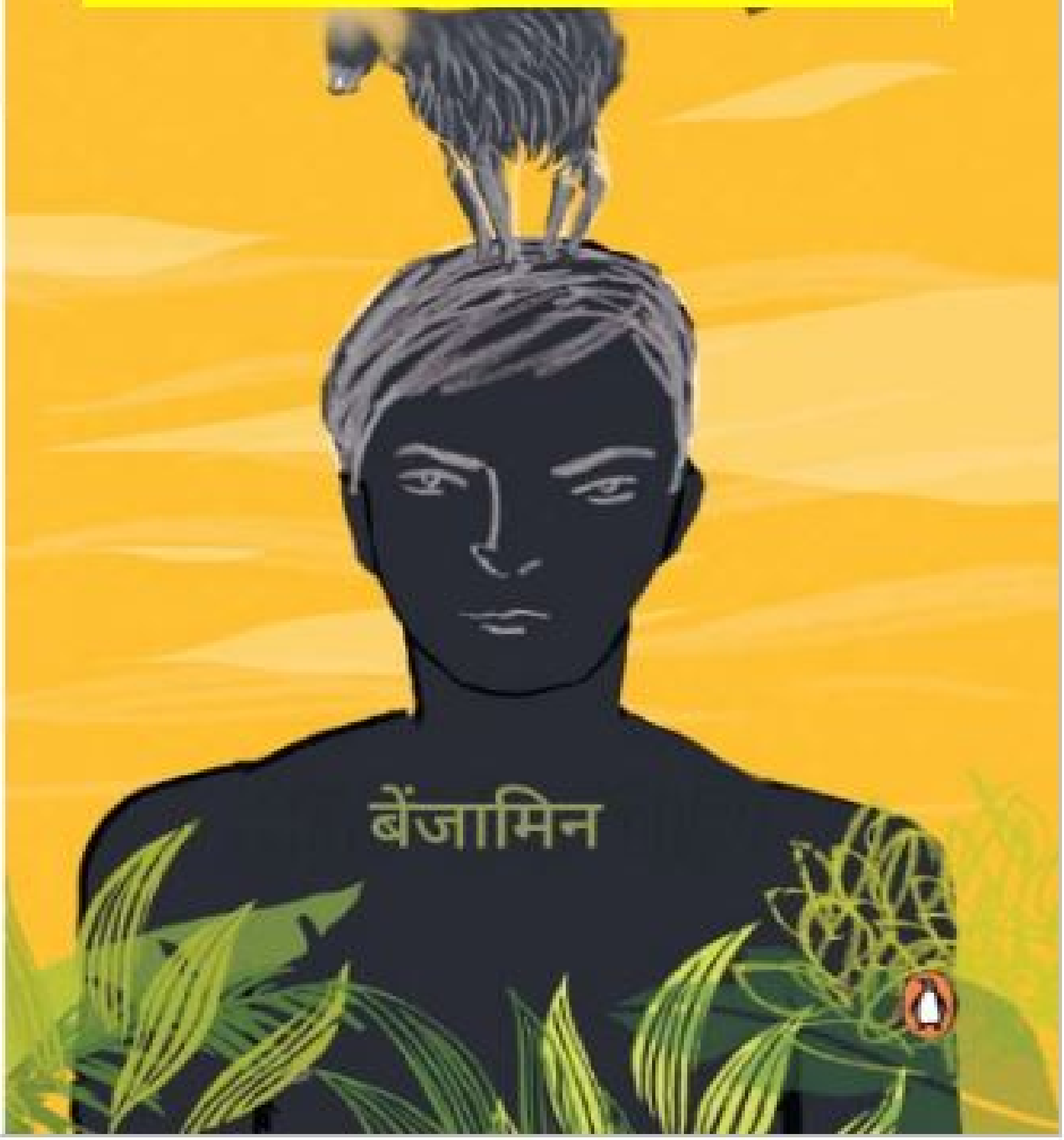

बेंजामिन

बकरी के दिन

Table of Contents

लेखक के बारे में

कारागार

दो

तीन

चार

रेगिस्तान

छह

सात

आठ

नौ

दस

ग्यारह

बारह

तेरह

चौदह

पंद्रह

सोलह

सत्रह

अठारह

उन्नीस

बीस

इक्कीस

बाईस

तेईस

चौबीस

पच्चीस

छब्बीस
सत्ताईस
अट्ठाईस
उनतीस
तीस
पलायन
बत्तीस
तैंतीस
चौंतीस
पैंतीस
छत्तीस
सैंतीस
अड़तीस
उनतीस
चालीस
इकतालीस
शरण
तैंतालीस
लेखक का नोट
कॉपीराइट पृष्ठ

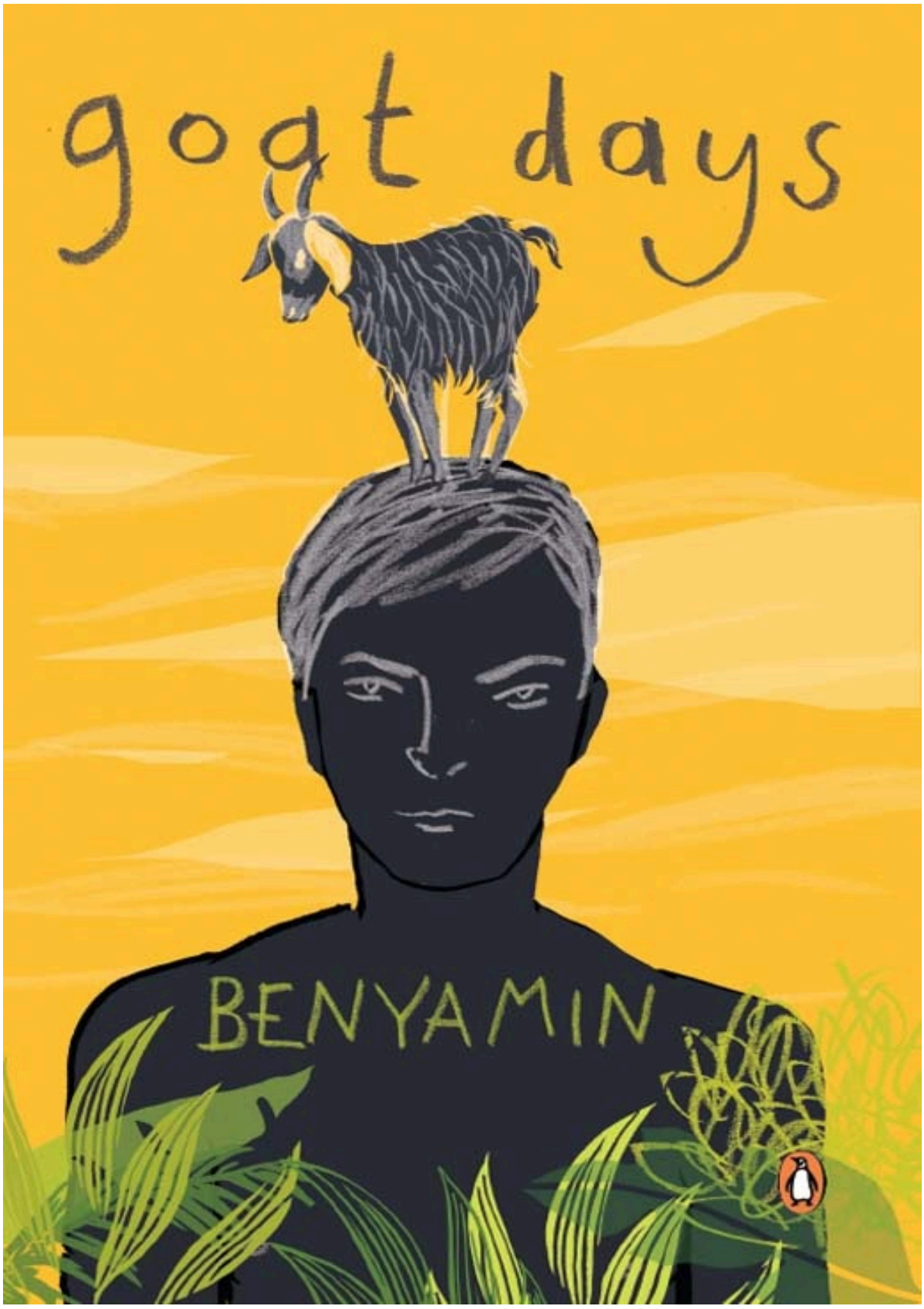
goat days
BENYAMIN

Penguin

बेंजामिन

बकरी के दिन
जोसेफ कोयिप्पल्ली द्वारा मलयालम से अनुवादित

पेंगुइन बुक्स

अंतर्वस्तु

लेखक के बारे में
कारागार
एक
दो
तीन
चार
रेगिस्तान
पाँच
छह
सात
आठ
नौ
दस
ग्यारह
बारह
तेरह
चौदह
पंद्रह
सोलह

सत्रह
अठारह
उन्नीस
बीस
इक्कीस
बाईस
तेईस
चौबीस
पच्चीस
छब्बीस
सत्ताईस
अट्ठाईस
उनतीस
तीस
पलायन
इकतीस
बत्तीस
तैंतीस
चौंतीस
पैंतीस
छत्तीस
सैंतीस
अड़तीस
उनतीस
चालीस
इकतालीस
शरण
बयालीस
तैंतालीस

लेखक का नोट
कॉपीराइट पृष्ठ

पेंगुइन बुक्स

बकरी के दिन
बेन्यामिन 1992 से बहरीन में रह रहे हैं। उनके लघु कहानी संग्रह यूथेनेसिया ने 2002 में अबू धाबी मलयालम समाजम पुरस्कार जीता और 2009 में उनके उपन्यास आदु जीविथम (गोट डेज़) ने केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता।
जोसेफ कोयिपल्ली केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय में तुलनात्मक साहित्य पढ़ाते हैं। उन्होंने शेरुब्से कॉलेज, भूटान में पढ़ाई की है; जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली; और हेल यूनिवर्सिटी, सऊदी अरब।

एक

दो पराजित व्यक्तियों की तरह, हमीद और मैं बाथा के छोटे से पुलिस स्टेशन के सामने कुछ देर खड़े रहे। गेट के पास बने संतरी बॉक्स में दो पुलिसकर्मी बैठे थे। एक कुछ पढ़ रहा था। उसकी मुद्रा, सिर हिलाने का तरीका और आधी बंद आँखें बता रही थीं कि वह कोई धार्मिक ग्रंथ पढ़ रहा था। दूसरा पुलिसकर्मी फोन पर बात कर रहा था। उसकी हँसी और बातचीत की आवाज़ गली में सुनाई दे रही थी। हालाँकि दोनों एक-दूसरे के करीब बैठे थे, फिर भी वे अपनी-अपनी दुनिया में खोए हुए थे। दोनों में से किसी को भी हमारी परवाह नहीं थी।
चौकी से थोड़ी दूर पर, एक जंगली नींबू का पेड़ सड़क की ओर मुड़ा हुआ था। हम उसकी छाया में बैठ गए, इस उम्मीद में कि कोई गार्ड अपने काम से नज़र उठाकर हमें देखेगा। हम काफी देर तक उसी स्थिति में बैठे रहे। इसी बीच, एक-दो अरब तेज़ी

से पुलिस स्टेशन के अंदर गए और कम से कम तीन-चार बाहर निकले। ऐसा लग रहा था मानो हम उनके लिए अदृश्य हों। तभी पुलिस स्टेशन परिसर से एक पुलिस वाहन निकला। हम उछल पड़े और उत्सुकता से उसका पीछा करने लगे। लेकिन, मुख्य सड़क के दोनों ओर वाहनों को देखने के लिए रुकने के बाद, वह अपने रास्ते चला गया। हताश होकर, हम पेड़ से टिक गए।

जब भी हमें लगता कि फोन पर बात कर रहे गार्ड ने अपनी कॉल खत्म कर दी है, तो हम बेचैनी से उठकर संतरी चौकी तक चले जाते। लेकिन यह व्यर्थ था, क्योंकि वह पल भर में ही दूसरा फोन कर देता। दूसरा संतरी पढ़ने में इतना मग्न रहता था कि ऐसा लगता ही नहीं था कि वह जल्द ही ऊपर देखेगा।

हमने उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए दो-तीन बार संतरी चौकी के पास से भी गुजरे। हालांकि, उन्होंने हमें नोटिस नहीं किया।

क्या हम सबने ऐसे कई बदकिस्मत लोगों के बारे में नहीं सुना है जो किसी आपात स्थिति में बिना नमाज़ पढ़े अपने कमरे से बाहर निकल गए और बाज़ार में, सार्वजनिक स्थानों पर या मस्जिदों के सामने गिरफ्तार हो गए? कितने दिन हम सब्जी मंडी, मछली मंडी और व्यस्त सड़कों पर इस उम्मीद में घूमते रहे कि कहीं गिरफ्तार न हो जाएं? कई मुथव्वा हमारे पास से गुज़रे, किसी ने हमें नहीं रोका। कई पुलिसवाले हमारे सामने से गुज़रे, किसी ने हमारी जाँच नहीं की। इतना ही नहीं, हम नमाज़ के समय मस्जिदों के पास बिना नमाज़ पढ़े ही मंडराते रहे। हमने कई मस्जिदों में और दिन के अलग-अलग समय पर ऐसा करने की कोशिश की। फिर भी किसी ने हमें नोटिस नहीं किया। एक दिन तो मैंने जानबूझकर एक पुलिसवाले के पैर पर ठोकर मार दी। मुझसे पूछताछ करने के बजाय, उसने मुझे उठाया, अल्लाह के नाम पर बहुत माफी मांगी और मुझे जाने दिया। आखिर ऐसा क्यों है कि मुसीबत भी तब हमारे पास आने से कतराती है जब हमें उसकी सख्त ज़रूरत होती है?

अंततः, कोई और रास्ता न देखकर, हमने पुलिस स्टेशन के सामने आकर खड़े होने का फैसला किया; फिर भी कोई फायदा नहीं हुआ। थोड़ी देर बाद, हमने पहरेदारों को पार करके स्टेशन के अंदर जाने का फैसला किया। हामिद के सुझाव पर मैं तुरंत उठ खड़ा हुआ और चलने लगा, मानो मैं इसी बात का इंतज़ार कर रहा था। अब और इंतज़ार नहीं कर सकता था। जैसे ही हम लोहे की लंबी चौखट के पास से गुज़रे, पढ़ रहे पहरेदार ने अपनी नज़रें उठाईं और हमें आवाज़ दी। हम वापस पहरेदार के पास

गए और कहा कि हम मुदीर से मिलना चाहते हैं। हमें आगे बढ़ने का इशारा करते हुए, वह अपनी किताब में वापस लग गया।

हम पुलिस स्टेशन में दाखिल हुए और सीढ़ियों की एक लंबी कतार चढ़े, जहाँ से गुजरते हुए हमें कुरान की आयतों से बड़े-बड़े शिलालेख वाले दरवाजे दिखाई दिए। एक नोटिस बोर्ड के नीचे, जिस पर कागज़ सजावट के तौर पर चिपके हुए थे, हमने कुछ पुलिसकर्मियों को बैठे हुए, खुबस खाते और कहवा पीते हुए, ज़ोर-ज़ोर से बातें करते देखा। हम चुपचाप काउंटर के सामने खड़े हो गए। हमें देखकर उनमें से एक ने बातचीत रोक दी और खाते हुए ही अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।

मैंने हाथ से इशारा करके बताया कि मुझे भाषा नहीं आती। एक और पुलिसकर्मी, हाथ में कहवा का प्याला लिए, अपनी सीट से उठा, हमारी ओर आया और हमसे हमारे पत्तका (एक प्रकार का पेय) माँगे। जी हाँ, आख़िरकार किसी ने तो पूछा ही! हमने बेबसी से सिर हिलाकर कहा कि हमारे पास पत्तका नहीं है। उसने कहवा का प्याला मेज पर रखा, दराज खोला, एक टिश्यू पेपर निकाला और अपने हाथ-होंठ पोंछे। फिर अंदर जाते हुए उसने हमें अपने पीछे आने का इशारा किया।

वह हमें मुदीर के कमरे में ले गया, जिसने हमें अंदर आते देख कंप्यूटर स्क्रीन से नज़रें ऊपर उठाईं। हमारे साथ आए पुलिसकर्मी ने मुदीर से कुछ कहा और उसने हमसे कुछ पूछा। हमने समझने का कोई संकेत नहीं दिया। मुझे दिखावा करने की ज़रूरत नहीं थी; मैं वास्तव में पुलिसकर्मी की कही हुई ज़्यादातर बातें या मुदीर के पूछे गए सवालों को नहीं समझ पाया था। लेकिन हमीद को नाटक करना पड़ा। मैंने उसे धाराप्रवाह अरबी बोलते सुना था। फिर से, मुदीर और पुलिसकर्मी ने किसी विषय पर बात की। इसी बीच, मैंने उसके कमरे का जायज़ा लिया। यह एक बड़ा दफ्तर था। दीवारों पर कुरान की आयतें, राजाओं के चित्र और काबा की एक तस्वीर लगी हुई थी। मुदीर जहाँ बैठा था, उसके बाईं ओर एक टीवी और दाईं ओर एक कंप्यूटर था। थोड़ी दूर पर एक सोफा और एक चायदानी थी। चायदानी पर प्लास्टिक के फूलों वाला एक फूलदान रखा था। सामने वाली दीवार पर एक तख्ती थी जिस पर कुछ तस्वीरें लगी हुई थीं। मैंने उन तस्वीरों को देखा। दाढ़ी वाले लोग जिनकी आँखें बेजान सी थीं, अरबी पोशाक में अश्वेत लोग। हर तस्वीर के नीचे अरबी में उनके नाम लिखे हुए थे। चौथी पंक्ति में तीसरी तस्वीर देखते ही मेरी आँखें बर्फ़ की तरह जम गईं। मैंने अपना सिर हिलाया और उसे फिर से ध्यान से देखा। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा और अचानक

घबराहट छा गई। मुझे पता ही नहीं चला कि मैं क्या कर रही हूँ, मैं उस बोर्ड की ओर बढ़ने लगी जिस पर तस्वीर चिपकी थी। इब्राहिम खदिरी! मैंने अपना हाथ अपने दिल पर रख लिया।

'क्या? क्या तुम उसे जानते हो?' पुलिसवाले ने मुझसे पूछा। मैं बुरी तरह घबरा गया। मेरे हाव-भाव में बदलाव साफ दिख रहा था। फिर भी, मैंने ना में सिर हिलाया। मुदीर ने मुझे बुलाया और जब मैं उसके पास गया, तो वह उछल पड़ा और मेरे कान पर एक ज़ोरदार थप्पड़ मारा। ओह! मुझे याद है कि दूसरे कान से कितना दर्द निकला था।

'अगर तुम उसे नहीं जानते, तो फोटो देखने क्यों गए थे?' मुदीर चिल्लाया। मैं सिर झुकाए खड़ा रहा। उसने मुझसे अरबी में कुछ और पूछा। मैंने जवाब नहीं दिया। आखिर में, एक और थप्पड़ मारने के बाद, वह अपनी कुर्सी पर वापस बैठ गया। मैं नहीं रोया। लेकिन हमीद रोया, इसलिए उसे थप्पड़ नहीं पड़ा। मुदीर ने पुलिसवाले को कुछ निर्देश दिए। हमें दूसरे कमरे में ले जाया गया और दूसरे पुलिसवाले के हवाले कर दिया गया। उसने एक अलमारी खोली, हथकड़ी निकाली और हमें पहना दी, जिसके बाद उसने हमें एक बेंच पर बिठा दिया।

हमारी तरह वहाँ मौजूद चार-पाँच अन्य लोगों के हाथों में भी हथकड़ियाँ थीं। मुझे शक है कि उनमें से कोई भी हमारी तरह गिरफ़्तार होने पर खुश था। दोपहर में हथकड़ियाँ हटा दी गईं और हमें एक कोठरी में डाल दिया गया। उस कोठरी में छह लोग थे, जिसमें मुश्किल से तीन ही समा सकते थे। मुझे उनमें कुमार नाम का एक मलयाली याद है। वह एक सब्ज़ी की दुकान में काम करता था और उसे गिरफ़्तार कर लिया गया था क्योंकि उसके अरब साथी ने उस पर चोरी का आरोप लगाया था। जहाँ तक हमारी कोठरी में मौजूद दो अरब और एक पाकिस्तानी की बात है, मुझे नहीं पता कि उन पर क्या आरोप लगाए गए थे।

उस रात हममें से कोई सो नहीं सका, क्योंकि हम सब एक साथ ठसाठस बैठे थे, मानो किसी खचाखच भरे ट्रेन के डिब्बे में हों। अरब लोग आराम से पैर फैलाकर सो रहे थे, जिससे दूसरों को और भी ज्यादा तकलीफ हो रही थी। फिर भी, मैंने जो कुछ सहा था, उसकी तुलना में वह तंग कोठरी मेरे लिए स्वर्ग थी।

अगली सुबह, चाय के बाद, हमें फिर से हथकड़ी पहनाई गई और एक गाड़ी में ले जाया गया। उस गाड़ी में हथकड़ी पहने हुए और भी लोग थे जो आपस में जान-पहचान

बनाने की कोशिश कर रहे थे। उनके बीच भी, हमीद और मैं चुप रहे और सिर झुकाए रहे।

लंबी यात्रा के बाद, गाड़ी देश की सबसे बड़ी जेल सुमेसी के परिसर में आकर रुकी। देश के अलग-अलग कोनों से कई गाड़ियाँ अलग-अलग समय पर जेल के प्रांगण में दाखिल हुईं; और हर गाड़ी से सैकड़ों 'अपराधी' बाहर निकले। सुनने में भले ही अजीब लगे, लेकिन यह दृश्य मुझे अपने देश के विवाह समारोहों की याद दिला रहा था —कैदी दूल्हे के थके-हारे रिश्तेदारों की तरह लग रहे थे जो समारोह स्थल पर इधर-उधर घूम रहे थे। अब मैं भी उन्हीं रिश्तेदारों में से एक बन गया था!

गाड़ी से उतरते ही हमें वार्डन के दफ्तर ले जाया गया। वहाँ बहुत चहल-पहल थी। कई पुलिसकर्मी आ-जा रहे थे। वकील आ-जा रहे थे। मुथव्वा आ-जा रहे थे। अरब लोग भी आ-जा रहे थे। एक नज़र में ही मुझे हमारी अदालतों के बरामदे याद आ गए। वार्डन के दफ्तर के सामने काफी लंबी कतार लगी थी और हम सबसे आखिर में खड़े हो गए। हमारे साथ आए पुलिसकर्मी कतार से थोड़ी दूर बरामदे की छाँव में बैठ गए। जैसे-जैसे एक-एक व्यक्ति को अंदर बुलाया जाता, हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए। मुझे पता था कि कतार धीरे-धीरे हमें जेल की ओर ले जा रही है, और मैं इस बात को लेकर चिंतित था कि अंदर मेरा क्या हाल होगा। लेकिन मैं काफी उत्साहित भी था, लगभग उस व्यक्ति की तरह जो पहली बार मतदान केंद्र के सामने खड़ा होकर अपना वोट डालने जा रहा हो। चुपके से मैंने अपने मन की बात हमीद को बताई।

हम धीरे-धीरे आगे बढ़े और आखिरकार मैं कतार में सबसे आगे पहुँच गया। उसके बाद के तीन मिनट के इंतज़ार में, मुझे एक अजीब सी बेचैनी महसूस हुई जिसे समझाना मेरे लिए मुश्किल है। मुझे बुलाया गया और हमारे साथ आया पुलिसकर्मी भी उठा और मेरे पीछे अंदर चला गया। वार्डन के सामने एक रजिस्टर रखा था। पुलिसकर्मी द्वारा दिए गए कागज़ और कुछ जानकारियों के आधार पर रजिस्टर में कुछ दर्ज किया गया। फिर मुझे पृष्ठ के बाएँ छोर पर बने कॉलम में हस्ताक्षर करने को कहा गया। उसके बाद मुझे एक दूसरे पुलिसकर्मी के पास ले जाया गया जिसने किसी स्याही से मेरी बांह पर कुछ अरबी अक्षर गुदवा दिए। मैं बचपन में मदरसे में पढ़ा था, इसलिए मैं उसे 13858 नंबर के रूप में पहचान सका। शायद मदरसे की शिक्षा का यही एकमात्र उपयोग था जो मैंने कभी किया।

जिस हॉल में मैं दाखिल हुआ, वह एक दिलचस्प जगह थी। नाई एक छोर से दूसरे छोर तक कतार में बैठे थे। दरवाजे पर खड़े पुलिसकर्मी ने मुझे एक ऐसे नाई के पास भेजा जिसने अभी-अभी दूसरे व्यक्ति का काम खत्म किया था। ये लोग अविश्वसनीय गति से काम कर रहे थे। सिर पर ट्रिमर की गति को महसूस किया जा सकता था। उन्हें काम पूरा करने में दो मिनट—अधिकतम तीन मिनट—लगते थे।

जब मैं सिर झुकाए नाई के सामने बैठा था, तभी मेरी नज़र हमीद पर पड़ी जो मेरे बगल वाले नाई के सामने बैठा था। हम दोनों का काम लगभग एक ही समय पर खत्म हुआ। मैंने हमीद के चेहरे की ओर देखा, और उसने मेरे चेहरे की ओर। दो गंजे। हम हँस पड़े। घोर दुख के समय में हँसी का एक दुर्लभ क्षण!

फिर हमें विशाल जेल भवन में ले जाया गया। यह आम तौर पर विशाल माने जाने वाले भवनों से कहीं अधिक बड़ा था। यह दो-तीन किलोमीटर में फैला हुआ था और विभिन्न खंडों में विभाजित था। प्रत्येक खंड इतना लंबा था कि उसका अंत दिखाई नहीं देता था। प्रत्येक राष्ट्रीयता के लिए एक खंड था—अरब, पाकिस्तानी, सूडानी, इथियोपियाई, बांग्लादेशी, फिलिपिनो, मोरक्कन, श्रीलंकाई और अंत में भारतीय। अधिकांश भारतीय निश्चित रूप से मलयाली थे। स्वाभाविक रूप से हमें भारतीय खंड में ले जाया गया। यह गंजे और दाढ़ी वाले लोगों से भरा हुआ था। दाढ़ी की लंबाई आने के समय के अनुसार बदलती रहती थी। यह एक दिलचस्प दृश्य था। ऐसा लग रहा था जैसे मैं गंजे लोगों के गुरुवार के मेले का हिस्सा हूँ। हमारा खंड बहुत भीड़भाड़ वाला था और वहाँ बहुत शोरगुल था। यहाँ, अनुशासन, शांति और भय की वे धारणाएँ जो जेल शब्द से जुड़ी होती हैं, बिल्कुल भी मौजूद नहीं थीं।

हमीद और मैं उस भीड़ में बिल्कुल खो गए थे, जैसे दो अजनबी पहली बार किसी शहर में आए हों। इस सच्चाई को समझने में थोड़ा समय लगा कि मैं आखिरकार जेल में हूँ। बिना किसी स्पष्ट कारण के, मैं कुछ देर तक रोता रहा। कई दिनों के विचार-विमर्श और हिसाब-किताब के बाद मैंने जेल आने का फैसला किया था। इसकी कठोरता के बावजूद, मैंने यह निष्कर्ष निकाला था कि मेरी परिस्थितियों से उबरने के लिए जेल ही सबसे अच्छा विकल्प है।

हां, जीने की इच्छा के कारण ही मैं जेल में पहुंच गया।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि स्वेच्छा से कारावास चुनने के लिए मुझे कितना कष्ट सहना पड़ा होगा!

दो

हम कुछ ही समय में जेल के तौर-तरीकों से अभ्यस्त हो गए। जब हम पहली बार अंदर आए थे, तब जो हलचल हमने देखी थी, वह दोपहर के भोजन के बाद की थी। जेल कर्मचारी थालियाँ समेटने में व्यस्त थे। यहाँ दोपहर का भोजन ज़ुहर की नमाज़ के तुरंत बाद परोसा जाता था। उस दिन हम दोपहर का भोजन नहीं कर पाए। हालाँकि, मैंने जो कष्ट सहा था, उसकी तुलना में एक भोजन छूट जाने का पछतावा करना हास्यास्पद लगता है।

कैदी दोपहर की नींद में सुस्ती से बातें करते रहे। खाना खाने के बाद सुस्ती के मारे कई लोग सो गए। उस ब्लॉक में चारपाई, चटाई या गद्दे नहीं थे। बस ज़मीन पर ही जगह मिल जाती थी। आराम और सुख-सुविधाओं के आदी किसी व्यक्ति के लिए गर्मी असहनीय रही होगी; दीवारों पर लगे तीन-चार एसी की धीमी आवाज़ से भी कोई खास राहत नहीं मिली।

हमारे ब्लॉक में लगभग ढाई सौ लोग रहे होंगे। कैदी जहाँ-जहाँ जगह मिल रही थी, वहीं लेटे हुए थे, मानो किसी प्राकृतिक आपदा के बाद पड़े शव हों। जो सो नहीं रहे थे, वे गोल घेरे में बैठकर बातें कर रहे थे। दो नए कैदियों को देखकर, मलयाली जैसे दिखने वाले एक समूह में से किसी ने ऊपर देखकर कहा, 'चिंता मत करो, हममें से ज़्यादातर लोग मलयाली ही हैं। आप जिस भी समूह में चाहें शामिल हो जाइए,' और फिर बातचीत में लौट गया।

हमीद और मैंने एक कोने में बैठकर अकेले ही प्रार्थना की, किसी समूह में शामिल नहीं हुए। लंबी यात्रा और नींद की कमी से थके होने के कारण हमें तुरंत ही नींद आने लगी। लेकिन थोड़ी देर बाद असर की नमाज़ की अज़ान सुनाई दी। इधर-उधर से लोग जाग उठे और धीरे-धीरे नमाज़ के लिए निर्धारित स्थान की ओर चल पड़े। हम भी उनके साथ चल दिए। बाकी लोगों के साथ, हमने भी अल्लाह, जो अत्यंत दयालु है, से प्रार्थना करने के लिए अपना मुख काबा की ओर कर लिया।

परम कृपालु और दयालु ईश्वर के नाम पर...

प्रार्थना करते समय मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरे अतीत के सारे दुख एक धारा की तरह बह रहे हों। मैं खुशी के आँसू रोया, क्योंकि मुझे दयालु अल्लाह का स्नेह याद

आया, जिसने मेरी सारी कठिनाइयों के दौरान मेरी रक्षा की और दुखों के लंबे रेतीले विस्तार को पार करने में मेरी मदद की!

अल्लाह को अपने सारे दुख-सुख अर्पित करते हुए नमाज़ पढ़कर जब मैं उठा, तभी घंटी बजी। सो रहे लोग जाग उठे और ब्लॉक के दूसरे कोने पर बन रही कतार में अपनी जगह ले ली। हालाँकि हमें पता नहीं था कि यह किस लिए है, फिर भी हम भीड़ के पीछे-पीछे चल दिए। जैसे-जैसे कतार आगे बढ़ी, एक बड़ा चाय का बर्तन नज़र आया। हम एक कप उठा सकते थे, उसमें चाय भर सकते थे, बगल वाली मेज़ से दो-तीन बिस्कुट ले सकते थे और कहीं भी बैठकर शांति से चाय पी सकते थे। चाय खत्म होने पर कप को धोकर मेज़ पर वापस रखना पड़ता था। यह बिल्कुल भी जेल जैसा नहीं लग रहा था। यह तो किसी आपदा राहत शिविर जैसा था। ब्लॉक के अंदर कोई भी आज़ादी से घूम-फिर सकता था और बातें कर सकता था। पिछले तीन-चार सालों से मैं इस बात के लिए तरस रहा था—किसी से बात करने का मौका। अपनी इस नई आज़ादी का इस्तेमाल करते हुए, मैं हमीद से लगातार बातें करता रहा। मैंने उसे बोलने का कोई मौका ही नहीं दिया। मैं लगातार बोलता रहा। मेरी ज़बान एक पल के लिए भी नहीं रुकी। हमीद, जो मुझे अच्छी तरह से जान चुका था, ने बड़ी धैर्य से मेरी बातें सुनीं। मैंने हमीद को वही कहानियां कई बार सुनाई होंगी। लेकिन मेरी बात नहीं मानी।

शाम होते-होते पास के भारतीय मोहल्ले से कोई मुझसे मिलने आया। मुझे अब उसका नाम याद नहीं है। मुझे देखते ही उसने मुझसे हाथ मिलाया और मुस्कुराया। मानो मन ही मन कह रहा हो, 'अल्लाह दयालु है।' उसने पूछा कि क्या मैं वही हूँ जो कुंजिक्का की दुकान पर गया था। मैंने हाँ में सिर हिलाया।

'मुझे पता है। तुम्हारे बारे में सुनकर मैं एक बार तुमसे मिलने वहाँ गया था। लेकिन तुम सो रहे थे और मैंने तुम्हें जगाया नहीं।' उसने फिर से मेरा हाथ हिलाया और कहा, 'अल्लाह दयालु है। मैं यहाँ दो दिन पहले ही आया हूँ—प्रायोजक से कहा-सुनी हो गई थी। कोई बात नहीं। कुंजिक्का मेरी मदद करेगी।' वह बोलता रहा। बीच-बीच में वह मेरा हाथ पकड़कर अल्लाह की सौ बार तारीफ करता। मैं रोने लगा। और, पता नहीं क्यों, वह अजनबी भी मेरे साथ रोने लगा। फिर, अल्लाह की तारीफ करते हुए, वह अपने मोहल्ले में लौट गया।

उसके बाद, उस मोहल्ले के कई और लोग मुझसे मिलने आए। किसी ने मुझसे कुछ नहीं पूछा। उन्होंने मेरी कहानी उस अजनबी से सुनी थी। वे बस मुझे देखना चाहते थे

और मुझे हैरानी से देख रहे थे। कुछ ने मुझसे हाथ मिलाया और मुझे सांत्वना दी। मेरे मोहल्ले के लोगों ने भी मुझसे मिलने आए लोगों से मेरी कहानी सुनी थी।
अपने-अपने समूहों से अलग होकर, ब्लॉक में मौजूद ज़्यादातर मलयाली मेरे चारों ओर जमा हो गए। कुछ मुझे अजनबी की तरह घूर रहे थे, कुछ आश्चर्य से, कुछ विस्मय से, कुछ दया से और कुछ संदेह से। खैर, कुछ ही घंटों में मुझे पता चला कि मैं जेल में मौजूद सभी मलयालियों के बीच चर्चा का विषय बन गया था। अगले दिनों में, कई और लोग मुझसे मिलने आए और मुझसे लंबी-लंबी बातें करवाईं। मैंने उनमें से किसी को नाराज़ नहीं किया—बस बोलने की अपनी अदम्य इच्छा को पूरा किया। मैंने अपनी कहानी के हर पल को मन ही मन हज़ार बार दोहराया और मेरा मन और पैर ऐसे जल रहे थे मानो मैं जलती हुई रेत पर चल रहा हूँ।
उस शाम, मगरिब की नमाज़ के बाद जब हम खाने के लिए बैठे, तो मोहल्ले के सभी मलयाली मेरे साथ थे। उनके प्यार के बदले में मेरे पास उन्हें देने के लिए आँसुओं के अलावा कुछ नहीं था।

तीन

जेल में, अलग-अलग नमाज़ों के बाद खाना परोसा जाता था। सुबह की नमाज़ के बाद, सबको एक गिलास दूध मिलता था। नौ बजे चाय तैयार हो जाती थी और नाश्ते तक कभी भी पी जा सकती थी। नाश्ते में खूबुस और दाल करी होती थी। दोपहर करीब 12 बजे, ज़ुहर की नमाज़ के बाद, दोपहर का खाना परोसा जाता था। यह हमेशा किसी तरह की अरबी बिरयानी होती थी जिसे मजबस या कबसा कहते थे। इसे बड़ी-बड़ी थालियों में लाया जाता था, एक थाली कम से कम दस लोगों के लिए। हम अरबी तरीके से थालियों के चारों ओर बैठकर खाते थे। बिरयानी में मांस हर दिन अलग होता था: चिकन, मटन, ऊंट। जब मटन होता था, तो मैं वह खाना नहीं खाता था।
'जो बीत गया सो बीत गया। उसे भूल जाओ और कुछ खाने की कोशिश करो।' 'जेल जैसी सेहत सुधारने की कोई जगह नहीं है। हमें कम से कम वैसे ही लौटना चाहिए जैसे हम यहाँ आए थे। लौटने पर अपनी पत्नी को तुम्हें देखकर दुखी मत होने देना। जो हमने सहा है, उसे सहने की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ हमारी है।' हमीद ने मुझे इन शब्दों से

दिलासा देने की कोशिश की। इतने मीठे शब्दों के बावजूद, मुझे तसल्ली नहीं मिली। यहाँ तक कि मटन शब्द सुनते ही मेरी आँखों में आँसू आ गए।

शुरू में, मुझे बिरयानी में मटन का पता तभी चलता था जब मैं थाली में रखे खाने को छूता था। फिर मैं उसे हाथ से झटककर उठ जाता और चला जाता। बाद में, मैंने पहले से पूछना शुरू कर दिया। जिस दिन बिरयानी में मटन होता था, मैं खाना खाने बैठता भी नहीं था; मैं असर के बाद परोसी जाने वाली चाय और बिस्कुट से ही काम चला लेता था। रात में भी यही हाल था। जब मगरिब और ईशा की नमाज़ के बीच के खाने में खुबूस और मांस परोसा जाता था, तो अगर थाली में मटन होता तो मैं पीछे हट जाता था। अगर मुझे बहुत भूख लगी होती, तो मैं खुबूस को पानी में डुबोकर खा लेता था। मुझे बिना करी के खुबूस खाने में कोई दिक्कत नहीं होती थी। कई सालों से मेरा यही खान-पान रहा था!

सुमेसी जेल में जेल की आम धारणाओं जैसी कोई बात नहीं थी। हम उस ब्लॉक में बेहद आज़ाद ज़िंदगी जीते थे। शायद हमें इतनी आज़ादी इसलिए मिली थी क्योंकि गंभीर अपराधों के लिए सज़ा पाए लोगों को किसी दूसरी जेल या दूसरे ब्लॉक में रखा जाता था। हमारे ब्लॉक में ऐसे अपराधी थे जिनके पास वीज़ा नहीं था, जिनके वीज़ा की अवधि समाप्त हो चुकी थी, या जिनके पास पातका (कानूनी प्रमाण पत्र) नहीं थे, और ऐसे मुसलमान भी थे जो नमाज़ के समय सड़कों पर निकले थे या रमज़ान के दौरान खाना बना रहे थे, सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान करते थे, काला जादू करते थे और अरबों के साथ छोटी-मोटी झड़पें करते थे। मामूली या छोटी-मोटी सज़ा पाए लोग भी थे और ऐसे लोग भी थे जिन्हें देश निकाला दिया गया था।

मुझे अपने जीवन में कभी ऐसे बेफिक्र दिन याद नहीं आते। हम तय समय पर खाना खाते थे, प्रार्थना करते थे, भरपूर सोते थे, बेमतलब की बातें करते थे, मनचाही बातें करते थे और अपने भविष्य के सपने देखते थे। दुनिया हमें नहीं जानती थी। हम भी दुनिया को नहीं जानते थे। यही तो जेल थी।

हमीद ने सिर्फ नहाने की सुविधा न होने की शिकायत की। जेल में एक हफ्ता बिताने के बाद जब मैंने उसे उमस भरी हवा और बढ़ती बदबू के बारे में बड़बड़ाते सुना तो मुझे हंसी आ गई। फिर मैंने उंगलियों पर हिसाब लगाया। तीन साल, चार महीने, नौ दिन। यह सोचकर मैं फिर जोर से हंस पड़ी। शायद हमीद भी मेरी हंसी का मतलब नहीं समझ पाता।

जेल जाने वाले हर व्यक्ति की कहानी मेरी कहानी जैसी ही थी—दर्द, दुख, पीड़ा, आँसू, मासूमियत और बेबसी की। शायद आपने भी कहीं और ऐसी ही कहानियाँ सुनी होंगी। मैं दूसरों के दर्द को कम करके नहीं आंकना चाहता। हर किसी का सफर कठिन था। नुकसान इतने बड़े थे कि उनकी भरपाई कभी नहीं हो सकती। मुझे तो ऐसा भी लगा कि दूसरों की पीड़ा के मुकाबले मेरे दुख बहुत छोटे थे। सच तो यह है कि इन दर्दनाक कहानियों ने मुझे अपने दुख से उबरने में मदद की और इसी वजह से मैं आज भी जी पा रहा हूँ और आपको यह कहानी सुना पा रहा हूँ। वरना, अपने दुख के बोझ तले दबकर मैं आत्महत्या कर लेता। अपने दुख से उबरने का एक तरीका यह है कि हम उन लोगों की कहानियाँ सुनें जो हमसे भी बदतर हालातों से गुज़रे हैं।

हर हफ्ते जेल में पहचान परेड होती थी। यह वह दिन होता था जब अरब लोग फरार मजदूरों की पहचान करते थे—जेल में आंसूओं से भरा दिन। उस दिन, नाश्ते के बाद, हम सभी को ब्लॉक के बाहर एक कतार में खड़ा किया जाता था। अरब लोग हमारे आगे चलते हुए हर चेहरे को ध्यान से देखते थे, मानो चश्मदीद गवाह आरोपी की पहचान करने की कोशिश कर रहे हों। हर हफ्ते हममें से कुछ बदकिस्मत लोग छूट जाते थे। अपने मजदूर को पहचान लेने वाले अरब की पहली प्रतिक्रिया होती थी कि वह इतना ज़ोरदार थप्पड़ मारे कि कान का पर्दा फट जाए। कुछ तो अपनी बेल्ट खोलकर कैदियों को तब तक पीटते थे जब तक उनका गुस्सा शांत न हो जाए। पुलिसवाले दूर से सब कुछ देखते रहते थे, और शायद ध्यान भी न देते हों। यह जानते हुए, कुछ कैदी जो दूर से अपने प्रायोजकों को देख लेते थे, हिम्मत हार जाते थे और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगते थे। तभी समझ आता था कि जब कोई व्यक्ति पूरी तरह से बेबस महसूस करता है तो वह कायर कैसे बन जाता है। उसके लिए, जेल ने शायद उस पीड़ा से राहत दी होगी जो वह सह रहा था। कई लोगों के लिए, उन अरबों के पास लौटना अकल्पनीय था जिन्होंने उन्हें यातनाएं दी थीं। जेल पहुंचने से पहले उन्हें कितनी ही बार मार खानी पड़ी होगी।

लेकिन अरबों में दया या सहानुभूति नाम की कोई चीज नहीं थी। वे कैदियों को तुरंत ले जाते और उन पर आरोप लगाते: उसने मेरा पैसा चुराकर भाग गया; उसने मेरी बेटी के साथ बलात्कार करने की कोशिश की; उसने मुझे जान से मारने की कोशिश की।

कैदी का चेहरा उस बकरे की तरह दयनीय होता जिसे वध के लिए ले जाया जा रहा हो। उसकी बेगुनाही साबित करने वाली चीखें जेल की दीवारों के ऊपर गूंजतीं; मानो किसी वीरान जगह में गूंज रही हों। अरब अपनी मर्जी से कानून लागू करते थे।
अपने देश की जेल में अरबों को उतनी ही आज़ादी प्राप्त थी जितनी हमें विदेश में। इन परेड के दिनों में, कोई भी अरब सुमेसी जेल में स्वतंत्र रूप से घूम सकता था, बशर्ते उसके पास पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराने का प्रमाण पत्र हो। यदि वह अपने फरार गुलाम को ढूंढ लेता, तो उसे बाहर खींचकर जेल वार्डन के सामने पेश कर अपनी याचिका प्रस्तुत कर सकता था। मामले का स्वरूप बदल जाता। मामूली अपराध के लिए जेल में बंद व्यक्ति को अपराधी घोषित कर दिया जाता। तब या तो शरिया कानून लागू होता या अदालती कानून। अरब तो यह भी मांग कर सकता था कि उसे कैदी को अपने साथ ले जाने की अनुमति दी जाए, या उसे देश से निष्कासित कर दिया जाए। यहाँ निष्कासन ही मुक्ति थी। यदि कैदी को अरब को वापस सौंपने का आदेश दिया जाता, तो उसका भाग्य तय हो जाता।
अपने अनुभव को याद करके, मैं यह सोचकर कांप उठता हूँ कि अरब लोग भगोड़े के साथ क्या करेंगे। अल्लाह से यही प्रार्थना की जा सकती है कि वह उन दुर्भाग्यशाली लोगों को इतनी शक्ति दे कि वे उस कठिन परीक्षा से भी बच सकें।
परेड वाले दिन, पूरा ब्लॉक एकदम सन्नाटा छा जाता था। हम उन दोस्तों के बिछड़ने का गम मनाते थे जो तब तक हमारे साथ ब्लॉक में थे, खाना खाते थे, बातें करते थे, मुस्कुराते थे, खेलते थे और अपने वतन के सपने देखते थे। मुख्य हॉल और उसके बाहर से आती उनकी चीखें हमारे कानों में गूंजती रहती थीं। किसी का भी खाने-पीने, बात करने या सोने का मन नहीं होता था। जब तक वह दर्द कम होता, फिर से परेड का दिन आ जाता था। वह दिन दूसरे निर्दोषों के हिस्से में आता था। जेल की यादें आखिर इतनी सुखद नहीं होतीं!
दोपहर के भोजन तक उन दो घंटों में सैकड़ों अरब लोग हमारी परेड लाइन पार कर जाते थे। परेड के शुरुआती कुछ दिनों में हमीद और मैं बहुत डरे हुए थे। दो घंटे तक असहनीय भय, यह न जानते हुए कि कब कोई मुसीबत हम पर टूट पड़ेगी। किसी भी जानी-पहचानी शक्ल की झलक भी असहनीय तनाव पैदा कर देती थी। डर तभी दूर होता था जब हमें यकीन हो जाता था कि वह कोई परिचित व्यक्ति नहीं है।

हालांकि हमें कई बदकिस्मत लोगों के आंसुओं से होकर गुजरना पड़ा, लेकिन जब वह दो घंटे का कष्टदायक दौर समाप्त हुआ तो हमें बहुत राहत मिली। मेरी स्वार्थपरता के लिए मुझे क्षमा करें, लेकिन मुझे खुशी थी कि कोई भी मुझे ढूंढने नहीं आया। शायद यह इसकी नियमितता के कारण था कि परेड के दिनों में तनाव धीरे-धीरे कम होने लगा था। शायद यह इस विश्वास के कारण था कि अब किसी के भी मुझे ढूंढने आने का उचित समय समाप्त हो चुका था।

अपने प्रायोजक से भागने वाला कोई भी व्यक्ति दो सप्ताह के भीतर, या ज़्यादा से ज़्यादा एक महीने के भीतर पुलिस के शिकंजे में आ जाता था; अन्यथा, यह माना जाता था कि उसने कोई सुरक्षित ठिकाना खोज लिया है। उस समय किसी भी अरब के लिए उसे ढूंढना असंभव माना जाता था। कई लोग बिना किसी दस्तावेज़ के ही रह जाते थे। इस बात से अवगत होने के कारण, अरब एक या दो महीने के भीतर ही उसकी तलाश छोड़ देते थे। पुलिस में शिकायत दर्ज रहती थी। अगर इन सब के बाद भी वह मिल जाता, तो अरब की किस्मत ही मायने रखती थी—बस इतना ही।

जैसे ही वो समय बीत गया, हमीद और मुझे राहत मिली। अब कोई भी हमें ढूंढने नहीं आएगा। और कतार में खड़े रहना हमारे लिए मनोरंजन और ध्यान भटकाने का जरिया बन गया। यूं ही बातें करते और मज़ाक करते हुए हमने वो दो घंटे यूं ही बिता दिए। यही हमारा हालात से निपटने का तरीका था—हमने उस डर से समझौता कर लिया था जिसने कभी हमें जकड़ रखा था। ये बात उन सभी के लिए सच थी जिन्होंने चार-पांच महीने जेल में बिताए थे।

हमारा ब्लॉक एक रेलवे स्टेशन जैसा था जहाँ लोग आते-जाते थे। वहाँ कोई स्थायी निवासी नहीं था। सभी कैदी एक साथ नहीं आते थे; वे अलग-अलग दिनों में, अलग-अलग समय पर, देश के विभिन्न कोनों में स्थित अलग-अलग पुलिस स्टेशनों से आते थे। कभी-कभी तो हमें उनके धीरे-धीरे आने-जाने का पता भी नहीं चलता था। लेकिन कुछ लोगों का जाना ऐसा लगता था जैसे ट्रेन के आने पर प्लेटफार्म खाली हो जाता है।

अरबों द्वारा निरीक्षण के अगले दिन दूतावास का दौरा था। विभिन्न देशों के दूतावास अधिकारी अपने-अपने देशों के कैदियों के रिहाई पत्र लेकर जेल आए। अगर पिछला दिन आंसुओं से भरा था, तो अगला दिन खुशियों से भरा था। उस दिन भी सभी कैदियों को एक कतार में बाहर लाया गया। दूतावास अधिकारी उन लोगों के नाम पढ़ते जिनके कागजात—निकास पत्र—तैयार हो चुके थे, और वे आगे बढ़ते। यह एक बेचैनी

भरा इंतजार था। मुझे इसकी तुलना मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता के परिणाम की घोषणा का इंतजार कर रही सुंदरियों की बेचैनी से करना मजेदार लगा। विजेता के चेहरे पर नाम पुकारे जाने पर जो खुशी झलकती है, वैसी ही खुशी हर उस लड़की के दिल में उमड़ रही होगी जिसका नाम पुकारा गया। उस नाम पुकारे जाने ने एक लंबे दर्द से अंतिम मुक्ति का संकेत दिया। लेकिन किसी ने भी इसे खुलकर व्यक्त नहीं किया। ऐसे कई और लोग थे जिनके लिए बेचैनी और उम्मीद से भरा इंतजार जारी था। जब किसी को पता चलता कि उसका नाम पुकारे गए नामों में नहीं है, तो निराशा छा जाती थी। कुछ लोग, जो महीनों से इंतजार कर रहे थे, फूट-फूटकर रोने लगते थे।
इस घोषणा के बाद पाँच मिनट का समय, जब अधिकारी कागजी कार्रवाई पूरी करने के लिए जेल कार्यालय में गए, हमारे लिए विदाई का समय था। यह समय था अपने साथ बिताए जीवन को, एक-दूसरे के दुखों को साझा करते हुए बिताए अनगिनत दिनों को कोमल भावनाओं से याद करने का। फिर भी, पीछे रह गए लोगों ने जाने वालों को बड़ी खुशी से विदाई दी। बहुतों को अलविदा कहना संभव नहीं था। क्योंकि तब तक, चलती ट्रेन की तरह पुलिसवाले की सीटी बज चुकी होती। बुलाए गए सभी लोग बाहर निकलने की ओर दौड़ पड़ते। भला जेल से निकलते समय पुलिसवाले की बेल्ट से पीठ पर मार कौन खाना चाहेगा?

चार

जेल में कई दिन ऐसे ही गुजारते हुए मेरे दिल में गहरा डर घर कर गया। मुझसे पहले और मेरे बाद आने वाले सभी लोग अपने वतन लौट चुके थे। सिर्फ मेरे कागजात ही अभी तक तैयार नहीं हुए थे। मुझे पता था कि रिहा होने वालों के पास पासपोर्ट और दूसरे दस्तावेज थे। यह उम्मीद करना कतई उचित नहीं था कि मेरे परमिट का काम भी उनके जितना जल्दी हो जाएगा। फिर भी, कागजात तैयार करवाने के लिए एक सीमा तक ही समय होता है। मुझे जेल आए चार-पांच महीने हो चुके थे। मेरा एकमात्र सहारा यह था कि हमीद मेरे साथ था और मेरी इस बदकिस्मती में मेरा साथ दे रहा था। उसके कागजात भी अभी तक तैयार नहीं हुए थे।
हर हफ्ते, दूतावास के अधिकारियों के आने पर हमें बड़ी उम्मीदें होती थीं और उनके जाने पर हमारी निराशा और भी बढ़ जाती थी। मैंने कुंजिक्का के इस आश्वासन पर

भरोसा करते हुए खुद को पुलिस के हवाले कर दिया था कि वह बाकी सब संभाल लेगा। सब ठीक हो जाएगा। मुझे कुंजिक्का पर भरोसा करना ही होगा। हे भगवान... अगर मैं कुंजिक्का पर भरोसा नहीं करूँगी तो इस दुनिया में और किस पर भरोसा करूँगी? हे ईश्वर, अपनी दया से मुझे क्षमा कर दीजिए कि मैंने निराशा के इस आधे पल में भी उस पर संदेह किया और आपके नाम पर उसने मेरे लिए जो भी उपकार किए, उन्हें भूल गई।

ये दूतावास के मामले हैं। हर चीज़ अपने समय पर ही होगी। मैंने बहुत इंतज़ार किया है और सब्र किया है। एक-दो दिन और क्या फर्क पड़ता है? अल्लाह, जो दयालु है, ने मेरे लिए जो समय तय किया है, वह अभी नहीं आया है। देरी का यही संतोषजनक कारण था।

सप्ताह का वह दिन था जब अरब लोग जेल आते थे। तब तक हमीद और मैं जेल में पुराने कैदी बन चुके थे। नए आने वाले लोग अरबों के आने से ज़्यादा चिंतित थे, इसलिए हमीद और मैं उन्हें शांत करते हुए उनके पास से गुज़रते हुए लाइन के आखिर में खड़े हो गए। अब तक हम पुलिसवालों से अच्छी तरह परिचित हो चुके थे। मुझे लगा कि मेरी कहानी सुनकर उन्हें मुझ पर थोड़ी दया आ गई होगी। इसी वजह से हमें नए लोगों की तरह अनुशासित रहने की ज़रूरत नहीं थी। वहाँ खड़े-खड़े बातें करना, बेहिचक हँसना और दूसरों का मज़ाक उड़ाना हमारी आदत बन चुकी थी।

मैं हमीद से कुछ कह रहा था कि अचानक उसके चेहरे के भाव बदल गए। मैं चौंक गया और सवालिया निगाहों से उसकी तरफ देखा। कुछ देर तक वह वैसे ही खड़ा रहा। 'ओह नजीब...' उसने धीमी आवाज़ में कहा। पता नहीं उस चीख में कितनी भावनाएँ समाई हुई थीं—दुःख, डर, चोट, दर्द। तब मुझे पता चला कि एक चीख में कितनी सारी भावनाएँ समा सकती हैं। जीवन के उन कच्चे पलों में से एक जिसे दुनिया का कोई भी कलाकार कैद नहीं कर सकता।

हमीद को और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी। मैंने उस जगह की ओर देखा जहाँ उसकी आँखें ठहर सी गई थीं। एक अरब हमारी ओर आ रहा था। उसके हम तक पहुँचने से पहले ही हमीद ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। और इसी वजह से उस अरब को अपने शिकार को ढूँढ़ने के लिए भटकना नहीं पड़ा। जिसे वह ढूँढ़ने आया था, वह वहीं उसके सामने ज़ोर-ज़ोर से रो रहा था।

हमीद को देखते ही अरब उस पर चीते की तरह झपटा और उसे ताबड़तोड़ लात मारने लगा। उसने हमीद को हाथ, बेल्ट और गठरी को बांधने वाले इक़ाल से तब तक पीटा जब तक उसका गुस्सा शांत नहीं हो गया। मोहल्ले के बाकी लोगों की तरह मैं भी बस देखता रहा और रोता रहा।

'मैं घर जाना चाहता था। मैं अब और वहाँ नहीं रह सकता था। मुझे जाने दो... मुझे छोड़ दो... मुझे छोड़ दो...' हालाँकि हमीद चीख रहा था, अरब उसे घसीटकर वार्डन के कमरे में ले गया।

मैंने हमीद को आखिरी बार तभी देखा था। मुझे यह जानने की बहुत उत्सुकता थी कि उसके साथ क्या हुआ होगा, पर मैं उसका पता नहीं लगा सका। ऐसे कितने ही जीवन अधूरे ही समाप्त हो जाते हैं! असहाय प्राणी जो लुप्त हो जाते हैं, अपनी कहानी किसी को सुनाने में असमर्थ।

कुछ दिनों की जान-पहचान, गहरी दोस्ती—यही मेरे लिए हमीद था। वह सुबह से शाम तक एक खेत में काम करता था, कम मजदूरी पर यातनाएँ सहता था। जब हालात असहनीय हो गए तो वह भाग गया। जब वह जेल पहुँचा, तो हमीद मुझसे चार गुना ज़्यादा खुश था। उसे पूरा विश्वास था कि सरकार की सुरक्षा में पहुँचते ही वह फिर कभी किसी अरब के हाथों नहीं पकड़ा जाएगा। लेकिन दुनिया कितनी अचानक उलट-पुलट हो जाती है! उस दिन पूरा ब्लॉक शांत था। वह सबका प्रिय था। वह सबसे ऐसे घुलता-मिलता था जैसे सब उसके अपने हों। खूब मज़ाक करता था। कई लोगों के लिए वह बड़े भाई जैसा था। आखिरकार हमें उसे चीखते-चिल्लाते घसीटते हुए देखना पड़ा। मुझे हाल के दिनों में ऐसा कोई याद नहीं आ रहा जिसने किसी अरब द्वारा वापस ले जाए जाने पर इतना ज़ोर से विरोध किया हो।

अगले दिन जो हुआ, उससे और भी ज़्यादा दुख हुआ। उस दिन दूतावास के अधिकारियों ने सबसे पहले हमीद का नाम पुकारा। हे मेरे प्रभु, आपने पिछले सप्ताह उसका नाम पुकारे जाने की अनुमति नहीं दी थी। अगर पुकारा गया होता, तो उसका जीवन कितना अलग और आनंदमय होता। नहीं, मैं आपके निर्णय पर कोई आपत्ति नहीं करूँगा। मुझे आपकी सत्यता पर पूरा भरोसा है। यदि आप उससे बात करें और उसे समझाएँ कि आपने उसके लिए जो दुख का समय निर्धारित किया है, वह अभी समाप्त नहीं हुआ है।

जब हमीद चला गया, तो मुझे जेल में बहुत अकेलापन महसूस हुआ। मैं नए कैदियों से ज्यादा घुलमिल नहीं पाया। मैं एक कोने में दुबक कर बैठ गया, मुश्किल से ही किसी से बात करता था। मैंने खाना-पीना भी कम कर दिया। असल में, ज्यादातर दिन मैं खाता ही नहीं था। हमीद का जाना मेरी खुशी का छिन जाना था। मैं बेसब्री से इंतज़ार करता था और जब दूतावास के लोग हफ्ते में एक बार आते थे, तो मुझे थोड़ी राहत मिलती थी। जब हम उनसे अपने कागजात के बारे में पूछते, तो वे कई जटिल कागजातों की प्रक्रिया के बारे में कहानियां सुनाते थे। वे हर बार हमें उम्मीद दिलाकर जाते कि अगले हफ्ते तक सब कुछ तैयार हो जाएगा। इस तरह, मेरी उम्मीद कभी बढ़ती, कभी टूटती रहती थी, यह एक नियमित चक्र था।

जेल में ऐसे कई दिन बीत गए और फिर एक और परेड का दिन आ गया। मैं बिना किसी डर या चिंता के कतार में खड़ा था। कई अरब लोग हमारे पास से गुज़रते रहे। तभी अचानक, कतार के सबसे आखिरी छोर पर एक चेहरा दिखाई दिया। जैसे ही वह चेहरा नज़र आया, मेरे अंदर एक गर्जना सी दौड़ गई। मैंने अल्लाह को पुकारा, ठीक वैसे ही जैसे कुछ दिन पहले हमीद ने किया था!

वो मेरे अपने अरबाब थे, जिनके बारे में मुझे पूरा यकीन था कि वो मुझे ढूंढने कभी नहीं आएंगे। अरबाब! मेरे वो अरबाब जिनसे मेरी पहली मुलाकात करीब चार साल पहले रियाद हवाई अड्डे पर हुई थी। मैं डर से कांप रही थी। मुझे लगा कि मैं गिर जाऊंगी, इसलिए मैंने अपने बगल में खड़े व्यक्ति का हाथ कसकर पकड़ लिया।

Desert

.....

पाँच

इराक युद्ध के बाद खाड़ी क्षेत्र में पैदा हुई कलह की धूल कुछ हद तक बैठ गई थी। थोड़े समय की शांति के बाद, तेल उत्पादक देशों में रोज़गार के अवसर फिर से बढ़ गए थे। जब करुवट्टा के एक दोस्त ने casually बताया कि वीज़ा बिक रहा है, तो मेरे

अंदर एक ऐसी तीव्र इच्छा जागी जो मैंने पहले कभी महसूस नहीं की थी। मैं कब से यहाँ हूँ, गुज़ारा करने के लिए गोताखोरी कर रहा हूँ? एक बार विदेश क्यों न जाऊँ? ज़्यादा देर नहीं। मैं इतना लालची नहीं हूँ। बस कुछ कर्ज़ चुकाने के लिए। घर में एक कमरा बनवाने के लिए। बस, ज़्यादातर मलयालियों की आम इच्छाएँ। सिर्फ़ इतना ही नहीं। एक अफवाह थी कि नदी से रेत खनन को नियंत्रित किया जाने वाला है। अगर वह भी बंद हो गया, तो मुझे क्या काम मिलेगा? क्या कोई भूखा रह सकता है? मैं पहले भूखा रह चुका हूँ। लेकिन अब हालात अलग हैं। अब, उम्माह के कहने पर, मेरी शादी हो गई है। मेरी पत्नी चार महीने की गर्भवती है। अब खर्चा रेत के ढेर की तरह बढ़ता जाएगा। इसके अलावा, मुझे हाल ही में बार-बार खांसी और जुकाम हो गया है—शायद लंबे समय तक पानी में रहने के कारण। क्या निमोनिया के डर से पानी में डुबकी लगाने से बचा जा सकता है? यह स्वयं प्रभु की ओर से एक अवसर होना चाहिए। मुझे इसे व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए।

'अगर कोई जाना चाहता है तो मुझे बताओ। मेरे जीजाजी के ज़रिए बात हो रही है। वो यहाँ छुट्टी पर हैं। अगर पैसे भेज दिए जाएँ तो वीज़ा दो महीने में मिल जाएगा,' मेरे दोस्त ने कहा। मुझे वो पासपोर्ट याद आ गया जिसके लिए मैंने सैनू के दबाव में आवेदन किया था।

'हां। कोई है। इसे किसी और को मत देना,' मैंने उत्साह से कहा।

'तो कल घर आ जाना। हम साथ में मेरे जीजाजी से मिलने जा सकते हैं। बाकी बातें तुम उनसे कर लेना।'

जब दोस्त चला गया, तो मेरे मन में एक तनाव था। क्या मुझे जाना चाहिए या नहीं जाना चाहिए?

काफी समय तक मैं इस बात को लेकर मन ही मन जूझती रही। मैंने सैनू को तभी बताया जब मैं इसका हल नहीं निकाल पाई। वह बेहद खुश हुई—किसी भी महिला की यही स्वाभाविक प्रतिक्रिया होती है। 'यह भगवान का दिया हुआ मौका है, इक्का, इसे बर्बाद मत करो। मैं अपने भाइयों को इसके बारे में कब से बता रही हूँ, और कुछ भी नहीं हुआ।'

उसके दोनों भाई खाड़ी देशों में थे।

लेकिन, सैनू, बहुत पैसा खर्च करना पड़ेगा। क्या हमारे पास...?

‘अगर कोई दृढ़ निश्चयी है, तो सब कुछ हो जाएगा, इक्का। क्या जाने वाले सभी लोगों के पास शुरुआत में पर्याप्त पैसा है? तुम आगे बढ़ो और करुवट्टा के आदमी से निडर होकर मिलो।’
वह ऐसी ही है। उसकी ज़बान से निराशा का एक शब्द भी नहीं निकलता। घोर गरीबी में भी वह समृद्धि का दिखावा करने में माहिर है। महिलाओं को ऐसा ही होना चाहिए; वह मेरा गुप्त गौरव थी।
अगले ही दिन मैं अपने दोस्त के जीजा से मिलने गया। उन्होंने खाड़ी देशों की यात्रा से दो हफ्ते पहले तीस हज़ार बीस पाउंड मांगे। उन्हें ये रकम अरब के अधिकारी को वीज़ा बनवाने के लिए देनी थी। वीज़ा मिलने के बाद बाकी दस पाउंड बॉम्बे में एजेंट को टिकट और अन्य खर्चों के लिए देने थे। इतनी रकम जुटाना मेरे लिए मुमकिन नहीं था। फिर भी, हिम्मत करके मैंने हाँ कर दी।
अगले एक हफ्ते में मुझे कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ा! खाड़ी में काम करने वाले हर उस मज़दूर की कहानी ऐसी ही होगी जिसका खाड़ी में कोई रिश्तेदार नहीं था जो उसकी मदद कर सके। आखिरकार मैंने घर गिरवी रखकर और सैनू के पास मौजूद थोड़े से सोने के गहने बेचकर, दूसरे रेत खनिकों से थोड़ी-थोड़ी रकम इकट्ठा करके और अपने सभी जान-पहचान वालों से उधार लेकर कुल रकम जुटाई। हाँ, 'जुगाड़' शब्द ही इसे सबसे अच्छे से बयां करता है। इतना कहना ही काफी है कि मैंने अपने दोस्त के साले को उसके जाने से एक रात पहले पैसे दिए। (मैं अबू धाबी में सैनू के भाइयों से भी मांग सकता था, लेकिन उसने मना कर दिया। वह उनसे नाराज़ थी क्योंकि उन्होंने तब तक मेरी मदद नहीं की थी।)
दो महीने बीत गए, इंतज़ार और सपनों के महीने। फिर उधार लेने का एक और दौर शुरू हुआ। मुझे एजेंट के लिए बाकी दस का इंतज़ाम करना पड़ा। वो भी हो गया। इस बीच, मैंने अनगिनत सपने देखे। शायद वही घिसे-पिटे सपने जो खाड़ी देशों में रहने वाले 14 लाख मलयाली केरल में रहते हुए देखते थे—सोने की घड़ी, फ्रिज, टीवी, कार, एसी, टेप रिकॉर्डर, वीसीपी, सोने की भारी चेन। रात को सोते समय मैंने ये सपने सैनू के साथ बाँटे। ‘मुझे कुछ नहीं चाहिए, इक्का। जब तुम्हारे पास हमारे बच्चे (बेटा या बेटी?) के जीवन को सुरक्षित करने के लिए पर्याप्त धन हो जाए, तब वापस आना। हमें अपने भाइयों की तरह धन जमा करने की ज़रूरत नहीं है। न ही कोई आलीशान घर। बस एक साथ जीवन बिताना है। बस।’

शायद खाड़ी देशों में जाने वाले हर आदमी की पत्नी उसे यही बात कहती है। फिर भी, वे अपने जीवन के बीस या तीस साल वहीं बिता देते हैं। और किस कारण से?
आखिरकार बॉम्बे के एजेंट का टेलीग्राम आया: 'वीज़ा तैयार है। बाकी रकम लेकर आ जाइए।' उस पल मुझे जो खुशी मिली, वो मेरे लिए अविश्वसनीय थी! मुझे यकीन है कि मुझसे पहले खाड़ी देशों में पहुँच चुके हज़ारों मलयालियों की खुशी से कहीं ज़्यादा। उस रात मैंने जिस तरह से अपनी पत्नी को गले लगाया था, उस तरह किसी ने नहीं लगाया होगा। लेकिन एक दुख बाकी था। मेरा बेटा? मेरी बेटी? मैं उसके जन्म के समय वहाँ नहीं रह पाऊँगा। मैं सैंनु के दर्द के दौरान उसकी मालिश नहीं कर पाऊँगा। मानो उस दुख की भरपाई के लिए, मैंने सैंनु के बढ़ते पेट को चूमा। मेरे नबील, मेरी सफिया— ये नाम मैंने अपने बच्चे को पुकारने के लिए चुने थे; मेरी कुंजी, मेरी चक्की— ये प्यार के नाम मैंने उन्हें दिए थे। ओह मेरे बेटे... मेरी बेटी... तुम्हारे दादाजी तुम्हें इस धरती पर बड़ी-बड़ी आँखों से आते देखने के लिए पास नहीं होंगे। लेकिन, जब भी मैं लौटूँगा, तुम्हारे लिए ढेर सारे तोहफे लाऊँगा, ठीक है?
जब मैं उन पलों को याद करता हूँ, तो मुझे उल्टी जैसा महसूस होता है, मानो किसी घटिया फिल्म के दृश्य की बदबू से। हमारे जीवन की कुछ परिस्थितियाँ तो फिल्म के दृश्य से भी कहीं अधिक बेतुकी होती हैं। क्या ऐसा नहीं है?
जब मैं अपने करुवट्टा के दोस्त को वीज़ा मिलने की खबर देने गया, तब मुझे पता चला कि धनुवाचपुरम का एक और लड़का भी मेरे साथ उसी जीजाजी के ज़रिए उसी कंपनी में काम करने के लिए वीज़ा ले आया है। हम दोनों को ही बाहरी दुनिया के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं थी। हमने साथ जाने का फैसला किया।
कायमकुलम से मुंबई जाने वाली जयंती जनता ट्रेन में चढ़ते समय मेरी मुलाकात अपने सहयात्री से हुई। वह लंबा-पतला लड़का था, जिसकी अभी तक मूंछें नहीं आई थीं। "बेटा, हकीम कभी घर से बाहर नहीं निकला। तुम उसके साथ जा रहे हो। कृपया उसका ख्याल रखना," हकीम की माँ ट्रेन की खिड़की से रोते हुए बोली। मैंने सैनू और उम्माह के आँसुओं पर ध्यान नहीं दिया। मैं सबके सामने रोना नहीं चाहता था।
मैं उत्साहित होने से ज़्यादा तनाव में थी। सफ़र में हर तरह की चिंताएँ भरी हुई थीं, जो रास्ते में आने वाली मुश्किलों के बारे में सोचकर मन में उठती हैं: बैग में पैसों की चिंता, जिस शहर में जाना है उसकी चिंता, धोखाधड़ी करने वाली एजेंसियों की कहानियों की चिंता, और यह चिंता कि क्या मेरा दोस्त सासी हमें लेने रेलवे स्टेशन पर मिलेगा। तीन

दिन तक मैंने अपनी चिंताओं में डूबी रही, एक भी दिन बर्बाद नहीं किया। मैंने हकीम की चिंताओं को भी हड़प लिया। वह तो बस एक लड़का था। सफ़र के दौरान वह हमेशा हँसता-खेलता रहता था।

बॉम्बे पहुँचते ही मेरी सारी चिंताएँ दूर हो गईं। मुझे जो भी ज़रूरत होती, सासी हमेशा मेरे साथ होता, मानो वो मेरा अपना ही हो। बॉम्बे के मलयाली लोगों के बीच भाईचारे की भावना का तो कहना ही क्या—सासी ने तो मेरे लिए दो दिन की छुट्टी तक ले ली। हम सासी और आठ अन्य लोगों के साथ एक ही कमरे में रहे। हमें ठहराने में उन्हें कोई परेशानी नहीं हुई। अगर दो और लोग होते तो भी कमरे में रहने वालों को कोई शिकायत नहीं होती। ऐसी उदारता केवल बॉम्बे के मलयाली लोगों में ही संभव है।

जब उन्होंने मुझे मेरा वीज़ा दिखाया, तभी मैंने एजेंसी को पैसे दिए। हम दो सप्ताह से बॉम्बे में थे। एक लंबा पखवाड़ा। एक ऐसा पखवाड़ा जब समय रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। एक ऐसा पखवाड़ा जब मुझे ऐसा महसूस कराया गया कि हर सेकंड एक सदी है और हर दिन एक युग।

जब सासी और उसके दोस्त काम पर चले जाते, तो हकीम और मैं इधर-उधर घूमने लगते। हम बस चलते रहते, न जगहों का पता होता, न मंज़िलों का, और न ही ऐसी भाषा का जिसमें हम मुंबई के लोगों से बात कर सकें। ये तो वाकई बड़ी हिम्मत थी। हम धारावी की झुग्गियों से गुज़रे। संकरी और लंबी गलियों से गुज़रते हुए, एक दिन हम अंधेरी रेलवे स्टेशन पहुँच गए। दो हफ़्ते तक हमने यात्रियों की भीड़-भाड़ देखी, पाव भाजी खाई, शरबत पिया, बीयर पी - हकीम तो सासी के साथ शीतल पेय पीता था - डांस बार गए और देर रात वापस लौटे।

आखिरकार वो दिन आ ही गया। मेरे पास ज़्यादा सामान नहीं था। कुछ नींबू का अचार और कुछ उपेरि (एक प्रकार की सब्ज़ी) जो मेरी गर्भवती सैनू ने बड़े प्यार से तली थी। कुछ चम्मनथिपोडी (एक प्रकार की सब्ज़ी) जो उम्मा ने अपनी थकान की परवाह किए बिना कूटी थी। ताज़े पानी की मछली का अचार। दो-तीन जोड़ी कपड़े ('अरे, इक्का, तुम तो ऐसी जगह जा रही हो जहाँ सब कुछ बहुतायत में मिलता है'), एक तौलिया, साबुन की दो टिकिया, टूथपेस्ट की एक छोटी सी ट्यूब, एक टूथब्रश, मेरा पासपोर्ट, टिकट और कुछ भारतीय मुद्रा। बस इतना ही था। लेकिन हकीम के पास तो पूरा थैला भरा पड़ा था। मैं अक्सर सोचती थी कि उस थैले में एक परिवार के लिए सौ

साल तक खाने का सामान होगा। सासी और मैं अक्सर उसे चिढ़ाते थे, लेकिन हम उसे सिर्फ़ उसकी परेशानी देखकर ही चिढ़ाते थे।
सासी और कमरे में मौजूद एक और आदमी हमारे साथ हवाई अड्डे तक आए। वतन छोड़कर आने वाले सभी खाड़ी मलयालियों की तरह, हमने भी अपने दोस्तों से वादा किया कि वहाँ पहुँचते ही और अपने अरब साथी से मिलते ही हम उनके लिए वीज़ा का इंतज़ाम कर देंगे। वे ऐसे हँसे जैसे उन्होंने यह बात कई बार सुनी हो। फिर भी, शायद उनके दिलों में उम्मीद की एक किरण जगी होगी। क्या मुंबई के मलयाली इसी तरह की किसी उम्मीद के सहारे अपनी दयनीय ज़िंदगी गुज़ारते नहीं हैं?
एक हफ्ते तक हमारी देखभाल करने के इनाम के तौर पर, मैंने अपनी घड़ी (जो सैनू के भाई ने खाड़ी से लौटने पर मुझे दी थी) उतारकर सासी को दे दी। फिर, हवाई अड्डे के एक टेलीफोन बूथ से मैंने घर फोन करने की कोशिश की। पड़ोस में एक मोपला के घर में फोन था। जब आखिरकार फोन लग गया, तो मैंने उनसे कहा कि मेरा संदेश मेरे परिवार तक पहुंचा दें।
उस हवाई अड्डे पर सब कुछ ठीक रहा। बस आव्रजन पर कुछ सवाल पूछे गए। चूंकि मैं हिंदी नहीं बोलता था और अधिकारी मलयालम नहीं बोलता था, और पासपोर्ट के अंदर सौ रुपये का नोट दिया गया था, इसलिए यह बाधा जल्दी से दूर हो गई। यह एयर इंडिया की उड़ान थी। मुंबई से रियाद। साढ़े चार घंटे का सफर। तो, 4 अप्रैल 1992 को स्थानीय समयानुसार शाम 4:30 बजे मैं रियाद में उतरा।
मेरे सपनों के शहर, मैं आ गया हूँ। कृपया मेरा स्वागत करें। अहलान वा सहलान!

छह

हकीम और मैं विमान से उतरे तो हमने एक ऐसी अद्भुत दुनिया का अनुभव किया जो हमारी कल्पना से भी कहीं अधिक विशाल थी। उस समय, अरब जगत को टीवी या सिनेमा में उतना नहीं दिखाया जाता था जितना आज दिखाया जाता है। मैं उस दुनिया की कल्पना केवल उन लोगों के शब्दों से ही कर सकता था जो वहाँ जा चुके थे। इसी कारण, उनकी समृद्धि का हर नया प्रदर्शन मुझे आश्चर्यचकित कर देता था।
मेरे लिए बॉम्बे चिंता का केंद्र था, और रियाद आश्चर्य का।

मैं उस स्वप्निल दुनिया में ज्यादा देर तक खोया नहीं रह सका। आव्रजन की औपचारिकताएं पूरी करने के बाद हम हवाई अड्डे के बाहर इंतजार करते रहे और चूंकि हमें लेने कोई नहीं आया, तो हम चिंतित हो गए। हमारे साथ उड़ान में आए सभी लोग अपने दोस्तों, प्रायोजकों और कंपनियों के वाहनों में जा चुके थे। हमें लेने कोई नहीं था।

बॉम्बे की एजेंसी ने हमें बताया था कि प्रायोजक हवाई अड्डे पर मौजूद होगा। विमान एक घंटा देरी से उतरा। क्या वह हमें ढूंढते हुए आया था और हमें न पाकर लौट गया? या वह हवाई अड्डे पर हमें खोज रहा था? इन लाखों लोगों में वह हमें कैसे पहचानता? पासपोर्ट में लगी मेरी तस्वीर से मैं कितनी अलग दिखती हूँ! पासपोर्ट के सहारे तो हमें पहचाने जाने की कोई उम्मीद नहीं थी। या क्या वह भूल गया था कि हम आ रहे हैं? क्या एजेंसी उसे सूचित करना भूल गई थी? मेरे सामने सवालों का अंबार लग गया। जैसे-जैसे इंतजार का समय बढ़ता गया, सवालों का अंबार भी बढ़ता गया।

सैकड़ों अरब लोग इधर-उधर घूम रहे थे। पुरुष और महिलाएं। मैंने अपना ध्यान भटकाने के लिए खुद को अंटार्कटिका में होने की कल्पना की और जो लोग हमारे पास से गुजर रहे थे, उन्हें काले और सफेद पेंगुइन समझ लिया। मैं हर पेंगुइन के चेहरे (जिन मादा पेंगुइनों के चेहरे दिखाई नहीं दे रहे थे, उनकी आंखों में) को निवेदनपूर्वक देखता। मैं ही वह नजीब हूं जिसे आप ढूंढ रहे हैं। मेरे साथ यह छोटा लड़का ही वह हकीम है जिसे आप खोज रहे हैं। मैंने अपनी आंखों और अपने विनम्र हावभाव से सबको संदेश दिया। लेकिन किसी ने मेरी अपील पर ध्यान नहीं दिया। सब चले गए और अपनी व्यस्त जिंदगी में खो गए।

हमारा इंतज़ार जारी रहा। इसी बीच, कई विमान उतरे और कई देशों के लोग, जो कई भाषाएँ बोलते थे, आते रहे। वे भी कई वाहनों में सवार होकर इधर-उधर चले गए। जैसे ही मगरिब की अज़ान हुई, हमें पता चला कि शाम हो चुकी है। नमाज़ के बाद भी जब हमें कोई नहीं मिला, तो हम एक मलयाली जैसे दिखने वाले हवाई अड्डे के अधिकारी के पास गए और उसे अपनी परेशानी बताई। उसने मुझसे उस कंपनी का नाम पूछा जिसके लिए मैं काम करने आया था। मेरे पास कोई जवाब नहीं था। उसने प्रायोजक का नंबर माँगा। मैं एजेंट से वह लेना भूल गया था। उसने मुझसे किसी स्थानीय व्यक्ति का फ़ोन नंबर माँगा जिसे मैं जानता था। मैं किसी को नहीं जानता था। मेरे पास करुवट्टा जीजा की कंपनी का पता था और मैंने उसे वह दिखाया। वह रियाद से बहुत

दूर था। वह मदद नहीं कर पाएगा। 'खैर, इंतज़ार करो। तुम्हारा अरबाब ज़रूर आ जाएगा,' उसने कहा और अपने काम पर वापस चला गया। इस तरह उस अजनबी से ही मैंने पहली बार अरबी शब्द 'अरबाब' सुना!

अरबाब! अरबाब! मैंने मन ही मन दोहराया। कितना मनोरंजक! एक मधुर ध्वनि। ये अरबाब कौन है? ये अरबाब क्या है? जो भी हो, अरबाब को आना ही होगा, तभी हम जा सकते हैं। अरबाब, जल्दी आओ, हम कब से इंतज़ार कर रहे हैं। जल्दी आओ, हमें इस डर से बचाओ। अरबाब! अरबाब!

लगभग डेढ़ घंटा और बीत चुका था। मैंने अपनी इकलौती घड़ी बॉम्बे में सासी को दे दी थी, इसलिए मुझे सही समय नहीं पता था। मुझे एयरपोर्ट पर इधर-उधर घूमकर समय पता करने के लिए घड़ी ढूंढने का मन नहीं था। भला उसका क्या फायदा? अगर इस बीच अरबाब आकर चला भी जाता तो?

हवाई अड्डे के बाहर, शहर में रात होने लगी थी। हमारा डर बढ़ता जा रहा था। तभी एक पुरानी गाड़ी—न कार, न जीप, न लॉरी (काफी समय बाद मुझे पता चला कि इसे पिक-अप कहते हैं)—धीमी आवाज़ करते हुए आई और हवाई अड्डे के मुख्य द्वार पर रुक गई, जबकि वहाँ पार्किंग मना थी। एक अरब व्यक्ति उससे बाहर निकला। उसे देखते ही, पता नहीं क्यों, मेरे मन में फुसफुसाहट हुई कि यही वो अरबाब है जिसका मैं इंतज़ार कर रहा था। वह बेचैनी से हवाई अड्डे पर इधर-उधर घूमता रहा। हमारी निगाहें लगातार उस पर टिकी थीं, लेकिन उसने हमें नहीं देखा। वह बेचैनी से इधर-उधर टहल रहा था। मुझमें हिम्मत नहीं थी कि मैं उसके पास जाकर पूछूँ कि क्या वो मेरा अरबाब है। शायद हकीम के मन में ये ख्याल कभी आया ही न होता। वैसे भी, मैं उससे किस भाषा में पूछता? हवाई अड्डे के चार-पाँच चक्कर लगाने के बाद, उसने हमें ढूंढ लिया। हम उसकी ओर बढ़े।

‘अब्दुल्लाह?’ उसने मेरी तरफ उंगली उठाई। मैंने पहले कभी ऐसी कर्कश आवाज़ नहीं सुनी थी। मैंने सिर हिलाया। ‘अब्दुल्लाह?’ उसने हकीम की तरफ उंगली उठाई, जिसने भी ना में सिर हिलाया। फिर उसने अरबी में कुछ पूछा। उसके लहजे में गुस्सा था। सौभाग्य से, मुझे कुछ समझ नहीं आया, हकीम को तो और भी कम।

हमें वहीं छोड़कर वह फिर हवाई अड्डे पर चक्कर लगाने लगा। बीच-बीच में वह अकेले खड़े किसी भी व्यक्ति का पासपोर्ट छीनकर उसे देखने लगता। अंत में वह हमारे पास वापस आया। फिर उसने मेरा पासपोर्ट छीनकर उसमें देखा। इसी तरह

उसने हकीम का पासपोर्ट भी छीन लिया। फिर बिना कुछ कहे वह आगे बढ़ गया। हम अपने बैग लेकर उसके पीछे-पीछे चल दिए।
मैंने अरबों को अतहर और अन्य इत्रों की खुशबू से जोड़कर देखा था। सैकड़ों अरब हमारे पास से गुज़रे थे, जिनसे मनमोहक खुशबू आ रही थी। मैंने कुछ देर पहले हकीम से मज़ाक में कहा था कि रोज़ाना इत्र लगाने वाले अरबों के मूत्र को आसवन करके एक नया इत्र बनाया जा सकता है। लेकिन मेरे अरबाब से एक अजीब सी दुर्गंध आ रही थी, एक अपरिचित सी बदबू। इसी तरह, जहाँ दूसरे अरबों ने अच्छी तरह से इस्त्री किए हुए, बेदाग़ सफ़ेद कपड़े पहने थे, वहीं मेरे अरबाब का कपड़ा बेहद गंदा और बदबूदार था।
जो भी हो, मेरे लिए एक अरबाब आ गया था। यह सोचकर मुझे राहत मिली। मैं भी खाड़ी देशों का प्रवासी बन गया हूँ। मेरा भी अपना एक अरबाब है। जो मेरे आगे चल रहा है, वही मेरे सभी सपनों का रक्षक है, वही साक्षात ईश्वर है जो मेरी सभी आकांक्षाओं को पूरा करेगा। मेरा अरबाब! अरबाब—उस क्षण मुझे इससे अधिक कोई और शब्द पसंद नहीं आ सकता था!

सात

अरबपति की गाड़ी मैंने अब तक देखी सबसे पुरानी गाड़ी थी। उसके दरवाजे और बोनट ढीले, जंग लगे हुए थे और उन्हें पेंट की सख्त जरूरत थी। ताले काम नहीं कर रहे थे, इसलिए दरवाजे रस्सी से बंधे हुए थे। सीट के गद्दों से स्प्रिंग बाहर झाँक रही थीं। जैसे ही हम गाड़ी के पास पहुँचे, अरबाब ने मेरा बैग छीनकर गाड़ी के खुले पिछले हिस्से में फेंक दिया। अरबाब! मेरी माँ का बनाया हुआ मछली का अचार। सैनू का बनाया हुआ नींबू का अचार... मेरा दिल जल उठा। इससे पहले कि उसका बैग छीना जाता, हकीम ने उसे गाड़ी के पीछे रख दिया। उसके पास और भी कई बोतलें थीं—अचार, नारियल का तेल, आदि।
अरबाब ने ड्राइवर की सीट खोली और अंदर कूद गया। दरअसल, कैबिन में ड्राइवर के अलावा सिर्फ़ एक ही व्यक्ति बैठ सकता था। मैं और हकीम साथ में? खैर, हमें एडजस्ट करना ही पड़ेगा। जैसे ही मैं दूसरा दरवाज़ा खोलने गया, अरबाब ने कुछ चिल्लाया। चौंककर मैं एक कदम पीछे हट गया। अरबाब ने पीछे की ओर इशारा

किया। मैं वहीं खड़ा रहा, दरवाज़े का हैंडल पकड़े रहा, क्योंकि मुझे कुछ समझ नहीं आया था। उसने फिर से इशारा किया और चिल्लाया, 'या, येल्ला!' फिर उसने गुस्से से दरवाज़ा खोला, बाहर आया, मेरे हाथ पकड़े और मुझे पीछे की ओर खींचकर गाड़ी के पिछले हिस्से में धकेल दिया। यह देखकर हकीम अंदर कूद गया। अरबाब जल्दी से अपनी सीट पर वापस गया और गाड़ी स्टार्ट कर दी।
गाड़ी के पीछे दो-तीन बड़े एल्युमिनियम के बर्तन, थोड़ी घास और कई बोरे रखे थे। हमने जैसे-तैसे साइड रेलिंग पकड़कर गाड़ी में जगह बनाई। दिखने में पुरानी होने के बावजूद, हमें लगा कि गाड़ी काफी तेज़ थी। उसकी गर्जना और गड़गड़ाहट बहुत तेज़ थी। हालांकि, हमें उसकी असली रफ़्तार का एहसास तब हुआ जब हम एयरपोर्ट से निकलकर मुख्य सड़क पर आ गए। सैकड़ों गाड़ियां बेरहमी से उसे ओवरटेक कर रही थीं। वह सिर्फ अपने एग्जॉस्ट पाइप से निकलने वाले काले धुएं को ही ओवरटेक कर पा रही थी।
खाड़ी की सड़कों पर मेरी पहली यात्रा। खुली गाड़ी में होने से थोड़ी तकलीफ तो हुई, लेकिन खुली गाड़ी की वजह से ही मैं सड़क के दोनों ओर जगमगाती ऊंची इमारतों की भव्यता का भरपूर आनंद ले सका। अगर मैं आगे की सीट पर अपने पति के साथ बैठा होता, तो क्या मैं खाड़ी को इस तरह पूरी तरह देख पाता? चूंकि अंधेरा हो चुका था, इसलिए दूसरी गाड़ियों में बैठे लोग हमें देख नहीं पाए।
मुझे नहीं पता कि वह खुली हवा में सफर कितना लंबा चला। हकीम को भी नहीं पता था। महानगर की चमक फीकी पड़ने लगी। मुझे शहर से अलग होती लंबी सड़क दिखाई देने लगी। हमें ओवरटेक करने वाले वाहनों की संख्या कम होती गई। जल्द ही, सड़क की बत्तियों की टिमटिमाती रोशनी ही एकमात्र प्रकाश स्रोत रह गई। कुछ देर बाद, मैंने देखा कि हम राजमार्ग से भटक गए थे। दूर की बत्तियाँ ही रोशनी का एकमात्र स्रोत थीं। हकीम रास्ते में कहीं सो गया था। वह थका हुआ होगा, उसे सोने दो, मैंने सोचा। मुझे एहसास हुआ कि अब हमारा सफर किसी रेतीली सड़क पर आ गया था। प्रकाश धूल के गुबार में बदल गया। फिर, अंधेरा छा गया। धूल उड़ाता हुआ वाहन रेत के टीलों के बीच से तेज़ी से निकल गया।
तब तक मेरे पेट में बस उतना ही पानी गया था जितना मैंने हवाई जहाज में पिया था। मैं बहुत घबराया हुआ था जब सासी ने हमें निकलने से पहले नाश्ता करने के लिए मजबूर किया। मैं हवाई जहाज का खाना भी नहीं खा सका क्योंकि मुझे पता नहीं था

कि उसे कैसे खाना है। मैं सचमुच भूखा था। वैसी ही भयंकर भूख जैसी नदी में खनन के बाद लगती है। जब मैंने हवाई अड्डे पर हकीम को इसके बारे में बताया, तो उसने कहा कि उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह भूख से मर जाएगा। मैं चिल्लाना चाहता था, अरे साहब, कृपया रुक जाइए, हमें कुछ खाना, कुछ पानी दीजिए... लेकिन मेरे गले से कुछ नहीं निकला। निकल ही नहीं रहा था। मैं डरा हुआ था। डरा हुआ था कि कहीं अरे साहब को गुस्सा न आ जाए। इतना ही नहीं। चारों तरफ घना अंधेरा था और खाने की कोई जगह नज़र नहीं आ रही थी। रेतीली सड़क पर गाड़ी चलाते हुए एक घंटा बीत चुका था। झटकों और धक्कों से मेरी पीठ में दर्द होने लगा। उड़ती धूल के कारण सांस लेना मुश्किल हो रहा था। हे मेरे मालिक, यह कैसी यात्रा है? मैं अनजाने में रो पड़ा।

उस पल से, जैसे कोई मक्खी मक्खी, एक अनजाना डर मेरे मन को घेरने लगा। एक बेबुनियाद शंका ने मुझे जकड़ लिया, एक एहसास कि यह सफ़र मुझे उस खाड़ी जीवन की ओर नहीं ले जा रहा था जिसका मैं सपना देखता था और जिसके लिए तरसता था। जिस खाड़ी के बारे में मैंने इतने लोगों से सुना था, वह ऐसी नहीं थी। खतरे की एक हल्की सी आहट। कुछ भी स्पष्ट नहीं। अगर मैंने अपनी चिंता हकीम से साझा की होती तो मुझे राहत मिलती। लेकिन वह गहरी नींद में सो रहा था। उसे सोने दो। अगर वह मेरी चिंताएँ सुनता, तो शायद रोने लगता।

समय का कोई अंदाज़ा नहीं था। मैंने उस पल को कोसा जब मैंने सासी को अपनी घड़ी दी थी। चलो, जब पहुँचना हो तब देखते हैं। समय जानने का क्या फायदा? मैं अपने दादाजी की गाड़ी में सफर कर रही थी। उनके हाथों में मेरी जान सुरक्षित थी। मुझे समय की चिंता क्यों करनी चाहिए? मैं लेट गई और धीरे-धीरे अपना सिर घास के गट्ठे में गड़ा दिया। आसमान में तारे अपनी चमक छिपा रहे थे। वे सो रहे थे। मैं वहीं लेटी रही, आसमान के खालीपन को देखती रही। गाड़ी के लगातार झटके और गड़गड़ाहट मेरे थके हुए कानों के लिए लोरी की तरह लग रहे थे। मैं सो गई।

आठ

जब अरबाब ने मुझे हिलाकर जगाया, तब जाकर मेरी आँखें खुलीं और चारों ओर घना अंधेरा छा गया। मुझे पता नहीं था कि हम कहाँ हैं। मेरी आँखों को अंधेरे में अभ्यस्त

होने में थोड़ा और समय लगा। हकीम अभी भी गहरी नींद में था। अरबाब ने फिर गुस्से में रेलिंग पर ज़ोर से पटका जिससे तेज़ आवाज़ हुई। जैसे ही हकीम उखड़कर जागा, अरबाब ने उसे बाहर आने का इशारा किया। जब मैंने थैला उठाया और उसके पीछे चलने लगा, तो अरबाब ने स्पष्ट कर दिया कि उसने मुझे नहीं बल्कि हकीम को बुलाया था। अभी भी आधी नींद में होने के कारण हकीम ज़्यादा कुछ समझ नहीं पाया। अरबाब गुस्से में भरी जंगली बिल्ली की तरह गुर्राया।

हम दो बेचारे हैं, अरबाब, जिन्हें कुछ भी नहीं पता। आप हम पर इस तरह गुस्सा क्यों कर रहे हैं? क्या आपको पता है, अरबाब, हम भूखे हैं? असल में, भूख से ज़्यादा प्यासे हैं। मुझे याद नहीं कि मैंने कभी इस तरह भूख से तड़पना पड़ा हो। यह कैसा घटिया स्वागत है, ऊपर से आपका बेवजह गुस्सा। नहीं, हम अरबाब पर आरोप क्यों लगाएं? क्या उन्हें भी भूख और प्यास नहीं लगी होगी? हमें लेने के लिए वे कई घंटे पहले निकले होंगे। कम से कम हम हवाई जहाज से तो आए। उन्हें इस पुरानी गाड़ी को हवाई अड्डे तक और वापस लाना पड़ा। कम से कम हम हवाई जहाज और गाड़ी में थोड़ी देर सो तो पाए। अरबाब तो बिल्कुल नहीं सोए। हमें हमारे घर छोड़ने के बाद ही उन्हें थोड़ा खाने, थोड़ा पानी पीने और थोड़ा आराम करने का मौका मिला। गुस्सा कीजिए, अरबाब। बल्कि बहुत गुस्सा कीजिए। हम तो गाड़ी रुकने का पता ही नहीं चलने पर सो गए, यही हमारी गलती है।

मुझे आभास हुआ कि हम एक मैदान में पहुँच गए हैं, जहाँ दूर-दूर तक कोई इमारत या पेड़ नज़र नहीं आ रहा था। दूर, नक्शे की तरह, कुछ पहाड़ या पहाड़ियाँ अंधेरे आकाश में धुंधली सी दिखाई दे रही थीं। मेरे हृदय में एक पुकार उठी: हे प्रभु, मैं कहाँ आ गया हूँ?

हकीम अपना बैग लेकर गाड़ी से कूद गया। अरबाब अँधेरे में आगे-आगे चल रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे उसे जगह का अच्छा ज्ञान हो। हकीम हिचकिचाते हुए उसके पीछे-पीछे चला। लेकिन क्या हकीम और मैं एक ही कंपनी में काम करने नहीं आए थे? क्या हमें साथ रहना और साथ काम करना नहीं था? अरबाब उसे इस अँधेरे में यहाँ क्यों लाया? मुझे गाड़ी में क्यों बैठाए रखा गया है? वह हकीम को कहाँ ले जा रहा है? मेरे मालिक, उसकी उम्मा ने उसे मेरी देखरेख में सौंपा था। हे बदमाश अरबाब, हकीम को कहाँ ले जा रहे हो? मैं दृढ़ता से गाड़ी से कूद गया। मैंने अपना बैग उठाया और अरबाब और हकीम के पीछे भागा। अरबाब पीछे मुड़ा। अँधेरे में भी मैं उसकी

आँखों में गुस्से की लाली देख सकता था। मैंने उससे मलयालम में कुछ पूछा। उसके गुस्से भरे हाव-भाव मुझे गाड़ी में वापस जाने के लिए मजबूर नहीं कर सके। फिर उसने अपनी बेल्ट खोली और उसे एक बार हवा में घुमाया। उसकी भयानक आवाज़ रोंगटे खड़े कर देने वाली थी। अनिच्छा से मैं गाड़ी में वापस चला गया।

खुले मैदानों में रात के अंधेरे में भी कुछ रोशनी होती है, धरती के छोरों या अन्य स्थानों से आकाश में बिखरती हुई प्रकाश की कुछ बची-खुची किरणें। जैसे ही मेरी आँखें उस रोशनी की आदी हुईं, मैंने देखा कि अरबाब लोहे की जालीदार बाड़े के द्वार के सामने रुक गया। मैंने उसे अपनी जेब से चाबी निकालते और हकीम को अंदर ले जाते देखा। हालाँकि मुझे अंदर क्या हो रहा था यह देखने की बहुत उत्सुकता थी, पर अंधेरा इतना घना था कि मैं यह नहीं देख सका।

हवा में मुझे बस एक अजीब सी बदबू महसूस हो रही थी, शायद अरबाब की दुर्गंध। मुझे इतनी समझ थी कि हम रेगिस्तान से गुज़र रहे हैं। क्या यह रेगिस्तान की गंध थी? क्या रेगिस्तान में ऐसी गंध होती है? कहते हैं, गहरे समुद्र में होती है। हवा में वही गंध फैली हुई थी। गाड़ी रुकने के बाद से ही मुझे यह महसूस हो रही थी। पहले तो मुझे लगा कि गाड़ी से उड़ने वाली धूल की वजह से है। लेकिन अब साफ था कि यह उस लोहे के घेरे से आ रही थी जिसमें अरबाब हकीम को ले गया था। हड्डियों के चूर्ण और गोबर की मिली-जुली गंध। क्या हम किसी हड्डियों के चूर्ण बनाने वाली फैक्ट्री में पहुँच गए हैं? अगर हाँ, तो इमारतें कहाँ हैं? मशीनें कहाँ हैं? हड्डियों के ढेर कहाँ हैं? एग्जॉस्ट पाइप कहाँ हैं? कहाँ? कौन जाने?

मैं अरबाब के लौटने का इंतज़ार कर रहा था। डर ने मुझे पूरी तरह जकड़ लिया था, ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी खतरनाक स्थिति में फँस गया हूँ। ऐसा लग रहा था जैसे हकीम को अरबाब ने कैद कर लिया हो और अब मेरी बारी हो। हो सकता है वो मुझे किसी काल कोठरी में बंद करने की योजना बना रहा हो। मैं इससे पहले भाग जाऊँगा, इस खतरे से बच निकलूँगा। लेकिन कहाँ जाऊँ? चारों ओर बस सन्नाटा पसरा था। क्योंकि मैं उस इलाके से अनजान था, अगर मैंने भागने की कोशिश की, बिना दिशा जाने या बाहर निकलने का रास्ता जाने, तो मैं इस रेगिस्तान में भटकते-भटकते मर जाऊँगा। मुझे भूख और प्यास लगी थी। मैं कितनी दूर जा सकता था? भागने की तीव्र इच्छा होते हुए भी, हिलने से इनकार करते हुए, मैं गाड़ी के पीछे बैठा रहा।

कुछ देर बाद, अर्बाब अकेले बाहर आए। उन्होंने बाहर से गेट बंद कर दिया। मैं गाड़ी से कूदकर उनकी तरफ दौड़ा और हकीम के बारे में पूछा। अर्बाब ने मुझे घूरकर देखा और गाड़ी की तरफ चल दिए। चलते-चलते उन्होंने मुझसे कुछ कहा। वह अरबी में था और मुझे कुछ समझ नहीं आया। अर्बाब गाड़ी में बैठ गए। मैं जल्दी से पीछे अपनी जगह पर लौट गया।

एक किलोमीटर चलने के बाद गाड़ी फिर रुक गई। यह भी एक खुला इलाका था। अपने बैग लिए मैं अरबाब के पीछे-पीछे चलने लगा। कुछ दूरी पर एक तंबू दिखाई दिया। मुझे समझ आ गया कि यही मेरे अरबाब का ठिकाना है। मुझे जंगल की प्राकृतिक रोशनी के अलावा कोई और रोशनी नहीं दिख रही थी। जैसे ही हम तंबू के पास पहुँचे, एक और अरबाब, वही अरबी पोशाक में, बाहर आया। एक छोटा सा अरबाब, पुरानी अरबी कहानियों के किसी कार्टून जैसा। उसके कपड़े और बदबू मेरे अरबाब से भी बदतर थे।

उन्होंने थोड़ी देर बात की। फिर मुझे नए अरबाब को सौंपकर मेरे अपने अरबाब गाड़ी में वापस चले गए। मुझे थोड़ी राहत मिली जब मैंने सोचा कि उन्होंने शायद हकीम को इसी तरह के किसी अरबाब के भरोसे छोड़ा होगा। वह एक भोला-भाला लड़का था। मुझे डर था कि उसे किसी अंधेरे कमरे में बंद कर दिया गया होगा।

तंबू के बाहर एक लंबी लोहे की बाड़ दिखाई दे रही थी। जिस परिसर में हकीम को ले जाया गया था, उसी तरह यह बाड़ भी दुर्गंध का स्रोत थी। कुछ अस्पष्ट हलचलें दिखाई दे रही थीं। उनकी ओर इशारा करते हुए, मेरे नए अर्बब (अंगूर) वापस तंबू के अंदर चले गए।

मुझे बहुत दुख हुआ। मेरे साहब, आप मुझे इस तंबू के सामने इस अंधेरे में छोड़कर इतनी बेरहमी से कैसे चले गए, बिना कुछ कहे? क्या आपको नहीं पता कि मैं खाड़ी में पहली बार आया हूँ? 'क्या आपने खाना खा लिया? क्या आपको प्यास लगी है? क्या आपको भूख लगी है?' क्या आपको कम से कम इतना तो पूछना चाहिए था? क्या आपको मुझे यह नहीं बताना चाहिए था कि मुझे कहाँ ठहरना चाहिए और मुझे अपने सहकर्मियों से नहीं मिलवाना चाहिए था? क्या यही वो मशहूर अरब आतिथ्य सत्कार है जिसके बारे में मैंने सुना है? आप किस तरह के साहब हैं, मेरे साहब? मुझे धोखा मत दीजिए। आप ही में मेरा भविष्य टिका है। आप ही में मेरे सपने टिके हैं। आप ही में मेरी उम्मीदें टिकी हैं।

मुझे नहीं पता मैं कितनी देर तक वहाँ ऐसे ही खड़ा रहा। क्या मुझे उम्मीद थी कि मेरे दादाजी, जो चले गए थे, मेरे लिए कुछ खाना लेकर लौटेंगे? शायद थी। लेकिन जैसे ही मुझे इंतज़ार की निरर्थकता का एहसास हुआ, मैं उस जगह की ओर चल पड़ा जहाँ दादाजी ने इशारा किया था।

मेरा ठिकाना कहीं न कहीं तो होना ही चाहिए। लेकिन वहाँ तंबू का कोई नामोनिशान नहीं था, इमारत तो दूर की बात है। मेरे अंदर कुछ जलकर राख हो गया। अगर मेरा अरबाब रेगिस्तान के बीचोंबीच तंबू में लेट जाए, तो मैं कहाँ रहूँगा?

चिंता से मैं लोहे की बाड़ के किनारे-किनारे चहलकदमी करने लगा। मुझे बाड़ के अंदर कुछ परछाइयाँ हिलती-डुलती, कराहती और उछलती हुई दिखाई दीं। तभी, मानो मेरी उपस्थिति का आभास देते हुए, मुझे एक हल्की सी सिसकी सुनाई दी। यह एक मेमने की मिमियाहट थी! मैंने बाड़ के अंदर झाँका। बकरियाँ! सैकड़ों बकरियाँ! बकरियों की कतारें, समुद्र की लहरों की तरह लहराती हुई। यह मेरे लिए बिजली की तरह स्तब्ध रह गया। अब मुझे अपने काम का कुछ-कुछ अंदाज़ा हो गया था।

उस भयावह घबराहट भरे पल के बाद, मैं धीरे-धीरे बाड़ के किनारे-किनारे चलने लगा। मैंने मुश्किल से तीन-चार कदम ही बढ़ाए थे कि बाड़ के पास एक चारपाई दिखाई दी। उस पर एक आदमी सिर झुकाए बैठा था। उस आकृति को देखकर मैं एकदम भयभीत हो गया।

नौ

थोड़ा कांपते हुए मैं उस डरावनी आकृति की ओर बढ़ा। उसके बाल उलझे हुए थे, जैसे किसी जंगली आदमी के हों जो सालों से जंगल में रह रहा हो। उसकी दाढ़ी उसके पेट तक पहुँच रही थी। उसने बेहद गंदे अरबी कपड़े पहने हुए थे। साथ ही, उससे इतनी भयानक बदबू आ रही थी कि कोई भी भाग जाए! हालाँकि उसने मुझे आते हुए देख लिया था, फिर भी वह आकृति हिली नहीं। एक पल के लिए मैं असमंजस में पड़ गया। क्या वह कोई मूर्ति थी या कोई इंसान? फिर अचानक, वह खिलखिलाकर हँसा। उसकी हँसी बहुत देर तक गूंजती रही। मैं उसका अर्थ या महत्व समझ नहीं पाया। कुछ देर हँसने के बाद उसने हिंदी में कुछ कहा। क्योंकि मेरी स्कूली शिक्षा पाँचवीं कक्षा के बाद समाप्त हो गई थी, और क्योंकि मुझे कभी हिंदी पढ़ने का मौका नहीं

मिला था, इसलिए मुझे उसकी बात समझ नहीं आई। अरबी शायद मुझे उस हिंदी से ज़्यादा समझ आती।
उन शब्दों में दया थी, और साथ ही उदासी, आक्रोश और तिरस्कार भी। आज मैं समझता हूँ: वह मेरे भाग्य पर विलाप कर रहा था और विलाप कर रहा था। करुणा के लिए किसी भाषा की आवश्यकता नहीं होती।
फिर वह व्यक्ति लकड़ी के लट्ठे की तरह गिर पड़ा और सो गया। कुछ देर बाद मुझे खर्राटे की आवाज सुनाई दी।
तब तक मुझे कुछ हद तक उस स्थिति का एहसास हो चुका था जिसमें मैं फँस गया था, और अपने काम की प्रकृति का भी। एक पल के लिए मैं काँप उठा, यह सोचकर कि कहीं मैं भी एक डरावनी आकृति न बन जाऊँ। इससे पहले कि ऐसा हो, मुझे भाग जाना चाहिए। कहाँ? कहीं भी। कैसे? जैसे भी हो। अभी, इसी क्षण। अरबाब अपने तम्बू में सो रहा होगा। वह डरावनी आकृति यहाँ एक सूखी लकड़ी की तरह है। मुझे कोई नहीं देखेगा। अगर मैं भागूँ... तो कितनी देर तक भागूँगा? किस तरफ...? किस दिशा में? किस जगह? मुझे कुछ नहीं पता। जब मैंने शहर से आए घंटों के सफर के बारे में सोचा, तो मेरे मन में उस जगह को लेकर डर बैठ गया जहाँ मैं पहुँच गया था। उसी सोच ने मुझे उस जगह से जकड़ लिया था।
रात ढल चुकी थी। रेगिस्तान की ठंडी हवा में घर के मकरम महीने जैसी ठंडक थी। सफर की असहनीय थकान मुझ पर हावी थी, भूख और प्यास तो थी ही। घर पर रात के खाने के बाद नौ बजे सोना मेरी आदत थी। उस खुले मैदान में, सोने-बैठने की जगह न होने के कारण मैं सुन्न पड़ गया। फिर, जब मेरे पैरों में दर्द होने लगा, तो मैंने अपना थैला उस डरावनी आकृति की चारपाई के पास रखा और उस पर बैठ गया। मेरे उम्माह और मेरे सैंनू द्वारा पैक किए गए अचारों के ख्याल गायब हो गए।
मैं वहाँ बैठा था, भूख, प्यास और थकावट से पूरी तरह बेहाल। तभी मुझे बाड़ के पास एक बड़ा सा टैंक दिखाई दिया और उसके आधार के पास दो-तीन वाल्व। अंधेरे में एक वाल्व को पकड़कर मैंने उसका ऊपरी सिरा घुमाया। आह! ठंडा पानी तेज़ी से बहने लगा। मैंने लालच से पानी गटक लिया, जब तक कि मेरी प्यास बुझ नहीं गई, जब तक कि मेरा पेट भर नहीं गया, जब तक कि अगले दिन और उसके अगले दिन के लिए भी पर्याप्त पानी नहीं मिल गया, मानो मुझे डर था कि मुझे और पानी नहीं मिलेगा। हे भगवान, मैं उस राहत को कैसे बयान करूँ जो मुझे महसूस हुई? कुछ देर तक मैं

उस टैंक के सामने थका हुआ बैठा रहा। फिर मैं उठा और उस डरावनी आकृति की चारपाई पर वापस चला गया। जब थकान हावी हो गई, तो मैं रेत पर लेट गया, अपने थैले को तकिया बनाकर। मेरी पीठ में दर्द हो रहा था। मैं उस खालीपन पर मुस्कुराया। मैंने कैसे-कैसे सपने देखे थे! एक एसी कार, एक एसी कमरा, एक मुलायम गद्दा जिसके सामने टीवी हो! मैं हँस पड़ा। अपनी इस हालत में मैं और क्या कर सकता था? मेरे सपने मेरी वास्तविक स्थिति से कितने अलग थे, यह कोई और नहीं समझ सकता था। खाड़ी में मेरी पहली रात पूरी तरह से निराशाजनक रही।

सुबह सैकड़ों बकरियों के मिमियाने की आवाज़ से मेरी नींद खुली। सूरज अभी निकला नहीं था, फिर भी दिन काफी उजाला हो चुका था। मैं धीरे-धीरे उठा। रेत पर सोने से मेरे शरीर में बहुत दर्द हो रहा था। मुझे धुंधला सा याद है कि मैंने अपने बैग से एक चादर निकाली और उसे ओढ़ लिया। वह रेत में पड़ी हुई थी, सिकुड़ी हुई। चारपाई पर वह डरावनी आकृति कहीं दिखाई नहीं दे रही थी। मैंने सोचा, शायद यह कोई बुरा सपना था।

मैं पलंग पर बैठ गया और चारों ओर देखने लगा। मेरी उम्मीद से कहीं ज़्यादा बकरियाँ थीं। बाड़ ने एक बड़े क्षेत्र को घेर रखा था जो कई हिस्सों में बँटा हुआ था, और हर हिस्से में सैकड़ों बकरियाँ थीं। बाड़ के उस पार दूर-दूर तक रेगिस्तान फैला हुआ था, क्षितिज को छूता हुआ। वहाँ तक कि पेड़ की छाया भी नहीं थी जो उस दृश्य को रोक सके। एक तरफ एक काफ़ी बड़ी पहाड़ी थी। बाकी हर जगह दो-तीन आदमियों की ऊँचाई तक उठते रेत के टीले थे। उन्होंने समतल ज़मीन को ऊबड़-खाबड़ बना दिया था।

कुछ देर बाद, मानो यह साबित करने के लिए कि मैंने उसे सपने में नहीं देखा था, वह डरावनी आकृति बकरियों के बीच से निकली। तभी मैं उसकी भयावहता को साफ़-साफ़ देख पाया। धूल उसके शरीर पर पपड़ियों में बदल गई थी और गंदगी उसकी दाढ़ी और बालों में चिपकी हुई थी। उसके गंदे नाखून टेढ़े-मेढ़े हो गए थे और भद्दे दिख रहे थे। उसे नहाए हुए कम से कम पाँच साल हो गए होंगे, और उसके कपड़े धोए हुए एक सदी बीत चुकी होगी। एक सदी!

वह मेरे पास दूध से भरा एक एल्युमिनियम का कटोरा लेकर आया। उसमें से थोड़ा दूध निकालकर उसने मुझे दिया और हिंदी में कुछ कहा। दूध इतना गर्म था मानो चूल्हे पर रखा गया हो। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या बकरी का थन इतना गर्म होता है। यह सोचकर कि वह मुझे गर्म दूध पीने के लिए कह रहा है, मैंने उसे गटक लिया। मुझे कल की भूख का दर्द महसूस हुआ और मैंने उसे पूरी तरह से पी लिया। उस डरावने व्यक्ति ने मेरे कान खींचे और कुछ बुदबुदाया। मुझसे कुछ पूछने की कोशिश की। गुस्से में बोलने की कोशिश की। जब भाषा की बाधा से उसके शब्द चकनाचूर हो गए, तो उसने बेबसी से मुझे दूध का एक और कटोरा दिया और हाथों से इशारा करते हुए कहा कि इसे भिखारी को दे दो।

मैं दूध का वो बर्तन लेकर अरबाब के तंबू में गया। चारपाई पर लेटा हुआ, वो उस डरावनी आकृति से कुछ ज़्यादा अलग नहीं था: गंदा, बदबूदार कपड़े पहने हुए। नहाने का कोई असर नहीं दिख रहा था। वो जागा और जम्हाई ली। फिर, मुझसे कटोरा लेकर उसने सारा दूध एक ही बार में पी लिया। बर्तन में कम से कम पाँच लीटर दूध रहा होगा!

कटोरा लौटाते हुए, अर्बाब ने मुझसे कुछ पूछा। हमेशा की तरह, मुझे कुछ भी समझ नहीं आया। उन्होंने अरबी में समझाने की पूरी कोशिश की। लेकिन एक शब्द भी मेरे दिमाग में नहीं आया। गुस्से में उन्होंने ज़मीन पर पैर पटके। अचानक, मेरे अंदर दबा सारा दुख आँसुओं के रूप में बह निकला। मैं अर्बाब के सामने ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। शायद यह मेरे अंदर भरे दुख, क्रोध और भूख का उफान था। मैं रोते हुए कह रही थी, 'मुझे जाना है', 'मैं यहाँ नहीं रह सकती', 'मैं इस काम के लिए नहीं आई थी'। हालाँकि मुझे पता था कि अर्बाब को कुछ भी समझ नहीं आ रहा है, फिर भी मुझे लगा कि जो कहना है कहना मेरा फर्ज है। मुझे उम्मीद थी कि मुझे रोते देख उन्हें मुझ पर दया आ जाएगी। लेकिन इसके बजाय, उन्होंने गुस्से में मुझे तम्बू से बाहर धकेल दिया। रोते हुए मैं जाकर उस डरावनी आकृति की चारपाई पर बैठ गई। वह डरावनी आकृति किसी काम में व्यस्त थी। मुझे कोई परवाह नहीं थी। मेरी आँखें और मन आँसुओं से भरे हुए थे।

जब भी वह बाहर आता और बकरियों के झुंड के बीच वापस जाता, वह डरावना सा दिखने वाला व्यक्ति काम करते हुए मुझसे कुछ न कुछ कहता रहता। मैं समझ सकता था कि वह मुझे स्थिति समझाने की कोशिश कर रहा था। शायद वह मुझे दिलासा दे

रहा था, मेरे प्रति सहानुभूति जता रहा था। लेकिन उसकी आवाज़ और चेहरे के हाव-भाव में व्याप्त पूर्ण उदासीनता देखकर मैं दंग रह गया।
दिन उजाला हो गया। सुबह की धूप भी काफी तेज थी। उस डरावनी आकृति ने बाड़ का फाटक खोला, बकरियों को खुला छोड़ा और उनके पीछे-पीछे चला गया। मैं अकेला रह गया।
फिर, मेरे दादाजी, जिन्होंने मुझे पिछली रात यहाँ छोड़ा था, एक पिक-अप ट्रक में आए। यह पिछली रात के वाहन जैसा ही था, लेकिन दिखने में बेहतर था, एक बड़ा वाहन जिसमें संयुक्त परिवार आराम से बैठ सकता था। तभी मैंने देखा कि पिछली रात का वाहन कुछ दूरी पर खड़ा था। पिछली रात दादाजी अपने वाहन से वापस गए होंगे।
अपने अर्बब को देखकर मुझे थोड़ी राहत मिली। मैं उनकी ओर दौड़ा। उनके चेहरे पर कल के गुस्से का कोई निशान नहीं था। लेकिन, मेरी ओर देखे बिना ही, उन्होंने कार की डिक्की से कुछ निकाला और तंबू की ओर चल दिए। मैं भी पूंछ हिलाते कुत्ते की तरह उनके पीछे-पीछे चल पड़ा। दोनों अर्बबों ने लगभग पाँच मिनट तक एक-दूसरे को गले लगाया और अभिवादन किया, जिसके बाद वे बातें करने लगे। बातें करते हुए वे बीच-बीच में मेरी ओर देखते रहे। मैंने अनुमान लगाया कि उनकी बातचीत मेरे बारे में ही थी। अंत में, तंबू में रात बिताने वाले अर्बब ने कुछ सामान इकट्ठा किया, उसे कार की डिक्की में रखा और आखिरी सलाम कहकर चले गए।

दस

मैं अब भी तंबू के बाहर रोते हुए इंतज़ार कर रही थी। मेरे दादाजी मेरे पास आए, मेरी पीठ थपथपाई और मुझे दिलासा देने के लिए कुछ कहा। हालाँकि इससे मुझे दिलासा तो नहीं मिला, लेकिन मेरा रोना थोड़ा कम हो गया। वे वापस तंबू के अंदर गए, एक पैकेट खोला और मुझे कुछ दिया जो चपाती जैसा लग रहा था। 'खुबस,' मैंने उन्हें साफ़-साफ़ कहते सुना। तो, यही है खुबस। मैंने खाड़ी देशों से लौटे कई लोगों को नदी किनारे इस शब्द का इस्तेमाल करते हुए सुना था। खुबस।
अरबाब ने मुझे इशारा किया कि मुझे खाना चाहिए। मैंने सुबह अपने दांत तक नहीं साफ किए थे, न ही अपनी सुबह की कोई रस्म निभाई थी। मैंने नहाया भी नहीं था।

अगर घर पर होता, तो बारिश में भी नदी में डुबकी लगाए बिना कॉफी तक नहीं पीता। लेकिन उस दिन, पहली बार, मैंने स्वच्छता के सारे नियम तोड़ दिए। मैंने दांत साफ किए बिना दूध पी लिया था। डेढ़ दिन की भूख ने मुझे अपनी आदतों को नजरअंदाज करने पर मजबूर कर दिया था। मैं तंबू के बाहर बैठा और लालच से खुबस नाम का नया व्यंजन खा रहा था, जबकि मेरे पास उसे डुबोने या लगाने के लिए कुछ भी नहीं था। मुझे उसकी जरूरत भी महसूस नहीं हो रही थी। उसमें ताज़ी पकी रोटी जैसी गर्माहट और मिठास थी। हर बार जब मैं एक निवाला लेता, मेरा मन बार-बार 'खुबस! खुबस!' दोहराता। चार निवाले खाने के बाद, वह नाम मेरे मन और पेट में बस गया - खुबस।

जब मेरा भोजन समाप्त हो गया, तो अरबाब मेरे लिए एक गिलास पानी लाए। मैंने उसे झट से पी लिया। फिर उन्होंने मुझे एक और खुबुस (भोजन) दिया। मैंने मना कर दिया। मेरा पेट भरा हुआ था और मैं पूरी तरह संतुष्ट था। अरबाब के स्नेह से मैं बहुत प्रभावित हुआ।

तब तक वह डरावना आदमी बकरियों के साथ लौट आया था। उसने उन्हें बाड़े के अंदर ले जाकर ठूंस दिया। फिर वह आया और तंबू के सामने बैठ गया। अरबाब ने उसे पाँच-छह खुबूस दिए। उसने उन्हें पानी में डुबोकर गटक लिया, एक घड़ा पानी पिया और बिना कुछ कहे चला गया। मैंने खाते हुए उस डरावने आदमी का चेहरा देखा था। मैंने उसके चेहरे पर दुख और पीड़ा का कठोर रूप देखा। वह बिना एक पल भी आराम किए, लगातार अपना काम करता रहा।

अरबाब अंदर गए और मेरे लिए एक थॉब लाए—जो एक आम सऊदी अरब पुरुष का पहनावा होता है, एक लंबा, सफेद, कमीज़ जैसा कपड़ा, ढीला-ढाला, लंबी आस्तीन वाला और टखनों तक लंबा, आमतौर पर सूती कपड़े का बना होता है—और एक जोड़ी जूते भी लाए। मैंने थॉब खोला और उसकी बदबू से लगभग उल्टी कर दी। वह बहुत गंदा था। अरबाब ने मेरी पैंट और कमीज़ को छुआ और कहा, 'शीलादी... शीलादी।' जब उन्होंने इसे कई बार दोहराया, तो मैं समझ गया कि वे मुझसे कपड़े उतारने को कह रहे हैं। मैंने कपड़े उतारे और अनिच्छा से वह बदबूदार कपड़ा पहन लिया। मैंने घर से लाए हुए एकदम नए चमड़े के जूते उतारे और बदबूदार जूतों में पैर डाल दिए। यह बदबू से मेरा पहला सामना था, एक और डरावनी आकृति बनने की ओर पहला कदम। हालाँकि मैं अपने अंधकारमय भविष्य को देख सकता था, फिर भी

मैंने अरबाब के निर्देशों का पालन किया, क्योंकि मैं उनके द्वारा कुछ देर पहले दिए गए खुबूस के लिए बहुत आभारी था।
उस डरावनी आकृति की ओर इशारा करते हुए, अरबाब ने अरबी में कुछ कहा। मैं केवल 'मसारा' शब्द ही समझ पाया। यह अनुमान लगाते हुए कि मसारा का अर्थ पानी है, मैंने आज्ञाकारी होकर एक बाल्टी ली और उस डरावनी आकृति के पीछे-पीछे गया। मैंने टंकी से बाल्टी में पानी भरा, अंदर गया, बकरियों के बीच से होते हुए गया और उसे वहाँ रखे एक बड़े बर्तन में डाल दिया। वह सीमेंट का एक टब था, लगभग तीन मीटर लंबा, एक मीटर चौड़ा और एक चौथाई मीटर ऊँचा।
बाड़े के भीतर लगभग बीस से पच्चीस खंड थे, जिनमें से प्रत्येक में लगभग पचास से सौ बकरियाँ रखी गई थीं। प्रत्येक खंड में पानी, कच्चा गेहूँ, घास और भूसा रखने के लिए टब थे। बकरियाँ जब चाहें खा-पी सकती थीं।
जब पहले भाग का टब भर गया, तो उस डरावनी आकृति ने दूसरे भाग का द्वार खोला और बकरियों को छोड़ दिया। उछलती-कूदती हुई वे बाहर निकल भागीं। उनके पीछे जाते हुए उस डरावनी आकृति ने एक टब की ओर इशारा किया और हिंदी या अरबी में कुछ कहा। मुझे केवल एक शब्द समझ आया, 'मायिन'।
मायिन? मुझे समझ नहीं आया कि यह क्या है। पानी या बाल्टी? अगर पानी था, तो फिर अरबाब ने जिस मसारा का ज़िक्र किया था, वह क्या था? कौन जाने? जो भी हो, मेरा काम उन टबों को पानी से भरना था। तो मैंने वही किया। उसके बकरियों के साथ वापस आने से पहले ही, मैंने उस हिस्से का टब भर दिया था।
इसी तरह मैंने तीसरे और चौथे भाग में पानी भरा। यह आसान नहीं था। पानी से भरी बाल्टी ढोने से मेरी पीठ में दर्द होने लगा। इसके अलावा, दोपहर की तेज धूप के कारण गर्मी असहनीय हो गई और मुझे प्यास लगने लगी।
जब वह बकरियों को अगले हिस्से से बाहर निकालने ही वाला था, तभी अरबाब तम्बू से बाहर आया और उस डरावनी आकृति से अरबी में कुछ कहा। उसने सिर हिलाकर सहमति जताई। फिर अरबाब मेरे पास आया और मुझे एक लंबी छड़ी थमा दी। मैंने उसे दोनों हाथों से ग्रहण किया। ऐसा लगा जैसे मैं चरवाहे के रूप में दीक्षा समारोह से गुजर रहा हूँ।
हम सब मिलकर बकरियों को जंगल की ओर ले गए। कुछ दूर चलने के बाद, अरबाब ने मुझे बुलाने के लिए ताली बजाई। मैं वापस तंबू में गया जहाँ अरबाब ने मेरे हाथ में

कुछ रखा। मैंने उसे देखा—जहाँ तक मैं समझ पाया, वह एक दूरबीन थी। मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आया कि उन्होंने मुझे यह क्यों दी। यह सोचकर कि यह भागी हुई बकरियों को ढूंढने के लिए है, मैं इसे लेकर रेगिस्तान वापस जाने की तैयारी करने लगा। 'शूफ...शूफ...' अरबाब ने मुझे उसमें देखने के लिए कहा। मैं उत्सुक था। मैं अपने जीवन में पहली बार दूरबीन पकड़े हुए था। मैंने उसके दो लेंसों से देखा। ओह, सब कुछ कितना साफ़ दिख रहा है! मैं चकित रह गया। जो वस्तुएँ कई किलोमीटर दूर थीं, वे इतनी पास, इतनी साफ़ दिखाई दे रही थीं। बकरियों के निशान भी साफ़ दिख रहे थे। मैंने चारों ओर देखा। मैं खुश था। 'शूफ?' अरबाब ने पूछा। मैंने सहमति में सिर हिलाया। उन्होंने मुझसे दूरबीन ले ली और उसे तंबू के अंदर ले गए।
फिर उसने तकिया उठाया और दो नालों वाली बंदूक निकाली। वह बाहर निकला और आसमान की ओर निशाना साधा। एक चिड़िया आसमान में बहुत ऊपर उड़ रही थी। उसने उस पर निशाना साधा और गोली चला दी। गोली चिड़िया को लगी और वह गिर गई। अरबाब ने मेरी तरफ देखकर मुस्कुराया। मैं बुरी तरह डर गया था।
'शूफ,' अरबाब ने दोहराया।
मेंने सिर हिलाया।
'येला, रोह...' अरबाब ने बकरियों के पीछे मुझे धकेल दिया।
उस क्षण मुझे एहसास हुआ कि मेरा जीवन उन बकरियों से अटूट रूप से जुड़ गया है।

ग्यारह

पिछली रात के भागने के विचारों को त्यागकर, मैं रेगिस्तान में चल पड़ा। मुझे याद है: उस समय मेरे भीतर केवल घोर खालीपन ही व्याप्त था।
वह डरावनी आकृति तब तक मुझसे काफी आगे निकल चुकी थी। मैंने अपने सामने फैले रेगिस्तान को देखा। यह जगह उन रेगिस्तानों से बिल्कुल अलग थी जिनके बारे में मैंने सुना था या तस्वीरों में देखा था। यह शब्द सुनते ही हमारे मन में रेत की लहरों की छवि उभरती है। लेकिन यह वैसा बिल्कुल नहीं था। यहाँ सब कुछ कठोर मिट्टी और बड़े-बड़े पत्थरों से भरा था। मैंने केरल के पूर्वी हिस्सों में भी ऐसा ही नजारा देखा था। बस एक ही फर्क था। और वह फर्क बहुत बड़ा था। हमारे यहाँ जहाँ चट्टानों और रेत पर लताएँ फैली होती हैं, वहाँ हरियाली का नामोनिशान नहीं था। यह एक बंजर ज़मीन

थी। मैं सोचने पर मजबूर हो गया कि इन बकरियों को यहाँ क्यों लाया गया था। हालाँकि बकरियाँ स्वाभाविक रूप से ज़मीन पर घास सूंघ रही थीं, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला।

कुछ देर बाद, मैं उस डरावनी आकृति के पास पहुँच गया। बकरियों को खुला छोड़कर, वह डरावनी आकृति एक बड़े पत्थर पर बैठ गई। मैं भी दूसरी चट्टान पर बैठ गया—मेरे पास करने को कुछ नहीं था, और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। मैं उससे बहुत कुछ पूछना चाहता था। लेकिन कैसे? मेरे पास केवल इशारों की भाषा थी, और वह मेरी तरफ देख भी नहीं रहा था। वह किस चीज़ को घूर रहा था? न आकाश को, न धरती को, बस खालीपन को, मैंने सोचा। कुछ देर बाद, वह उठा और बकरियों को इकट्ठा करने लगा। यह थोड़ा मुश्किल काम था। लगभग सौ बकरियाँ थीं। जब एक बकरी इधर भागती, तो दूसरी विपरीत दिशा में चली जाती। जब तक उन्हें किसी तरह वापस बाड़े में लाया जाता, तब तक कोई दूसरी भाग जाती। कुछ मशक्कत के बाद सभी बकरियों को इकट्ठा करने के बाद, वह डरावनी आकृति बाड़ की तरफ वापस चलने लगी। क्योंकि मुझे कुछ पता नहीं था, मैं बस देखता रहा।

हम साथ-साथ बाड़े तक पहुँचे। जब उसने मुझे कुछ कहा, तो मैंने अंदाज़ा लगाया कि उसका मतलब था, 'तुम बकरियों के साथ मसारा की तरफ जाओ, मैं तुम्हारे पीछे आऊँगा।' अच्छा, तो मसारा का मतलब बकरियों का बाड़ा होता है। इसलिए, मायिन का मतलब पानी होगा। कम से कम मुझे इस तरह के शब्द तो सीखने दो।

मैं बकरियों को बाड़े में ले आया। वह घास लेकर आया। हम दोनों मिलकर मसारा में पानी और घास लाए। क्या मैंने मसारा कहा? देखो मैं कितनी जल्दी अरबी में बात करने लगा।

हम अगले मसारा गए और उसकी बकरियों को रेगिस्तान में ले गए। दो-तीन मसारा की बकरियों को ले जाने के बाद ही मुझे इन यात्राओं का उद्देश्य समझ में आया—इन बकरियों को चराने के लिए नहीं, बल्कि केवल उन्हें थोड़ा व्यायाम कराने के लिए ले जाया जाता था। उनकी दैनिक दिनचर्या की सुस्ती को दूर करने के लिए सुबह का एक हल्का-फुल्का व्यायाम।

सूरज की तेज़ गर्मी बढ़ने लगी। सभी बकरियों को रोज़ाना की सैर से वापस लाया जा चुका था। हर एक को पानी और चारा दिया जा चुका था। तभी एक भयानक घटना घटी। मुझे ज़ोरों से शौच की ज़रूरत महसूस हुई। मैंने सुबह-सुबह शौच नहीं किया

था। पिछली बार मैंने बॉम्बे में विमान में चढ़ने से पहले शौच किया था। पिछले दिन ज़रूरत नहीं थी क्योंकि मैंने कुछ खाया नहीं था। लेकिन सुबह खाए चार-पाँच कुबू का असर दिखने लगा था। पर मैं कहाँ शौच करता? मुझे चार दीवारों की आड़ की ज़रूरत नहीं थी। घर पर तो नदी किनारे या झाड़ियों की ओट में शौच करना ठीक रहता था। नदी में नहा भी सकते थे। लेकिन यहाँ तो न्यूनतम एकांत भी नहीं था। चारों ओर खुला मैदान था। यह सच है कि हर कोई शौच करता है और सबको पता है कि हर कोई शौच करता है; फिर भी, इंसान होने के नाते हम अपने कुछ कामों के लिए थोड़ी एकांत की उम्मीद करते हैं, है ना? मुझे यह बात आपसे साझा करने में झिझक हो रही थी। तब मैंने निश्चय किया कि मुझे ऐसा करना ही होगा, सिर्फ यह समझाने के लिए कि कैसे मामूली लगने वाले मुद्दे भी हमें परेशान और दुखी कर देते हैं। अगर ऐसी निजी दुविधाओं को सबके सामने न रखा जाए तो कहानी सुनाने का क्या फायदा?

मैंने खुद को शांत करने की कोशिश की। लेकिन यह ऐसी चीज नहीं थी जिसे मैं दबा सकूँ। हर पल मेरे पेट में बेचैनी बढ़ती जा रही थी। धीरे-धीरे मैं मसारा के दूसरी तरफ चली गई। अब मेरे और अरबाब के बीच, और उस डरावनी आकृति के बीच कम से कम बकरियों की एक कतार थी। इतना काफी था। आँखें बंद करके मैंने ऐसा किया। राहत। दुनिया में मिल सकने वाली सबसे बड़ी राहत।

मैंने उस पर कुछ रेत और पत्थर फेंककर बिल्ली की तरह उठ खड़ा हुआ। मुझे सफाई करनी थी। यह मुश्किल नहीं था। टंकी में काफी पानी था। मैं बाल्टी में थोड़ा पानी भरकर घास या भूसे के गट्ठों के पीछे जाकर खुद को साफ कर सकता था। मैंने बाल्टी में पानी भरा और गट्ठों के पीछे चला गया।

पानी की पहली बूँद मेरे पीठ पर गिरने से पहले ही, मुझे पीठ पर एक ज़ोरदार थप्पड़ लगा। उस अचानक थप्पड़ के असर से मैं सिहर उठा। मैं चौंककर पीछे मुड़ा। वह अरबाब था, उसकी आँखों में क्रोध की आग जल रही थी। मुझे कुछ समझ नहीं आया। मेरी क्या गलती थी? क्या मेरे काम में कोई चूक हो गई थी? क्या मैंने कोई बड़ी भूल कर दी थी?

अरबाब ने मुझसे पानी की बाल्टी छीन ली और फिर मुझे खूब डांटा। बेल्ट से मेरी पिटाई की। जब मैंने अपना बचाव करने की कोशिश की, तो उसने और भी बेरहमी से मारा। मैं गिर पड़ा। अरबाब बाल्टी लेकर तम्बू के अंदर चला गया।

कोड़े मारते हुए मैंने अपने गुरु के गुस्से भरे शब्दों से यही समझा: 'यह पानी तुम्हारी पीठ धोने के लिए नहीं है। यह मेरी बकरियों के लिए है। तुम्हें नहीं पता पानी कितना कीमती है। ऐसे फालतू कामों के लिए पानी को कभी मत छूना। अगर छुआ तो मैं तुम्हें मार डालूँगा!' इस तरह मुझे पहला सबक मिला। शौच करने के बाद पीठ धोना गलत था।

मैं बेचैनी से उठ खड़ी हुई। मैंने अपने जीवन में कभी ऐसी स्थिति का सामना नहीं किया था। ऐसा लग रहा था मानो मैं किसी नदी में रह रही हूँ। पानी के बिना मेरे जीवन में कुछ नहीं होता था। स्वच्छता मेरा आदर्श वाक्य था। जब सैनू दिन में दो बार नहीं नहाती थी तो मुझे गुस्सा आता था। और मैं तो हमेशा पानी में ही रहती थी! लेकिन मेरी सारी आदतें उसी दिन से टूटनी शुरू हो गईं, है ना? मेरे लिए सबसे कठिन था स्वच्छता पर लगा यह प्रतिबंध।

मैं वापस आकर पलंग के नीचे रेत पर बैठ गया। वह डरावना आदमी अपने पलंग पर बैठा खुबू खा रहा था। उसने मुझे दो-तीन खुबू दिए। मैं बिना हाथ धोए कुछ भी खाने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। मैंने खाने को छूने से इनकार कर दिया। तभी मुझे दूर से एक दृश्य दिखाई दिया। लगभग पचास ऊँटों का झुंड एक कतार में चल रहा था। यह एक भव्य दृश्य था। मैंने पहली बार ऊँट देखा था। सबसे बड़ा ऊँट आगे था और छोटे ऊँट पूंछ बना रहे थे। उन्हें आगे-आगे चलाने वाला या झुंड में रखने वाला कोई नहीं था। वे अपना रास्ता खुद चुन रहे थे।

जैसे ही वे हमारे पास आए, मैंने उन्हें विस्मय से देखा। ऐसा लगा मानो उनकी घनी भौहें रेगिस्तान की सारी कठोरता को दर्शा रही हों। मछली के गलफड़ों की तरह खुलते-बंद होते नथुने। चौड़ा खुला मुँह, मजबूत गर्दन, घोड़े की गर्दन जैसे खुरदुरे बाल, सींग जैसे सीधे खड़े कान। मैं उनकी उदासीन नज़र से सबसे ज़्यादा आकर्षित और सबसे ज़्यादा भयभीत था। मैंने एक ऊँट की आँखों में एक पल के लिए देखा। मैंने अपनी नज़रें ऐसे हटा लीं जैसे मैं सूरज को देख रहा हूँ। ऐसा लगा मानो रेगिस्तान में जीवन की गहराई, विशालता, कठोरता और जंगलीपन उन आँखों में समाहित हो गए हों। ऊँट के भावहीन चेहरे के पीछे शायद उसकी स्थिति की असंभवता ही छिपी हुई थी। मैं ऊँट को वैराग्य का मानवीकरण कहना चाहूँगा। वे ऊँट मेरे पास से गुज़रे और अपने आप बाड़े के अंदर चले गए। यह उनका अपना रेगिस्तान था।

बारह

मुझे ऊँटों को पानी और चारा देने का काम सौंपा गया था। मैं उनके बाड़े तक गया, लेकिन मुझे डर लग रहा था। क्या ऊँट इंसानों को नुकसान पहुँचाते हैं? अगर हाँ, तो वे कैसे हमला करते हैं? लात मारते हैं? काटते हैं? कुचलते हैं? मुझे कुछ पता नहीं था। लेकिन मुझे उनके बाड़े में जाकर उन्हें पानी और चारा देना ही था। बाड़े में जाने से बचना नामुमकिन था क्योंकि वहाँ एक ऐसा प्राणी था जो ऊँट से भी ज़्यादा खूंखार था —एक भयानक अरबाब, जो तेज़ नज़रों से मेरा पीछा कर रहा था। मैंने हिम्मत करके बाड़े में कदम रखा। काटने या लात मारने की आशंका से मैं उनके पैरों के बीच से चलकर किसी तरह उन्हें पानी और चारा दे पाया। बाद में मुझे कई बार यह सीखने का मौका मिला कि कैसे परिस्थितियों का सही मेल किसी भी इंसान के डर को ज़बरदस्ती मिटा सकता है।

उस दिन ऊँटों ने मुझे कोई चोट नहीं पहुँचाई। मुझे चार बर्तनों में पानी, चार में चारा, दो में गेहूँ और तीन में भूसा भरना था। काम खत्म होते-होते मैं पूरी तरह थक गया था। अपनी आँखों, हाव-भाव और विनती से मैंने उस डरावनी आकृति से मदद माँगी। जब भी वह मदद के लिए खड़ा होता, अरबाब बाहर आकर उसे रोक देता। तभी मुझे समझ आया कि यह मेरी पीठ साफ़ करने के लिए पानी लेने की सज़ा थी।

मैं जाकर उस डरावनी आकृति के पलंग के पास बैठ गया। जब मेरी साँस फूलना और थकान कम हुई, तो मुझे भूख लगने लगी। उस डरावनी आकृति ने मुझे जो खुबू दिए थे, वे अभी भी पलंग के नीचे थे। मुझे इस बात की चिंता नहीं थी कि मैं खुद को साफ नहीं कर पाया था। अब मुझे सफाई की कोई परवाह नहीं थी। वहीं बैठे-बैठे मैंने चार बड़े खुबू खा लिए और दो मग पानी गटक लिया।

जब मैंने अपना काम खत्म कर लिया, तो अरबाब ने मुझे तम्बू में बुलाया और मुझे सलाह और फटकार लगाई। उनकी बातें सुनते हुए मैंने ऐसा दिखाया मानो मुझे सब कुछ समझ आ गया हो। हालांकि मुझे कुछ भी समझ नहीं आया था, फिर भी मैं अपने अपराध की गंभीरता को समझ सकता था।

उसके बाद, कुछ देर के लिए आराम का समय था। मैंने चारों ओर छाया की तलाश की, लेकिन कहीं नहीं मिली। बस चिलचिलाती धूप और झुलसा देने वाली गर्मी ही बची थी। थोड़ी सी छाया तो अरबाब के तम्बू में थी। वह उसकी ऐसे रखवाली करता था जैसे

वह किसी सुल्तान का महल हो, किसी को अंदर नहीं जाने देता था। मुझमें वहाँ चुपके से जाने की हिम्मत नहीं हुई।

वह डरावना सा दिखने वाला जीव अपनी चारपाई पर बेफिक्र होकर सो रहा था, धूप से बचने के लिए उसने अपने चेहरे पर कपड़ा रखा हुआ था। सूरज की रोशनी और गर्मी का उसके मैले-कुचले शरीर पर कोई असर नहीं दिख रहा था। मैंने अपने सिर पर तौलिया लपेटकर चारपाई के पास बैठ गया। कुछ देर धूप में बैठने के बाद, चारपाई के नीचे छाया का वह छोटा सा आयताकार हिस्सा मेरी नज़र में आया। मानो यह दुनिया की सबसे बड़ी खोज हो।

सचमुच, अगर किसी खोज का महत्व उसकी आवश्यकता और परिस्थिति की मांग से आंका जाए, तो मेरे लिए मेरी खोज किसी भी अन्य खोज से कहीं अधिक महत्वपूर्ण थी। वह डरावनी आकृति कितनी देर से धूप में पड़ी थी? उसने मेरी तरह छांव क्यों नहीं ढूंढी? खुशी से झूमते हुए मैं चारपाई के नीचे घुस गया और लेट गया। हालांकि रेत गर्म थी, मेरी छोटी सी झपकी पहले की नींद से कहीं अधिक सुखद थी।

मुझे लगता है कि जब मुझे बुलाया गया तो मैं सो गया था। फिर से, जैसा मैंने दिन में पहले किया था, मैंने बकरियों को एक-एक करके बाहर निकाला। मैंने पहली बार अलग-अलग प्रकार की बकरियों और उनके लिए बने अलग-अलग बाड़ों पर ध्यान दिया। एक बाड़े में केवल दूध देने वाली बकरियाँ थीं; दूसरे में नर और वयस्क मादाएँ; अलग-अलग आकार की बकरियों और अलग-अलग उम्र के मेमनों के लिए अलग-अलग बाड़े थे; एक और बाड़े में भेड़ें थीं; और आखिरी बाड़े में ऊँट थे।

जब हम बकरियों के साथ बाहर जा रहे थे, तभी ऊँटों के बाड़े का द्वार खुल गया। वे अपने आप ही अपने रास्ते चले गए। जब हम आखिरी मसारा की बकरियों के साथ लौटे, तो ऊँट भी वापस आ गए। वही काम दोहराए गए—पानी, घास, चारा, गेहूँ...

वह डरावना आदमी एक बड़ी बाल्टी लेकर आया और मैं उसके पीछे-पीछे बकरियों के बाड़े में चला गया। उसने एक-एक करके बकरियों का दूध तेज़ी से निकाला। एक ही बार में उसने बाल्टी भर दी। फिर हम दोनों ने मिलकर बाल्टी बाहर निकाली।

अरबाब ने उसमें से थोड़ा दूध पिया, और उस डरावनी आकृति के पास दो प्याले थे। हालाँकि उन्होंने मुझे जितना चाहूँ उतना पीने को कहा, लेकिन मैं उसकी घिनौनी गंध के कारण नहीं पी सका। बचा हुआ दूध मेमनों के मसारा में ले जाया गया। वे बाल्टी के चारों ओर ऐसे जमा हो गए, मानो कादी पी रहे हों—जो चावल धोने के पानी से घर पर

बनाया जाने वाला पशुओं का पेय होता है—और उसे गटकने लगे। फिर से, मैंने देखा —मैं अपनी आँखों और दिमाग से नई-नई चीजें देखने लगा था—कि छोटे मेमनों को उनकी माताओं के साथ नहीं रखा गया था। माँ और बच्चे को अलग रखा गया था। किसी भी मेमने को अपनी माँ के थन से सीधे दूध पीने की अनुमति नहीं थी। सभी को एक ही बाल्टी में दूध दिया जाता था। ऐसे में, बच्चा किस माँ का दूध पीता है...? क्या स्वाद और गंध से ही बच्चा अपनी माँ को नहीं पहचानता? ऐसा ही होना चाहिए, चाहे वह बकरी हो, कुत्ता हो, गाय हो या इंसान। क्या यह सामूहिक रूप से दूध पीना बकरी और उसकी माँ के बीच के बंधन को तोड़ने के लिए है? कौन जाने? अरबों का यही तरीका है, या कम से कम अरबपति का तो यही तरीका है। मुझे उसकी आज्ञा माननी ही थी। इसके अलावा मुझे और किसी बात की चिंता क्यों करनी चाहिए?

परछाइयाँ लंबी होती गईं, सूरज रेगिस्तान की गोद में छिप गया। शाम ढलने लगी, रात हो गई। तभी रात्रि-अरबाब रात का खाना लेकर आ गया। उसने गाड़ी से कुछ राशन और पानी उतारा। दिन-अरबाब ने गाड़ी में कुछ सामान लादा और चला गया।

रात के अरबाब में खूबुस लाया गया था। हालांकि, उसमें कोई करी नहीं थी। सिर्फ खूबुस। मुझे समझ आ गया कि आने वाले दिनों में मेरा मेनू क्या होगा। सुबह का पेय: ताजा, छाती से निकला हुआ गर्म कच्चा दूध (केवल अगर मन करे तो)। नाश्ता: खूबुस, सादा पानी।

दोपहर का भोजन: खुबस, सादा पानी

शाम का पेय: ताजा, स्तन से निकला हुआ गर्म कच्चा दूध (केवल यदि पीने की इच्छा हो तो) रात का भोजन: खुबस, सादा पानी।

और भोजन के बीच में पीने के लिए लोहे के टैंक से सादा गुनगुना पानी (केवल बहुत आवश्यक होने पर)।

रात के काम निपटाने के बाद, वह डरावनी आकृति पलंग पर लेट गई। मैंने रेत पर एक चादर बिछा दी। अर्बाब तंबू के अंदर था। मैं उससे बहुत कुछ पूछना चाहता था, लेकिन जैसे ही उसकी पीठ पलंग से लगी, वह डरावनी आकृति खर्राटे लेने लगी।

मैं अकेली थी। मेरा थैला ही मेरा तकिया था। उसमें अचार की महक थी। अचानक मुझे घर के लोग याद आ गए, उम्माह, सैनू, और वो बेटा (बेटी) जो उसके गर्भ में पल रहा था। मेरी सुरक्षित पहुँचने की खबर न मिलने से वे ज़रूर परेशान होंगे। मैं बहुत

दुखी थी। मेरा दिल मानो फटने वाला था। मैं उन्हें कैसे बताऊँगी कि मैं पहुँच गई हूँ? कि मैं ठीक हूँ?

मुझे हकीम याद आ गया। वहाँ वो क्या काम कर रहा होगा? दूर से देखने पर ऐसा लग रहा था मानो वो भी किसी मुसीबत में फँस गया हो। उसकी हालत भी कुछ अलग नहीं होगी। दुखद। विमान में चढ़ते समय उसने कितने सपने देखे होंगे? इतनी कम उम्र में उसे ये सब कैसे सहना पड़ रहा है? वो बहुत गरीब नहीं था। उसके पिता दुबई में थे। ये वीज़ा तब मिला जब उसे वहाँ ले जाने की कोशिश की जा रही थी। 'हाँ, विदेश जाओ, घर पर समय बर्बाद मत करो। वहाँ की भाषा और जीवन शैली सीखो। दो साल के अंदर तुम्हें दुबई ले जाया जा सकता है,' उसके दादा ने उससे कहा था।

बेचारा लड़का, वह इस कठिन जीवन को कैसे सहन करेगा? मैं तो रेत की खुदाई जैसे कठिन जीवन का आदी हूँ। मुझे इससे कोई परेशानी नहीं है। वह तो घर पर मौज-मस्ती और आनंद का ही आदी था। उसका क्या होगा? ये अल्लाह की योजनाएँ हैं। इन सब बातों को सहना ही पड़ता है। अब रास्ता क्या है? आने वाले दिन और भी कठिन होंगे। हे मेरे दयालु अल्लाह, हकीम और मुझे इन कष्टों को सहने की शक्ति प्रदान कर।

रात हो चुकी थी और रेगिस्तान में मेरा दूसरा दिन शुरू हो गया। उस दिन भी मैं देर से सोया, शायद इसलिए क्योंकि मुझे सोने की वह मुद्रा नहीं अपनानी पड़ी थी।

तेरह

दिन शुरू होने से पहले ही मैं बुरी तरह थक गया था। सुबह उठते ही मेरे हाथ, पैर और शरीर में दर्द होने लगा। नदी में दिन भर रेत खोदने के बाद जितना दर्द होता है, उससे भी ज़्यादा दर्द मुझे आज हो रहा था। दर्द से ज़्यादा मुझे इस बात की झुंझलाहट सता रही थी कि काम के बाद मैं नहा नहीं पा रहा था। दिन भर पानी में काम करने के बावजूद मैं नदी से बिना नहाए कभी बाहर नहीं निकलता था। धूप में पसीना बहाते हुए, बदबूदार बकरियों के बीच घूमते हुए, उनके पेशाब और गोबर से सने कपड़ों में सोना भी मुझे बेचैन कर रहा था। मेरे कपड़े बगल और टांगों के बीच चिपक रहे थे; पसीने से भीगे जूतों की तो बात ही क्या!

मैं अभी पूरी तरह जागा भी नहीं था कि उस डरावनी आकृति ने मुझे एक एल्युमिनियम का बर्तन थमा दिया और इशारे से कहा कि मुझे बकरियों का दूध दुहना है। बकरियों का दूध दुहना? मैं? तभी मुझे लगा जैसे मैं एकदम खालीपन में डूब गया हूँ। मानो मैं अज्ञानता के गड्ढे में गिर गया हूँ।

मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी बकरी को इतना करीब से नहीं देखा था। ठीक है। आप सोच रहे होंगे—मैंने बकरी को इतने करीब से नहीं देखा! आप कहाँ से हैं? जी हाँ, आपने और मैंने बकरियाँ देखी हैं। बकरियाँ इंसानों के आस-पास तब से रह रही हैं जब से बसी हुई ज़िंदगी की शुरुआत हुई है—लगभग 7000 या 6000 ईसा पूर्व से। एक बेचारा जीव जिसे हमारे पड़ोसियों मरियम्मा, जनाकिअम्मा, वेलायुधन कुट्टी वगैरह ने पालतू बनाया था। यह एक प्यारा जानवर है। किसी को भी छोटे मेमनों को गले लगाने का मन करेगा। बकरियाँ हमें दूध, छोटे मेमने और गोबर देती हैं। हम उनका दूध पी सकते हैं, मेमनों को गुरुवार के मेले में बेच सकते हैं, और गोबर का इस्तेमाल केले के पेड़ों के लिए खाद के रूप में कर सकते हैं। बकरियाँ बचा हुआ खाना और घास खाती हैं। वे काढ़ी पीती हैं। अगर वे कसावा के पत्ते खा लें तो बीमार पड़ जाती हैं और कटहल के पत्ते खाकर सबसे ज़्यादा खुश रहती हैं। इसके अलावा मुझे बकरियों के बारे में कुछ नहीं पता था। शायद आपको भी नहीं पता होगा। उनका मूल स्थान कहाँ है? उनके पूर्वज कौन हैं? ज़ाहिर है, मुझे बकरियों की अलग-अलग किस्में और हर किस्म की खूबियों जैसी ज़रूरी बातें नहीं पता थीं। यहाँ तक कि मुझे बुनियादी बातों की भी जानकारी नहीं थी, जैसे कि उनके थनों की संख्या, खुरों की संख्या, गर्भावस्था की अवधि, दूध उत्पादन का समय, हर बार कितना दूध निकलता है, बकरी का दूध कैसे निकालते हैं, कितनी बार निकालना चाहिए और दूध निकालने के लिए उनके थनों को कैसे खींचते हैं। क्या वे गायों की तरह अपने पिछले पैरों से लात मारती हैं या घोड़ों की तरह अपने अगले पैरों से? उनकी लात से कैसे बचा जाए? मुझे कुछ भी नहीं पता था।

मैंने बकरियों के बारे में कभी किसी से नहीं पूछा था। और न ही किसी ने मुझे उनके बारे में कुछ बताया था। अगर मुझे पता होता कि यहाँ मुझे यही काम सौंपा जाएगा, तो मैं उन्हें ध्यान से देख कर उनके बारे में सब कुछ सीख सकती थी। जानकियाम्मा, जो कुछ ही कदम दूर रहती थीं, उनके पास दो-तीन बकरियाँ थीं। मैंने उन्हें भी देखा था—रास्ते के किनारे और खेतों में घास चरते हुए, उनके छोटे बच्चे उछल-कूद करते हुए।

शायद वे दूध देने वाली बकरियाँ थीं। अगर मुझे अपने इस काम के बारे में पहले से पता होता, तो मैं उनका दूध दुहना सीख सकती थी। लेकिन मैंने उन पर शायद ही ध्यान दिया था। हमारे चारों ओर बहुत से जीव-जंतु रहते हैं। अगर मुझे गाय पालने या कुत्तों की देखभाल करने के लिए कहा जाता, तो भी स्थिति शायद ही अलग होती। जब हमें उनकी ज़रूरत होती है, तभी हम उनके बारे में सोचते हैं और पछताते हैं कि जब मौका था तब हमने उन्हें देखा, सीखा या समझा क्यों नहीं। इस स्थिति में पूरी तरह से ढल जाने के बाद ही मुझे अपने आस-पास के वातावरण के प्रति जागरूक रहने की ज़रूरत का एहसास हुआ।

मैं और क्या कर सकता था? मुझे खुद ही सीखना था। मैं बाल्टी लेकर मसारा में घुसा और एक बकरी के पास गया। घर पर मैंने देखा था कि बकरियों का दूध निकालने से पहले उनके थनों को धोया जाता है। रेगिस्तान में तो नहाने-धोने का भी पानी नहीं था! थनों को धोने का तो सवाल ही नहीं था। धीरे से मैं एक बकरी के पीछे दुबका, बर्तन को उसके थन के पास ले गया और उसे खींचने लगा। दूध तो निकला ही नहीं, बकरी छटपटाने लगी और झुंड में कूद गई, बर्तन को भी मेरे साथ गिरा दिया। उसे पागलों की तरह भागते देख दूसरी बकरियां भी इधर-उधर भागने लगीं। उनमें से एक मेरे ऊपर से दौड़ गई और मेरी पीठ कुचल दी। मैं दर्द से तड़प उठा। किसी तरह मैं उठा और दूसरी बकरी के पीछे दुबका, जो दौड़ना बंद कर चुकी थी। जब मैंने उसके थनों को छुआ, तो वह भी चौंक गई और कूद कर भाग गई। मैंने एक और बकरी का दूध निकालने की कोशिश की, और वह भी भाग गई। हे प्रभु, मैंने सोचा, दौड़ती हुई बकरी का दूध कैसे दुहा जा सकता है? मैं अचंभित था।

दृढ़ निश्चय के साथ, मैं एक और बकरी के पास गया। वह भी भाग गई। यही सिलसिला चलता रहा। आधे घंटे बाद, जब अरबाब और वह डरावना आदमी यह देखने के लिए मसारा में आए कि मैंने कितना दूध निकाला है, तो उस बर्तन में एक बूंद भी नहीं थी। और तो और, मैं बकरियों के पीछे उछल-कूद कर रहा था।

मेरी दुर्दशा देखकर अरबाब ने मुझे डांटा और अपने तम्बू में वापस चला गया। वह डरावना आदमी अंदर आया और मुझसे बर्तन ले लिया। फिर उसने मुझे दिखाया कि बकरी के पास जाकर उसका दूध कैसे दुहा जाता है।

जिस बकरी का दूध निकालना हो, उसके पीछे से कभी न जाएं। उसके सामने से जाएं। तुरंत दूध निकालना शुरू न करें। उसे बच्चे की तरह प्यार से सहलाएं, उसके गाल,

कान और पीठ को धीरे से छुएं। उसकी बगलों को सहलाएं, उसकी पीठ थपथपाएं और फिर धीरे से उसके पास बैठ जाएं। उसके पेट को दो-तीन बार सहलाएं। फिर धीरे से उसके थनों को छुएं। बकरी थोड़ी हिलेगी। बकरियों को भी गुदगुदी महसूस होती है। बिल्कुल कुंवारी जैसी। फिर, धीरे से उसके थनों को सहलाकर उसकी बेचैनी दूर करें। घर पर, उसका बच्चा यह काम करता। और दूध तभी निकाला जा सकता है जब मां-बच्चे के घनिष्ठ संपर्क से गुदगुदी कम हो जाए और बच्चे के प्रति स्नेह से दूध उसके थनों से निकलने लगे। यहां कोई मेमना नहीं था जो बकरी को शांत कर सके और दूध निकालने में मदद कर सके। वह काम भी हमें ही करना पड़ा। यह सुनिश्चित करने के बाद कि उसकी गुदगुदी दूर हो गई है, अंगूठे और तर्जनी उंगली का उपयोग करके थन को ऊपर से नीचे की ओर खींचें। दबाव इतना होना चाहिए कि दर्द न हो, लेकिन दूध निकालने के लिए पर्याप्त मजबूत होना चाहिए। इस नियंत्रण में महारत धीरे-धीरे ही हासिल होती है। यही एक दूधवाले की योग्यता की पहचान है।

एक हाथ से बर्तन पकड़कर दूसरे हाथ से दूध निकालने की कोशिश न करें। एक हाथ से दूध निकालते समय, दूसरे हाथ से धीरे-धीरे थनों को सहलाएं। कोई भी चंचल बकरी शांत रहेगी। वह न तो लात मारेगी, न उछलेगी और न ही बर्तन को गिराएगी।

उस डरावने आदमी ने बकरी को कैसे काबू किया—मैं उसके प्रदर्शन से मंत्रमुग्ध हो गया था। उन घबराई हुई बकरियों का गुस्सा कहाँ चला गया? कुछ बकरियों का दूध दुहने के बाद उसने मुझे बर्तन थमा दिया। धीरे-धीरे मैंने उसकी नकल करना शुरू किया। बेशक, नकल करने की सारी कमियाँ तो थीं ही। कुछ समय बाद मुझे एहसास हुआ कि दूध दुहना जैसी गतिविधियाँ पशु प्रेमी के लिए स्वाभाविक होती हैं और जानवर सहज रूप से नकल करने वालों से उन्हें पहचान लेते हैं। बकरियों के साथ रोज़ाना का संपर्क भी महत्वपूर्ण है। कहते हैं कि बकरी समझ जाती है अगर कोई नया हाथ उसके थनों को छूता है।

फिर भी, मैंने एक बकरी को काबू में कर लिया और उसके थनों पर हाथ रख दिया। बाल्टी में दूध की पहली बूँद गिरने पर मुझे जो संतुष्टि मिली, उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। ऐसा लगा जैसे मैंने किसी बड़े काम के लिए अपना प्रशिक्षण पूरा कर लिया हो। मैंने उन कई बकरियों में से एक पर महारत हासिल कर ली थी जिन्हें मुझे अपने वश में करना था। बाकी बकरियाँ भी धीरे-धीरे मेरे वश में आ जाएँगी।

जब मैं किसी तरह उस सुबह आधी बाल्टी भरकर मसारा से बाहर निकला, तो मैं पसीने से भीगा हुआ था, मानो मैंने कोई कठिन परिश्रम किया हो।

चौदह

एक और दिन, जो पिछले दिन से कुछ खास अलग नहीं था, समाप्त हो गया। इस बीच, उस डरावने व्यक्ति ने मुझे बकरियों को चराने के कई तरीके सिखा दिए थे। उसने मुझे दिखाया कि बकरियों को कैसे आगे से नहीं, बल्कि बगल से ले जाना है; और भागने की कोशिश करने वाली बकरियों को कैसे काबू में करना है। उसने मुझे सिखाया कि प्रत्येक मसारा में कितना गेहूँ, भूसा और चारा देना चाहिए।

वह दिन पिछले दिन से ज़्यादा गर्म लग रहा था। हर दस कदम पर मेरा गला सूख जाता था, और लोहे के टैंक से गुनगुना पानी गले से नीचे जाते हुए जलन पैदा करता था। साथ ही, पानी की आदत न होने के कारण मेरा पेट भी खराब हो गया। पता नहीं उस दिन कितनी बार मुझे दस्त हुए। पिछले दिन की शर्म को भुलाकर, मैं जहाँ भी ज़रूरत महसूस करता, खुलेआम बैठकर शौच करने लगा। पानी से खुद को साफ़ करने की कोशिश करने पर अर्बब (पारंपरिक अरबी) से मार खाने से बचने के लिए, मैंने पत्थरों से अपनी पीठ साफ़ करना शुरू कर दिया। मैंने सोचा कि हर क्षेत्र में जो चीज़ सबसे ज़्यादा उपलब्ध होती है, उसी का इस्तेमाल करना वहाँ का रिवाज़ है। अंग्रेजों के पास कागज़ की भरमार होती है, इसलिए वे उसका इस्तेमाल सफ़ाई के लिए करते हैं; हमारे लिए पानी है, और हम उसी से सफ़ाई करते हैं; यहाँ पत्थर तो बहुतायत में थे।

दोपहर के बाद उमस बढ़ गई। ऐसा लगा जैसे भाप निकल रही हो। थकान हावी हो गई और पेट खराब होने से हालत और बिगड़ गई। मैंने उस डरावने आदमी और अर्बाब से शिकायत की, फिर भी मेरे काम पर कोई असर नहीं पड़ा। अर्बाब को सिर्फ मेरे काम की चिंता थी, मेरी तकलीफों की नहीं।

शाम तक मेरा शरीर पसीने से तरबतर हो गया था, मानो चावल के रस में भीग गया हो। कई दिनों से नहाया न होने के कारण मेरी त्वचा में जलन और सूजन महसूस हो रही थी। भिंडी से छिपकर मैंने बकरियों के पानी में हाथ और चेहरा धोया। पानी से अछूते मेरे बगल और गुप्तांग बेहद गंदे लग रहे थे।

उस रात मैं बेचैनी से सोई। बेशक, जब मैं बिस्तर कहती हूँ, तो मेरा मतलब सिर्फ़ प्रतीकात्मक है। मेरा बिस्तर ढीली रेत थी। उस डरावनी आकृति ने वहाँ मौजूद इकलौती चारपाई पर कब्ज़ा कर लिया था। मेरा बैग उसके नीचे था। मैं अपनी चादर खींचकर रेत पर बिछाती। वह पहले से ही गंदी थी, लेकिन उसके बिना रेत में मौजूद छोटे-छोटे कंकड़ चुभते। मेरी रात अच्छी नहीं गुज़री, लेकिन हालात को देखते हुए, आराम की उम्मीद करना मूर्खता ही होगी।

मेरी बेचैनी ने मुझे जगाए रखा, हालाँकि मैं बहुत थका हुआ था। मेरे विचार मेरे वतन, घर, सैंन, उम्माह, मेरे अजन्मे बेटे/बेटी, मेरे दुखों और चिंताओं या मेरे भाग्य के बारे में नहीं थे, जैसा कि कोई कल्पना कर सकता है। ऐसे सभी विचार मेरे लिए अजनबी हो गए थे, जैसे उन मृतकों के लिए जो परलोक पहुँच चुके थे। इतनी जल्दी—आप सोच रहे होंगे। मेरा जवाब है हाँ। ऐसे विचारों से बंधे रहने का कोई फायदा नहीं। वे केवल इस अहसास की प्रक्रिया में देरी करते हैं कि हम परिस्थितियों के हाथों हार चुके हैं और अब पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं है। मुझे यह एक दिन के भीतर ही समझ आ गया था। चिंता और फिक्र व्यर्थ थी। वह दुनिया मेरे लिए अजनबी हो गई थी। अब मेरे लिए केवल मेरी यह दुख भरी नई दुनिया ही बची थी। मैं इस दुनिया की परिस्थितियों में फँस गया हूँ। मैं इसकी चिंताओं में बुरी तरह डूब चुका हूँ, और यहीं और अभी से जुड़ना ही बेहतर है। यही किसी तरह जीवित रहने का एकमात्र तरीका था। अन्यथा, मेरी बढ़ती चिंताएँ मुझे मार डालतीं या मेरे दुख मुझे डुबो देते। शायद इसी तरह यहाँ फँसे हर कोई जीवित रहता है, है ना?

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि उस रात लेटते समय मैं क्या सोच रहा था? सुबह-सुबह मसारा जाकर बकरियों का दूध दुहने के बारे में; उस डरावनी आकृति की तरह बकरियों को काबू में करने और दूध से भरा बर्तन लेकर बाहर आने के बारे में; मुझे दूध के साथ देखकर अरबाब के चेहरे पर खुशी की चमक के बारे में; और अकेले ही मसारा की बकरियों को चराकर वापस लाने के बारे में। उन सपनों को साकार करने के लिए क्या करना होगा और मुझे क्या सावधानियां बरतनी होंगी; उस दिन मेरी क्या कमियां थीं और मैं उन्हें कैसे सुधार सकता था।

मुझे न तो बीते कल की परवाह थी और न ही आने वाले कल की। मेरा सारा ध्यान सिर्फ आज को संभालने पर था। मुझे लगता है कि मेरी पूरी मौज-मस्ती की जिंदगी बस यही थी।

चादर पर लेटे हुए, मैंने उस दिन सीखे अरबी शब्दों और उनके अर्थों को याद करने की कोशिश की। केवल दो दिन ही बीते थे। लेकिन मुझे लगा कि मैंने ज़रूरत से ज़्यादा शब्द सीख लिए हैं।

अरबाब उद्धारकर्ता
मसारा बकरियों का घर
खुबस ही एकमात्र भोजन है जो मुझे यहाँ मिल सकता है।
यह एक बहुत ही दुर्लभ तरल पदार्थ हो सकता है जिसका सावधानीपूर्वक उपयोग किया जाना चाहिए (कृपया इसे महज 'पानी' समझकर तुच्छ न समझें)।
(अरबाब की मायिन के प्रति भावनाएँ पानी के प्रति हमारे दृष्टिकोण से तुलनीय नहीं हैं।) गणम बकरी
हलीब दूध
थिबिन घास
बरसी है
जमाल ऊंट
नहीं
जी हम हाँ, अरबाब
याल्लाह दफ़ा हो जाओ
इन शब्दों को याद करने के बाद ही मुझे एहसास हुआ कि मुझे और भी बहुत से शब्द नहीं पता थे: गेहूँ, बर्तन, टंकी, कार, बंदूक, रेगिस्तान, पोशाक, स्नान, मल, दस्त, मार-पीट, क्रोध, डांट, तम्बू; और कई क्रियाएँ जैसे आया, गया, नहीं किया, नहीं जानता, आदि।
यदि आपमें से कोई अरबी भाषा का जानकार पूछे कि मैंने यहाँ जो शब्द लिखे हैं उनका उच्चारण और अर्थ सही है या नहीं, तो मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि मुझे नहीं पता। मैंने उन्हें इसी तरह सुना है और इसी तरह सीखा है। मैं उन ध्वनियों से एक अर्थ निकाल पाया। इसलिए, जहाँ तक मेरा सवाल है, वही सही शब्द और सही उच्चारण था। आख़िरकार, शब्द में क्या होता है—महत्वपूर्ण तो समझ है। मैं समझ गया कि अरबी भाषा बोलने वाले का उन शब्दों से क्या तात्पर्य है; और अरबी भाषा बोलने वाला मुझे समझ गया। संवाद करने के लिए भाषा विशेषज्ञ होना ज़रूरी नहीं है।

मैं लेटे-लेटे पिछले कुछ दिनों के बारे में सोच-विचार कर रही थी, समय का पता ही नहीं चला। दर्द गायब हो गया। थकान के साथ-साथ नींद ने मुझे जकड़ लिया। गहरी नींद। यकीनन तब तक आधी रात हो चुकी होगी। मैं सुबह होने के बाद ही उठी। सूरज मुझसे बहुत पहले पूरब में निकल चुका था। मैं उठी और पलंग की तरफ देखा। वह खाली था। मैंने सोचा, वह जल्दी उठकर काम पर लग गया होगा। मैं दूध दुहने से पहले वहाँ पहुँचने की उम्मीद में दौड़ी। लेकिन वह डरावना आदमी वहाँ नहीं था।
बकरियों को पानी या चारा नहीं दिया गया था। तालाबों में गेहूँ नहीं भरा गया था। कुछ भी नहीं किया गया था। उनकी दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो गई थी, बकरियाँ बेचैन थीं। मुझे लगा कि वह डरावना सा दिखने वाला व्यक्ति किसी और मसारा में व्यस्त होगा। मैं सभी मसाराओं में गया। वह कहीं नहीं मिला। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह सुबह-सुबह कहाँ चला गया होगा। मैं मसारा से बाहर आया और चारपाई पर बैठ गया। मेरा मन संदेह से भरा हुआ था, इसलिए मैं नीचे झुका और चारपाई के नीचे देखा। पिछले दिन मैंने एक बहुत पुराना और गंदा थैला देखा था, जो मुझे लगा कि उसका था। वह वहाँ नहीं था! संदेह की जड़ और गहरी हो गई।
फिर अरबाब तम्बू से बाहर आया और मेरी ओर बढ़ा। उसने मुझे एक बर्तन दिया और बकरियों का दुहकर उसके लिए दूध लाने को कहा। मैंने अरबाब को आशंका भरी निगाहों से देखा। ज़रूर अरबाब मेरी उस नज़र का मतलब समझ गया होगा—वह डरावना आदमी कहाँ चला गया? फिर अरबाब ने मुझे बहुत सी बातें बताईं। उसके शब्दों में क्रोध, गालियाँ, सहानुभूति, क्रूरता और अपमान सब कुछ झलक रहा था।
उन शब्दों से मैं यही समझ पाया: वह, मेरा डरावना सा दिखने वाला व्यक्ति, इस नरक से बच निकला था!

पंद्रह

हम सिर्फ दो दिन से एक-दूसरे को जानते थे। मुझे तो यह भी नहीं पता कि उन्हें सिर्फ जान-पहचान कहा जा सकता है या नहीं। बस कुछ ही शब्द बोले थे। उनका नाम, जन्मस्थान, कुछ भी नहीं पता था। फिर भी, जब मुझे पता चला कि वह चले गए हैं, तो बहुत दुख हुआ। मैं उस दर्द का कारण समझ नहीं पा रहा था। शायद यह तीव्र अकेलेपन की पीड़ा से उपजा था। अचानक मेरा शरीर थकान से भर गया। ठीक वैसे

ही जैसे किसी को अचानक पता चलता है कि उसके दादा या उम्माह या बच्चे का निधन हो गया है। लेकिन मेरे दादा, जो मुझे यह दुखद खबर देने आए थे, उनमें कोई भावना नहीं थी। 'वह चले गए।' हाँ, चले गए। बस इतना ही। कहाँ, कैसे, किसके साथ? 'नहीं,' उन्होंने कहा, मानो वह जानना ही न चाहते हों।

अचानक मुझे उम्मीद की एक किरण दिखाई दी। अगर अरबाब को कभी पता चले कि मैं भी चला गया हूँ, तो उसकी भी ऐसी ही प्रतिक्रिया होगी। अगर वो डरावना आदमी चला गया, तो नजीब है, अगर नजीब चला गया, तो कोई और होगा। बस इतना ही।

लेकिन पहले दिन उसका रवैया और हरकतें देखकर मेरी उम्मीदें कम हो गईं। उसने बंदूक से आसमान में निशाना साधा, दूरबीन से देखने का अंदाज़ा लगाया, जब भी मैं बाहर निकलता तो अपनी गाड़ी की छत से मुझे देखता रहता, और जब उसे लगता कि मैं हद से ज़्यादा आगे बढ़ गया हूँ तो मेरे चारों ओर चक्कर लगाता। मुझे डर था कि वह मुझे इस नरक से कभी निकलने नहीं देगा। मैंने उस डरावने शख्स की हर हरकत में डर और सावधानी देखी थी। उसके कहे हर शब्द में मुझे डर झलक रहा था: भागने की कोशिश मत करना। अगर तुमने ऐसा किया तो वह तुम्हें मार डालेगा—वह निर्दयी, क्रूर, बेरहम अरबाब। लेकिन ये सब कहने के बाद वह भाग गया। झूठा! वह मेरा इंतज़ार कर रहा था, सब कुछ मुझे सौंपकर भाग गया। उसने मुझे ये सारे झूठ इसलिए बोले ताकि मैं भागने की कोशिश न करूँ। देखो, अरबाब कितना शांत है। उसकी हमेशा वाली झुंझलाहट भी नज़र नहीं आ रही। बस एक हार मान लेने का भाव है, जो हो गया सो हो गया।

जब मैंने अपनी स्थिति के बारे में सोचा, तो मुझे खुशी हुई। पहली बात, वह डरावनी आकृति किसी तरह इस पीड़ा से बच निकली। दूसरी बात, मैं भी भविष्य में इसी तरह बच सकती हूँ। तीसरी बात, और सबसे महत्वपूर्ण बात, मैं इस पलंग पर अपना अधिकार जमा लूँगी। मुझे फिर कभी ज़मीन पर नहीं सोना पड़ेगा।

जैसे ही मुझे आज़ादी का एहसास हुआ, मैं बहुत उत्साहित हो गया। मैं बर्तन लेकर मसारा (दूध दुहने की मशीन) की ओर भागा और कुछ बकरियों का दूध दुहा। बेशक, मैं अभी भी नौसिखिया था, लेकिन मैंने कल से कहीं बेहतर किया और बकरियों ने मुझे उतने धक्के भी नहीं मारे। मैं पिछले दिन की एक बूंद भी न दुह पाने की स्थिति से बहुत

आगे निकल चुका था। लेकिन उस डरावने व्यक्ति के स्तर तक पहुँचने में अभी कुछ समय लगेगा।

मुझे जो दूध मिला, उसमें से कुछ मैंने अरबाब को दिया और बाकी बचा हुआ दूध मैंने छोटे बच्चों के मसारा में डाल दिया। फिर मैंने बाकी का कठिन काम शुरू किया। मुझे दो लोगों का काम करना था। ऊँटों को चारा खिलाना था और उन्हें खुला छोड़ना था। मैंने हर मसारा में पर्याप्त घास, गेहूँ और चारा डाला और बर्तनों में पानी भर दिया। इसी बीच एक पानी का ट्रक आया और मैंने उस आदमी की टंकी भरने में मदद की; चारे से भरा एक ट्रेलर आया और मैंने उसे उतारने में मदद की। हालाँकि मैंने कड़ी मेहनत की, लेकिन काम कभी खत्म नहीं हुआ। यहाँ तक कि जब बकरियों को चराने का समय हुआ (मैंने परछाई की लंबाई से समय का अनुमान लगाना शुरू कर दिया था), तब भी आधे मसारा में घास नहीं डाली गई थी।

हालाँकि अरबाब मुझे काम करते हुए देख रहा था, फिर भी उसने बकरियों को बाहर न ले जाने पर मुझे डाँटा। मैंने जवाब दिया कि बिना मदद के मैं ज़्यादा कुछ नहीं कर सकता। अरबाब ने मुझे बेल्ट से जवाब दिया। मेरी पीठ पर एक ज़ोरदार कोड़ा पड़ा। मैं दर्द से तड़प उठा। ऐसा लगा जैसे वह कोड़ा अगले छह महीने तक मेरी पीठ में चुभता रहेगा और दर्द करता रहेगा। जाते हुए अरबाब ने कुछ कहा। मैं समझ गया कि उसने क्या कहा—यह उस काम के बारे में था जो एक व्यक्ति ने मेरे उस डरावने आदमी के साथ जुड़ने से पहले किया था। कभी-कभी एक अजनबी भाषा भी बहुत अच्छी तरह से संवाद कर सकती है। मैं रोते हुए भाग गया और बाकी काम पूरे किए। मुझे नाश्ता करने का समय नहीं मिला, न ही अरबाब ने मुझे नाश्ता करने के लिए आमंत्रित किया।

मैंने अभी-अभी दो मसाराओं की बकरियों को चराना खत्म किया ही था कि अरबाब ने मुझे बुलाया और बताया कि बकरियों को बाजार ले जाने के लिए एक गाड़ी आई है। ‘बड़ी बकरियों को पकड़ो और गाड़ी में लाद दो।’ गाड़ी में मेरे बड़े अरबाब आए थे। मदद करने वाला कोई नहीं था। मैं बकरियों के बाड़े में घुस गया। बाहर खड़े होकर, दोनों अरबाब एक बकरी चुनते और उसकी ओर इशारा करते हुए कहते, ‘आदि।’ मैं उसे पकड़ने की कोशिश करता, लेकिन पानी में मछली की तरह, वह फिसलकर दूर भाग जाती। मैं उसका पीछा करता, उसे पकड़ता (कैसे पकड़ूँ... उसके गले में रस्सी भी नहीं थी?), और उसे गाड़ी तक ले जाता। अगली समस्या थी उसे गाड़ी के अंदर

धकेलना। मैं उसे उठाकर अंदर ले जाने के लिए इतना ताकतवर नहीं था। बकरी आसानी से अंदर नहीं आती थी। मुझे नहीं पता कि मैंने एक-एक बकरी को गाड़ी में धकेलने में कितनी ऊर्जा और समय खर्च किया। जब तक मैं दो-तीन बकरियों को गाड़ी में डाल पाता, मैं थक चुका होता। लेकिन अरबाब मुझे बार-बार मसारा की ओर दौड़ाते थे। वे मसारा की ओर इशारा करते और कहते, 'आदि अबियाद।' मैं समझ नहीं पाता था कि कौन सा। यह सोचकर कि मेरे बगल वाला बकरा है, मैं उसे पकड़ने की कोशिश करता। अरबाब चिल्लाते, 'हिमर, माफ़ी असवद, अबियाद, अबियाद।' यह समझकर कि वह वह नहीं है, मैं एक बड़े बकरे को पकड़ने की कोशिश करता। अरबाब मेरे सिर पर मारते, 'हिमर, मुख माफ़ी इन्ती, आदि अबियाद।' कई गलतियों के बाद आखिरकार मुझे समझ आया कि अरबाब मुझसे सफेद बकरे को पकड़ने के लिए कह रहे थे।

उसे घसीटते हुए, मैंने किसी तरह उसे गाड़ी में धकेल दिया। फिर से वही मसारा। अरबाब 'अस्वद' कहता, मैं फिर कोई न कोई गलती कर बैठता, और आखिर में उसे वो काली बकरी लाकर देता जिसकी तरफ उसने इशारा किया था। करीब बीस बकरियाँ पकड़ते-पकड़ते मैं थककर गिर पड़ा। मैंने खुद को और कई दूसरों को कोसा। उस डरावने आदमी को आज़ादी मिल गई। मेरा इनाम: कमरतोड़ मेहनत! एक ऐसा कोड़ा जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगा! दोपहर के खाने तक भूखा रहना!

सोलह

मैं अकेले जीवन का सामना करना सीख रहा था, ऐसे कामों में खुद को प्रशिक्षित कर रहा था जो मैंने पहले कभी नहीं किए थे, जीवन जीने का एक नया तरीका आजमा रहा था, एक असामान्य परिस्थिति के अनुकूल ढल रहा था। ऐसा नहीं था कि मेरे पास कोई विकल्प था; मैं पूरी तरह से असहाय था। अगर हमें यह पता होता कि थोड़ा सा पानी तभी मिलता है जब हम हड्डियां टूटने तक काम करते हैं, तो हम सिर्फ हड्डियां टूटने तक नहीं, बल्कि मरने तक काम करते।

चूंकि मैंने उस डरावने आदमी की कुछ दिनों तक मदद की थी, इसलिए मुझे पूरा भरोसा था कि रोज़मर्रा के काम मुश्किल नहीं होंगे और मैं उन्हें आसानी से सीख लूंगा। बस बकरियों का दूध दुहना और उन्हें चराना ही थोड़ा मुश्किल था; बाकी काम तो एक

अंधा भी कर सकता था, बस थोड़ी सी सेहत और ताकत चाहिए थी। कम से कम मेरी समझ तो यही थी। लेकिन, जैसे-जैसे दिन बीतते गए, मुझे बहुत सी नई चीजें खुद ही सीखनी पड़ीं—बकरियों के तौर-तरीके, उन्हें पालने का तरीका, ऊंटों की आदतें। हालात इंसान को कुछ भी सीखने में सक्षम बना देते हैं।

एक दिन मैं हमेशा की तरह बकरियों को बाहर ले जा रहा था—मेरे आने के लगभग एक हफ़्ते बाद की बात होगी—तभी मैंने देखा कि एक बकरी सुस्त और थकी हुई लग रही थी। यह गर्भावस्था की थकान थी—सैनू की तरह। जब मैंने अरबाब से पूछा कि क्या मैं उसे बाहर ले जाऊं, तो उन्होंने अनुमति में सिर हिला दिया। जब हम मसारा से आधे रास्ते पर थे, तो बकरी झुंड से अलग होकर लेट गई। मैं हैरान होकर उसके पास खड़ा हो गया। थोड़ी देर बाद, वह कराहने और छटपटाने लगी। तभी मुझे समझ आया कि उसे प्रसव पीड़ा हो रही है। हालाँकि मैंने उसे वापस मसारा ले जाने की कोशिश की, लेकिन वह तीन-चार कदम चलने के बाद गिर गई। इस बीच, बाकी बकरियाँ रेगिस्तान में बिखर चुकी थीं। जब तक वे झुंड में चलती थीं, बकरियाँ ठीक रहती थीं। लेकिन अगर झुंड बिखर जाता, तो सब कुछ खत्म हो जाता। तब उनकी सहज प्रवृत्ति हावी हो जाती। बकरियाँ एकमात्र पालतू जानवर हैं जो लगभग छह हज़ार साल से मनुष्य के साथ रहने के बावजूद, जब भी संभव होता है, अपने जंगली स्वभाव में लौट जाती हैं। इसीलिए उस डरावनी आकृति ने मुझे पहले ही दिन निर्देश दिया था कि मैं उन्हें अनुशासित रखूं और झुंड के भीतर रखूं।

इससे पहले कि मैं कुछ कर पाता, पचास बकरियाँ पचास-पचास दिशाओं में चली गईं। मैं दुविधा में था: क्या मैं प्रसव पीड़ा से जूझ रही बकरी को वहीं छोड़कर बाकी बकरियों के पीछे जाऊँ या उसकी देखभाल करूँ और बाकी को इधर-उधर भटकने दूँ? अंत में, उस चरवाहे की याद करके जो खोई हुई बकरी की तलाश में उनतालीस बकरियों को छोड़कर चला जाता है, मैंने प्रसव पीड़ा से जूझ रही बकरी की देखभाल करने का फैसला किया।

बकरियों की तो बात ही छोड़िए, मैंने कभी किसी जानवर को बच्चे को जन्म देते नहीं देखा था। मुझे नहीं पता था कि प्रसव पीड़ा में जानवर को किस तरह की मदद की ज़रूरत होती है। मेरे पास कभी कोई पालतू जानवर नहीं था, न ही मैंने अपने पड़ोस में रहने वाले किसी जानवर की देखभाल की थी। इसलिए, मेरी भागीदारी बस वहाँ खड़े होकर निष्क्रिय रूप से देखने तक ही सीमित थी। थोड़ी देर बाद, मैंने एक सिर बाहर

निकलते देखा और कुछ डर के साथ, मैं देखता रहा। फिर अनायास ही मैं बच्चे को सहारा देने के लिए आगे दौड़ा, क्योंकि वह धीरे-धीरे बाहर आने लगा, दर्द की सारी ज्वालाओं को सहते हुए। लेकिन उसके शरीर के चिपचिपेपन के कारण, मैं उसे पकड़ नहीं पाया। वह मेरे हाथ से फिसलकर ज़मीन पर गिर गया।

कहीं से अचानक मेरे मन में एक पुरानी बात कौंध गई: नाल को निकाल देना चाहिए! मैंने उसके चेहरे और शरीर को हाथ से साफ किया। उसकी माँ अपने बच्चे के प्रति मुझसे भी ज़्यादा ज़िम्मेदार थी। कुछ ही पलों में उसने बच्चे को चाटकर साफ कर दिया। जन्म के तुरंत बाद बच्चा खड़ा होने की कोशिश करने लगा और कामयाब भी हो गया। वह धीरे-धीरे लड़खड़ाते हुए अपनी माँ के थनों तक पहुँचा। मैंने देखा कि वह एक बकरा था।

उसी क्षण, मेरा मन अपने सारे बंधनों से मुक्त हो गया और जो कुछ मैं भूलने की कोशिश कर रहा था, वह सब अचानक मेरे सामने आ गया। मेरी सैनू गर्भवती है। जब मैं उसे छोड़कर गया था, तब उसकी प्रसव पीड़ा शुरू होने वाली थी और तब से मुझे उसकी कोई खबर नहीं मिली थी। शायद यह अल्लाह का कोई शुभ संकेत था जो वह मुझे दिखाना चाहता था। मेरी सैनू, मेरी पत्नी—उसने एक बच्चे को जन्म दिया है। एक बेटा, जैसा कि मैं चाहता था। इसी विश्वास में, मैंने उस नवजात बकरी का नाम नबील रखा। वही नाम जो मैंने अपने बेटे के लिए सोचा था।

मेरे हाथ और कपड़े पानी और नाल से निकले खून से पूरी तरह भीग गए थे। मैं कहाँ धोती? यह तो तय था कि अगर मैं बकरियों के बिना मसारा लौटती तो अरबाब मुझे डांटते। मैंने अपने कपड़े से हाथ धोए और फिर उस नन्हे से प्यारे से मेमने को गोद में उठाकर चूमा। तुम अल्लाह का दिया हुआ तोहफा हो। खुश रहो, मेरे प्यारे।

मैंने नबील को उसकी माँ की गोद में बिठाया। अचानक एक ज़ोरदार लात पड़ी और मैं दूर जा गिरी। कुछ पल होश में आने के बाद जब मुझे होश आया तो पता चला कि मुझे लात मारने वाला अरबाब था। वह गुस्से से मेरी ओर घूर रहा था और किसी चीज़ की ओर इशारा करते हुए चिल्ला रहा था। बाकी बकरियाँ रेगिस्तान में इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं। मैंने कुछ शब्द बुदबुदाए, जैसे बकरी, प्रसव, बच्चा, नाल आदि। लेकिन अरबाब सुनने के मूड में नहीं था। गुस्से में आकर वह आगे बढ़ा और नबील को उसकी माँ के थनों से छीन लिया। फिर मेरी बेबस विनतियों और बकरी माँ के दिल

दहला देने वाले चेहरे को अनसुना करते हुए, वह नबील को अपने कंधों पर उठाकर वापस मसारा (बकरीखाने) चला गया।
बकरी को वहीं छोड़कर मैं बाकी बकरियों के पीछे भागा। बड़ी मुश्किल से उन्हें इकट्ठा कर पाया। जब मैं उन्हें लेकर मसारा (चारागाह) की ओर वापस जा रहा था, तो बकरी बेबस होकर हमारे पीछे-पीछे आती रही।
वापस लौटने पर मुझे और भी अधिक दंड का सामना करना पड़ा। मेरी जमकर पिटाई हुई और मुझे खूब खरी-खोटी सुनाई गई। उस दिन के आरोप पत्र में अर्बाब ने मुझ पर चार आरोप लगाए: पहला, मैंने नाल और खून को अपने हाथों और कपड़ों से साफ करने के लिए थोड़ा पानी लेने की कोशिश की थी; दूसरा, बकरियों को लेकर लौटने में मुझे देर हो गई थी; तीसरा, मैंने एक बकरी को बच्चे को जन्म देते हुए देखने में समय बर्बाद किया था - बकरियां खुद बच्चे को जन्म देना जानती हैं और उन्हें किसी मानवीय सहायता की आवश्यकता नहीं होती; और चौथा, जो सबसे गंभीर अपराध था, मैंने नवजात शिशु को उसकी माँ का दूध पिलाने की कोशिश की थी।
मुझे पता था कि छोटे बच्चों को बाल्टी में दूध पिलाया जाता है। लेकिन मुझे यह नहीं पता था कि नवजात शिशु को भी माँ का दूध पीने की अनुमति नहीं होती।
एक बकरी को उसके बच्चे को जन्म देने में मदद करने की कोशिश करने का मेरा इनाम कठोर शब्द, एक लात, ढेर सारा थूक, दो या तीन बेल्ट से कोड़े और दोपहर में भूखा रहना था।
फिर भी, मुझे बुरा या दुखी महसूस नहीं हुआ। मुझे पूरा यकीन था कि अल्लाह मेरा असली इनाम घर पर सैंनु और मेरे बेटे को देगा। या कम से कम मैंने खुद को यही समझाया। मुझे जीने के लिए किसी सहारे की ज़रूरत थी।

सत्रह

मैंने नबील को बाकी बकरियों से ज़्यादा प्यार और देखभाल दी। शायद उसे इसकी ज़रूरत नहीं थी और वह बाकी बकरियों के साथ रहकर भी खुश रहता। लेकिन मैं उसे जाने नहीं दे सकती थी। वह मेरी गोद में पैदा हुआ था, अल्लाह का दिया हुआ तोहफ़ा, मेरे बेटे की जगह। छुपकर, मैं अक्सर उसे उसकी माँ का दूध पिलाती थी—यह सौभाग्य बाकी बकरियों को कभी नहीं मिला था। उसे अपनी माँ का दूध पिलाने से

बेहतर तोहफ़ा मैं और क्या दे सकती थी? बाकी बकरियों को एक ही बाल्टी से दूध पिलाया जाता था, लेकिन मैं उसे अलग से दूध पिलाती थी। मैं उसे घास की कोमल पत्तियाँ खिलाती थी और बकरियों को बाहर ले जाते समय उसे अपने साथ चलाती थी। एक शरारती बच्चे की तरह, वह अचानक भाग जाता, आगे उछल पड़ता और मेरी तरफ़ देखने के लिए अपना सिर घुमाता। मैं उसे पकड़ने दौड़ती और वह झुंड में घुसकर छिप जाता। और जब मैं उसे पकड़ लेती, तो उसे चूमती। मेरे लिए नबील उस मसारा में मौजूद कई बकरियों में से एक नहीं था। वह मेरा अपना बेटा था।

वह शुरू से ही बहुत शरारती था। उसकी आदत थी अपने से बड़े बकरों से लड़ने की। कुछ बकरे उसकी शरारतों को बर्दाश्त कर लेते थे, लेकिन कुछ उसे अपने सींगों से मार देते थे। कितनी बार वह खून बहता हुआ मेरे पास आया! भिखारी की नज़र से बचकर, मैं तालाब से पानी लाकर उसके घावों को साफ करता और भिखारी की दवा लगाता। नबील ने मेरी इस विशेष देखभाल और स्नेह को पहचाना और बदले में मुझे भी वही स्नेह दिया।

एक दिन, खुबस खाने के बाद, मैं बकरियों को टहलाने के लिए निकलने ही वाला था कि तभी अरबाब ने मुझे बुलाया। 'आज घूमने नहीं जाना। आज कुछ और काम करना है।'

कुछ देर बाद, अरबाब एक लंबी, तेज़ छुरी लेकर तम्बू से बाहर आया। मेरे भीतर कुछ जलने लगा। हे मेरे प्रभु, क्या उसकी योजना इन बकरियों में से कुछ को मारकर बाद में खाने की थी?

आप अरबाब से कुछ भी नहीं पूछ सकते थे। आप बस वही सुन सकते थे जो वह कहता था। चाहे आप उसकी बातें समझें या न समझें, आपको उसकी बात माननी ही पड़ती थी। मैं अब तक यही करता आ रहा था। इसलिए, मुझे अरबाब से कुछ भी पूछने में डर लगता था। मैं चुपचाप उसके पीछे-पीछे चलता था।

अरबाब उस बाड़े के पास गया जहाँ छोटे बकरे रखे थे। एक बकरे को देखकर उसने मुझे उसे पकड़ने का इशारा किया। मुझे यकीन था कि वह उसे मारना चाहता था। हत्यारा! लेकिन मुझमें उसका विरोध करने की हिम्मत नहीं थी। अनिच्छा से मैं बाड़े में घुसा और उस बकरे को बाहर ले आया जिसे वह चाहता था। उसने मुझे उसे अपनी ओर घुमाने, उसके शरीर को अपनी जांघों के बीच रखने और उसके पिछले पैरों को

ऊपर उठाने को कहा। मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आया कि मुझे ऐसा क्यों करना था।

बकरी जल्द ही अपने अगले पैरों पर खड़ी हो गई, उसका शरीर मेरी जांघों के बीच और पिछले पैर मेरे हाथों में थे। मेरे ठीक सामने खड़ा अर्बाब बकरी के निचले हिस्से को साफ देख सकता था। बकरी डर से कांप रही थी। मैं उससे भी ज्यादा डरा हुआ था। मुझे याद है कि अर्बाब ने चाकू की धार की जांच की। तभी एक ऐसी चीख सुनाई दी जो मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी और मैंने खून को ऐसे बहते देखा जैसे किसी नल से निकल रहा हो। मेरे हाथों में, मेमना अपनी पूरी ताकत से छटपटा रहा था। एक पल के लिए मुझे लगा कि मेरी पकड़ छूट जाएगी। 'छोड़ो मत,' अर्बाब चिल्लाया। अर्बाब के गुस्से के डर से, मेरी ताकत बकरी की ताकत पर भारी पड़ गई। अगले ही पल, अर्बाब ने अपनी जेब से स्प्रे निकाला और घाव पर निशाना साधा। तब भी बकरी अपनी पूरी जान से रोती रही। लेकिन खून बहना, मानो जादू से, अचानक रुक गया। थोड़ी देर बाद, बकरी का छटपटाता शरीर शांत हो गया। अरबाब ने मुझे इशारा किया कि मैं इसे मसारा में वापस ले जाऊं। जब मैंने इसे मसारा के द्वार पर छोड़ा, तो यह उस जंगली सूअर की तरह झुंड में घुस गया जिस पर गोली चलाई गई हो।

अफसोस! एक बकरे ने अपना पौरुष खो दिया था। वह पौरुष उस बकरे के लिए मांस का एक छोटा टुकड़ा और थोड़ा सा खून मात्र था। मैंने देखा था कि सभी बकरों को अपनी पौरुष शक्ति के साथ जीने की अनुमति नहीं थी। केवल कुछ ही भाग्यशाली थे। एक निश्चित उम्र के बाद, उन्हें बकरियों के बीच रखा जाता था। वे अपनी इच्छा अनुसार संभोग कर सकते थे और सभी पुरुष सुखों का आनंद ले सकते थे। बाकी बकरों को बधिया कर दिया जाता था और उन्हें नपुंसक बना दिया जाता था। उन्हें कसाईखानों में भेजा जाता था। मैंने देखा था कि बधिया किए गए बकरे तेजी से बढ़ते हैं, लेकिन मुझे यह एहसास नहीं था कि बधियाकरण इतना क्रूर होता है।

अरबाब ने एक और बकरी की ओर इशारा करते हुए मुझे उसे लाने का आदेश दिया। मैं बाड़े में गया और उसे पकड़ लिया। अरबाब को हर बकरी की उम्र और उनके नरत्व को नष्ट करने का समय पता था—कुछ का पहले महीने में, कुछ का दो महीने की उम्र में। नरत्व मापकर अरबाब यह पता लगा लेते थे कि कोई बकरी स्वस्थ और चुस्त बच्चे पैदा कर पाएगी या नहीं, जो बड़े होकर भरपूर दूध देंगे। इसी आधार पर यह

निर्णय लिया जाता था कि बकरी को नरत्व बनाए रखने दिया जाए या उसे बधिया कर दिया जाए।
मैं उन बकरियों को लाता रहा जिनकी ओर उसने इशारा किया था। जैसे कोई अपने नाखून काट रहा हो, वैसे ही अरबाब लापरवाही से उनकी मर्दानगी को काटता चला गया। मेरा दिल कांप उठा जब उसने पाँच-छह बकरियों को काटने के बाद उनमें से एक की ओर इशारा किया। वह हाथ मेरे नबील की ओर इशारा कर रहा था! मैं चौंक गया! मेरा नबील? तुम, जिसके बारे में मैंने आशा की थी कि तुम खुशी से बड़े होगे! मेरा बेटा? नहीं, मैं तुम्हें उसकी छुरी के हवाले नहीं कर सकता। मैं नहीं कर सकता था। मैंने उसे बकरियों के बीच धकेल दिया और दूसरी बकरी को पकड़ लिया जैसे कि अरबाब ने उसी की ओर इशारा किया हो। लेकिन अरबाब की आँखें गिद्ध जैसी थीं—हालाँकि वह तंबू के अंदर आराम से लेटा था, फिर भी वह अपनी हर बकरी को हथेली की रेखाओं की तरह जानता था। 'वह नहीं, दूसरी वाली,' अरबाब का हाथ नबील की ओर बढ़ा। मैं उसे पकड़ नहीं सका। मैं उसे इतना नुकसान नहीं पहुँचा सकता था। फिर मैंने पास ही खड़ी एक और बकरी के पैर पकड़ लिए।
'हिमार!' अरबाब चिल्लाया। अरबाब का सब्र टूट चुका था। मुझे पता था कि अब मेरी पीठ पर ज़ोरदार लात पड़ेगी। फिर भी, तीसरी बार भी मैंने एक लात झेल ली। अरबाब मुझ पर झपटा और मेरी पीठ पर लात मारी। मैं एक तरफ गिर पड़ा। गुस्से में अरबाब ने नबील के पैर पकड़े और उसे घसीटकर बाहर ले गया। मैं उठा और अरबाब के पैर छुए। हे अरबाब, कृपा करके इसे बकरा बनने दो। मुझे इसकी ज़रूरत है। मैं इसे कसाईखाने नहीं भेजना चाहता। इसे मेरे साथ यहीं रहने दो। मैंने अपनी सभी भाषाओं में उनसे विनती की।
'हिमार!' अरबाब ने मेरे सिर पर प्रहार किया। 'मैं आदर्श बकरों को पहचान सकता हूँ। केवल उन्हीं के बच्चे बलवान होते हैं। केवल वही तेज़ी से बढ़ते हैं। तुम्हें क्या पता? इसे जल्द ही कसाईखाने ले जाना होगा।' बिना किसी दया के, अरबाब नबील को बाहर घसीटकर ले गया और मुझे उसके पिछले पैर उठाने का आदेश दिया। फिर, पलक झपकते ही, मेरे नबील का अंडकोष भी अन्य बकरियों की तरह खून से लथपथ ज़मीन पर गिर पड़ा।
जब नबील को काटा गया, तो उसकी चीख! आज भी वो मेरे दिल में गूंजती है। ऐसा लगा जैसे किसी पत्थर से मेरा दिल छलनी हो रहा हो। मुझे बस इतना याद है कि नबील

रोता हुआ मसारा की तरफ भागा। फिर जब मैं जागा, तो भूसे के ढेर पर लेटा हुआ था। दोपहर हो चुकी थी। अरबाब ने मुझे थोड़ा पानी पिलाया और फिर मुझे अपने रोज़मर्रा के काम करने भेज दिया। जिस दिन नबील ने अपनी मर्दानगी खोई, उसी दिन मैंने भी अपनी मर्दानगी खो दी। मुझे आज तक यह रहस्य समझ नहीं आया है कि मेरी मर्दानगी एक बकरी की तरह कैसे गायब हो गई!

अठारह

आपको लगेगा कि बकरियों को सैर पर ले जाना मुश्किल नहीं है। हमें बस समय-समय पर उन्हें प्यार से रास्ता दिखाना होता है। फिल्मों में आपने उन्हें झुंड में, एक-दूसरे के करीब चलते देखा होगा। उनका एक नेता होता है। नेता जहाँ जाता है, बाकी बकरियाँ उसके पीछे-पीछे चलती हैं। जो बकरी हमसे अच्छी तरह परिचित होती है, उसे नेता बना दिया जाता है और फिर बाकी बकरियों और मेमनों का नेतृत्व करना उसी की जिम्मेदारी होती है। मैंने मसारा में तीन मुखिया बकरियों के नाम ललिता, रागिनी और पद्मिनी रखे हैं।

लेकिन असलियत में बकरियों को संभालना लगभग नामुमकिन है। वे हर दिशा में दौड़ती और उछलती हैं। अगर एक बाईं ओर जाती, तो दूसरी दाईं ओर चली जाती। मुझे एक साथ लगभग पचास से सौ बकरियों को संभालना पड़ता था। इन बकरियों का अपना ही दिमाग होता है। मुझे लगता है मैंने पहले भी इनके व्यवहार के बारे में बताया था। हालांकि ये भेड़ों की तरह लगभग छह हज़ार सालों से इंसानों के साथ रह रही हैं, लेकिन किसी और जानवर को पालतू बनाने में हमें इतनी मुश्किल नहीं हुई, और हम अभी तक पूरी तरह सफल नहीं हुए हैं। इनमें नर बकरियों को काबू करना नामुमकिन था। एक पूरी तरह से विकसित नर बकरी लगभग मेरे जितनी बड़ी होती है। जब उन्हें मादा बकरियों के बीच संभोग के लिए छोड़ा जाता है, तो वे पूरी तरह बेकाबू हो जाती हैं। गर्मी में नर बकरी की फुर्ती—हर चीज को रौंदते हुए दौड़ना—देखने लायक नजारा होता है।

एक दिन, उन्हें टहलाते समय, मैंने उनमें से एक को पीछे से एक बार धक्का दिया। वह गुस्से में हाथी की तरह पलट गया और पूरी ताकत से गुर्राया। मैंने उसकी नाक से धुआँ निकलते देखा। अगले ही पल, वह मुझ पर झपटा और मुझे बचने का मौका दिए बिना, सीधे मेरी छाती पर वार किया। ऐसा लगा जैसे किसी टन के हथौड़े ने मुझे मारा हो।

मुझे बस इतना याद है कि मैं लगभग दस मीटर दूर जा गिरा, जैसे किसी हिंदी फिल्म में हीरो के हाथों विलेन को चोट लगती है। मैं बेहोश हो गया और पता नहीं कितनी देर तक वहीं पड़ा रहा। फिर, जब मैंने आँखें खोलीं, तो मेरे सामने अर्बाब खड़ा था। अर्बाब ने बस मेरे चेहरे पर थोड़ा गर्म पानी डाला। फिर उसने मुझे 'हिमार' कहकर पुकारा और कुछ चिल्लाया।

किसी तरह मैं उठ खड़ा हुआ और चारों ओर देखा—बकरियाँ लगभग पाँच किलोमीटर के दायरे में बिखरी हुई थीं। मुझे अपने बाएँ हाथ में भयानक दर्द महसूस हुआ। असहनीय दर्द। हाथ सूजा हुआ था। मैंने अरबाब से कहा कि मेरा हाथ टूटा हुआ सा लग रहा है। उसने अपनी बेल्ट उतारी और मुझे मारा, और चिल्लाकर कहा कि जल्दी से दौड़कर सारी बकरियाँ ले आओ। अरबाब ने मुझे चेतावनी दी कि अगर उनमें से एक भी बकरी खो गई तो मेरी जान चली जाएगी।

मैं दर्द से कराहते हाथ को ढोते हुए रेगिस्तान में भागा। बकरियाँ अपनी अचानक मिली आज़ादी का भरपूर आनंद ले रही थीं, अपने सारे जंगली स्वभाव को दिखा रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे गुलामी में जी रहा कोई देश अचानक विद्रोह करने के लिए जाग उठा हो। पूरी तरह से अराजकता फैली हुई थी। जब मैं किसी तरह एक बकरी को एक तरफ लाता, तो दूसरी वहाँ पहले से मौजूद बकरी भाग जाती। जब मैं दूसरी के पीछे भागता, तो पहली फिर से भटक जाती। कुछ कोशिशों के बाद मुझे एहसास हुआ कि उन सभी को एक साथ पकड़ना नामुमकिन है। मैं जितनी बकरियों को पकड़ पाता, उन्हें लेकर मसारा की तरफ दौड़ने लगा, उन्हें बंद करके रेगिस्तान की तरफ वापस भागा। फिर, पाँच-दस बकरियों को पकड़कर मैं फिर से मसारा लौटता। पहली बकरी मसारा से लगभग दो किलोमीटर दूर होती, और बाकी लगभग पाँच किलोमीटर दूर बिखरी होतीं। मुझे नहीं पता कि मुझे मसारा और रेगिस्तान के बीच की दूरी कितनी बार तय करनी पड़ी। मुझे बस इतना याद है कि मैं बुरी तरह थक गया था। और जब मैं पानी पीने के लिए रुका, तो अरबाब ने मुझे ज़ोर से मारा, मुझसे पानी का प्याला छीन लिया और फेंक दिया। मैं प्यास से बेहाल, हांफता हुआ, जीभ सूखते हुए फिर से रेगिस्तान में दौड़ पड़ा।

पीड़ा से आकाश की ओर देखते हुए, मैं उस पूरे अभ्यास के दौरान अल्लाह का नाम बुदबुदाती रही। क्षितिज तक मुझे बकरियाँ बिखरी हुई दिखाई दे रही थीं। मैं वहाँ कैसे पहुँचूँगी? मेरे पैर सूजे हुए थे, हाथों में असहनीय दर्द था और प्यास बहुत तेज़ थी।

चीखते-चिल्लाते मैं बकरियों के पीछे भागी। हवा का नामोनिशान भी नहीं था, आकाश में सन्नाटा पसरा था और सूरज चकाचौंध कर रहा था।
दोपहर के समय मैं सारी बकरियों को वापस मसारा में ले आया। बाद में, मैं अक्सर सोचता था कि इतनी भीषण गर्मी में बिना पानी की एक बूंद और बिना आराम किए मैं इतने लंबे समय तक कैसे जीवित रहा। उस दौर में मेरी मदद करने वाले दो कारक थे जीने की मेरी इच्छा और अल्लाह पर मेरा अटूट विश्वास। आखिरी बकरी को अंदर लाने के बाद, मैं पूरी तरह थककर चारपाई पर गिर पड़ा।
अरबाब आकर मेरे पास बैठ गया और मेरे मुँह में थोड़ा पानी डाला। 'पानी... पानी...' मैं बार-बार बुदबुदा रहा था। अपनी अर्धचेतना की अवस्था में भी मैंने अरबाब को यह कहते सुना कि तुम लोग फिजूलखर्ची करने वाले हो, ऐसे फिजूलखर्ची करने वाले जिन्हें पानी का सही इस्तेमाल करना नहीं आता। फिर मैं बेहोश हो गया।
जब मैं उठा तब तक रात हो चुकी थी। मेरा हाथ और भी सूज गया था और दर्द असहनीय था। मुझे यकीन था कि वह टूट गया है। बकरे के ज़ोर-ज़ोर से चलने से मेरी छाती में दर्द हो रहा था। प्यास से मेरा गला फटने वाला था। मैं लड़खड़ाते हुए पानी की टंकी तक गया और जी भरकर पानी पिया। फिर मैं अरबाब के तंबू में गया। इतनी देर तक सोने के लिए मुझे डांटते हुए उन्होंने दो-तीन खुबू मेरी तरफ फेंके। मुझे बहुत भूख लगी थी। मैंने उन्हें पानी में डुबोकर लालच से खा लिया। दर्द के मारे उस रात मुझे एक पल भी नींद नहीं आई। मैं कई बार रोते हुए अरबाब के तंबू में गया। मैंने उनसे मुझे किसी अस्पताल ले जाने की गुहार लगाई। लेकिन अरबाब ने मेरी बात नहीं सुनी। जैसे ही सुबह हुई, वह एक बर्तन लेकर मेरी चारपाई पर आए और मुझसे बकरियों का दूध दुहने को कहा। मैंने उन्हें अपना हाथ दिखाया। जवाब में मुझे सिर पर एक थप्पड़ मिला।
मेरे सीने का दर्द कम नहीं हुआ था और तब तक मेरा हाथ सूज चुका था। मैं उसी हालत में लंगड़ाते हुए बकरीघर तक गई। मैं एक हाथ से बकरियों का दूध कैसे दुह सकती थी? मेरी आदत थी कि मैं बर्तन को ज़मीन पर रखकर दोनों हाथों से दूध दुहती थी; शरारती बकरियों को पीठ सहलाने की ज़रूरत पड़ती थी। मैं एक हाथ से क्या कर सकती थी? अगर कोई बकरी उछलती, तो वो मेरे द्वारा इकट्ठा किए गए थोड़े से दूध को लात मारकर गिरा देती। अल्लाह से दुआ मांगते हुए, मैं हिम्मत करके बकरीघर में दाखिल हुई। सबसे पहली बकरी जो मुझे दिखी, वो वही थी जिसका नाम मैंने

पोचक्कारी रमानी रखा था। मैंने उसे ये नाम कैसे दिया, ये कहानी मैं आपको बाद में बताऊंगी।
मैंने रमानी की आँखों में देखा और उससे कहा, 'रमानी, मैं अपना हाथ बिल्कुल नहीं हिला पा रही हूँ। ये तुम्हारे किसी साथी की करतूत है। लेकिन अर्बाब को सुबह दूध पीना ही है। उसे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि मेरा हाथ टूटा हुआ है या आसमान गिर गया है। उसे दूध पीना ही है, और मुझे उसे दूध पिलाना ही होगा। अगर तुम सहयोग करोगी, तो मैं अर्बाब की मार से बच जाऊँगी। आज मेरा भाग्य तुम्हारे हाथों में है।'
सच कहूँ तो, मुझे अक्सर ऐसा लगता है कि बकरियाँ कुछ इंसानों से ज़्यादा समझदार होती हैं। खैर, उस दिन रमानी मेरे लिए चुपचाप खड़ी रही। किसी तरह मैंने बकरियों के लिए पर्याप्त दूध इकट्ठा किया और उसके तंबू के सामने रख दिया। मैंने मन ही मन उसे कोसते हुए कहा: सूअर, पी लो, जी भर के पी लो!
दूध पीने के बाद, अर्बाब मेरे पास आया और बकरियों के बच्चों के लिए जल्दी से दूध दुहने को कहा। मैं ऐसा करने में असमर्थ थी। मैंने अर्बाब से साफ-साफ कहा, 'मैं नहीं कर सकती! नहीं कर सकती! नहीं कर सकती!' मुझे लगता है कि तब तक मैं चीख रही थी। अर्बाब ने मेरा यह रूप पहली बार देखा था। वह सचमुच हैरान रह गया। मैं जाकर चारपाई पर औंधे मुंह लेट गई, पीठ पर कोड़े पड़ने की उम्मीद में। ज़्यादा से ज़्यादा अर्बाब मुझे मार डालेगा। उसे मारने दो। यह यातना समाप्त हो जाएगी। जो मृत्यु को स्वीकार करने को तैयार है, उसे क्या डर रह जाता है? अल्लाह, मैंने तुझसे और तेरे कानून से वादा किया था कि मैं कभी आत्महत्या नहीं करूंगी। मुझे उम्मीद है कि अगर मैं खुद को अर्बाब के हाथों मरने दूं, तो तुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। मेरे नसीब में मेरे बेटे को देखना नहीं लिखा है। कोई बात नहीं, मुझे दुख नहीं है। मुझे अर्बाब के हाथों मरने दो। मैं अब और यह पीड़ा सहन नहीं कर सकती।
लेकिन जैसा मैंने सोचा था, अरबाब मेरे पास नहीं आया। बकरियाँ पहले से ही बेचैन हो गई थीं और उछल-कूद कर रही थीं। उन्हें एक तय दिनचर्या की आदत थी। अगर उनकी दिनचर्या बिगड़ती तो वे बेचैन हो जातीं। भाड़ में जाए सब कुछ। मुझे क्या फर्क पड़ता है? मैं चुपचाप लेटा रहा।
जब बड़े अरबाब आए, तो मैं उठी नहीं। दोनों अरबाब आपस में बातें कर रहे थे। उसके बाद दिन के अरबाब मेरे पास आए, मेरा हाथ पकड़ा और उसकी जाँच की।

उन्होंने सूजन पर मालिश की। दर्द से बेहाल होकर मैं ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाई और अरबाब से मुझे अस्पताल ले जाने की गुहार लगाई। लेकिन वे अपनी गाड़ी लेकर कहीं चले गए, मानो उन्होंने मेरी बात सुनी ही न हो। मैं पलंग पर लेट गई। कुछ देर बाद वे हाथ में कुछ जड़ी-बूटियाँ लेकर लौटे। उन्होंने उन्हें एक बर्तन में मसलकर सूजन पर लगाया, और फिर पुराने ज़माने की तरह कुछ डंडे लेकर कपड़े की पट्टी से मेरे हाथ पर कसकर बाँध दिए। मैंने उन्हें अपनी छाती की सूजन दिखाई। वहाँ भी उन्होंने जड़ी-बूटियाँ लगाईं। इस पूरे कष्ट के दौरान मैं अरबाब से मुझे अस्पताल ले जाने की गुहार लगाती रही। अरबाब ने बस इतना ही कहा, 'कोई बात नहीं, तुम जल्दी ठीक हो जाओगी।' मुझे उन पर भरोसा नहीं था। मुझे डर था कि मेरा हाथ और खराब हो जाएगा, सड़ जाएगा और आखिरकार उसे काटना पड़ेगा।

अरबाब मेरे लिए दो-तीन खुबू लाया। मैंने उन्हें पानी में डुबोकर निगल लिया। 'काफी देर हो चुकी है, जल्दी से बकरियों को टहलने ले जाओ,' अरबाब ने आदेश दिया। मैं मना नहीं कर सका। मैं अपना टूटा हुआ हाथ पकड़े हुए मसारा की ओर भागा।

दोपहर होते-होते, मुझे दर्द धीरे-धीरे कम होता हुआ महसूस होने लगा। रात तक तो यह लगभग पूरी तरह गायब हो गया। कुछ ही दिनों में, छाती और हाथ दोनों की सूजन गायब हो गई। लगभग दस दिन बाद पट्टी हटा दी गई। उन दिनों में, मैं बकरियों का दूध दुहता रहा और उन्हें सैर पर ले जाता रहा, सिर्फ एक ही अच्छे हाथ से। मुझे आश्चर्य हुआ कि उस दौरान बकरियों ने कभी मुझे लात नहीं मारी, मुझ पर हमला नहीं किया, और न ही दूध का बर्तन गिराया।

शायद बकरियाँ मुझे उन बकरियों से कहीं बेहतर समझती थीं। उन्हें यह ज़रूर पता होगा कि अगर वे मुझ पर हमला भी कर दें तो भी मैं उन्हें कभी नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। फिर भी, मैंने बकरियों से सुरक्षित दूरी बनाए रखी। अगर वे मेरी तरफ आतीं तो मैं उनसे बच निकलता या अपनी लाठी से अपनी रक्षा करता। उस भयानक घटना के बाद मुझ पर कभी किसी बकरी ने हमला नहीं किया।

मैं आपको एक ऐसी बात बताना चाहता हूँ जो मैंने इस कहानी में अब तक नहीं बताई है। क्या आप विश्वास करेंगे अगर मैं कहूँ कि मेरा बचपन का सपना बकरी चराने वाला बनना था? शायद, यह इच्छा फिल्म 'रामनन' देखने के बाद पैदा हुई थी। मेरे उम्माह को 'रामनन' बहुत पसंद थी। एक जगह से दूसरी जगह घूमना। बकरियों के झुंड के साथ मैदानों और पहाड़ियों पर टहलना। हर दिन एक नई जगह पर अपना तम्बू

लगाना। सर्दियों की रातों में आग के पास बैठकर बकरियों की रखवाली करना। मेरे लिए चरवाहा बनना सपनों जैसा था।
जब मुझे आखिरकार चरवाहे का जीवन जीने का मौका मिला, तो मुझे एहसास हुआ कि यह मेरे सपनों से कितना अलग था। हमें अपरिचित चीजों और दूर से देखने पर ही अच्छी लगने वाली चीजों के बारे में सपने नहीं देखने चाहिए। जब ऐसे सपने हकीकत बन जाते हैं, तो उन्हें स्वीकार करना अक्सर नामुमकिन हो जाता है।

उन्नीस

मैं एक ऐसे अनजान ग्रह पर रहता था जहाँ कुछ बकरियाँ, मेरे दादाजी और मैं रहते थे। मेरे जीवन की एकरसता में बस दो बार पानी का ट्रक, हफ्ते में एक बार भूसे का ट्रक और महीने में एक बार गेहूँ का ट्रेलर आता था। ये वाहन ही मेरे लिए बाहरी दुनिया से जुड़ने का एकमात्र ज़रिया थे। इनके ड्राइवर आमतौर पर पाकिस्तान के पठान होते थे। अगर मैं उनसे संपर्क बना लेता, तो मैं बाहरी दुनिया से जुड़ सकता था। कम से कम मैं उन्हें बता सकता था कि मेरा अस्तित्व है। वे यहाँ से निकलने का मेरा ज़रिया बन सकते थे। मेरे मन के किसी कोने में एक धुंधली सी उम्मीद थी कि मुझे कभी न कभी यहाँ से निकल जाने का मौका मिलेगा। लेकिन दादाजी मुझे उनके आने पर सुबह-सुबह रेगिस्तान भेज देते थे और हिदायत देते थे कि उनके जाने के बाद ही बकरियों को लेकर लौटना। ज़्यादातर दिनों में मुझे टैंक भरने और भूसे के गट्ठे व गेहूँ की बोरियाँ उतारने में भी मदद नहीं करनी पड़ती थी। फिर भी, जब भी वे वाहन रेगिस्तान पहुँचते, मेरा दिल असीम खुशी से झूम उठता था। मैं बेहद खुश हो जाता, मानो कोई अपना हमसे मिलने आया हो। मैं बकरियों से पहले से ज़्यादा बातें करता। लेकिन जब धूल उड़ाती वो गाड़ियाँ ओझल हो जातीं, तो मुझे ऐसा लगता जैसे पूरी दुनिया मुझसे दूर भाग गई हो। फिर एक असहनीय थकान मुझ पर छा जाती।
एक दिन अचानक एक ट्रेलर बिना किसी सहायक के सामान उतारने के लिए आ गया। अरबाब ने मुझे रेगिस्तान से वापस बुलाया। ड्राइवर पाकिस्तानी था। बहुत समय बाद मैंने एक ऐसे व्यक्ति को करीब से देखा जो मेरे दोनों अरबाबों में से कोई नहीं था। चूंकि मुझे सामान्य मानवीय गंधों से वंचित रखा गया था, इसलिए मुझे लगा कि उसके

पसीने में भी एक गंध थी। एक आदमी को देखकर इतनी खुशी हुई कि मैंने उसे एक बार छू भी लिया। मुझे संतुष्टि की एक सिहरन महसूस हुई।
सामान उतारते समय, मैंने उसे अपनी सारी पीड़ा उन सभी भाषाओं में बताई जो मुझे आती थीं और उससे विनती की कि वह मुझे इस नरक से किसी तरह बचा ले। लेकिन उसके चेहरे पर मुझे केवल निर्मम भाव ही दिखाई दिया। उसने मेरी ओर देखा तक नहीं। मेरा दिल कितना दुख गया! जब मालिक ने मुझे ट्रेलर में बुलाया, तो मैं बकरियों को छोड़कर बड़ी उम्मीद के साथ उसके पास दौड़ी थी। जीवन के प्रकाश की ओर एक आशा भरी दौड़। लेकिन ड्राइवर की ठंडी निगाहों ने मेरी सारी उम्मीदें तोड़ दीं। जब भी वह मेरे सिर पर भूसे और घास के गट्ठे रखता, मैं उसे दयनीय निगाहों से देखती और किसी इशारे से उसका ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश करती। मैंने उससे मुझे बचाने की भीख मांगी। एक बार तो मैंने जानबूझकर भूसे का गट्ठा गिरा दिया और झुककर उसके पैर छुए। तब भी उसने मेरी ओर नहीं देखा। मुझे बहुत दुख हुआ। मेरा दिल टूट गया।
सामान उतारने के बाद, पाकिस्तानी बिना मेरी तरफ मुस्कुराए ही गाड़ी चलाकर चला गया। मेरी उम्मीदें टूट गईं। मैंने उसे कितना कोसा! दुनिया में कोई भी अजनबी को इस तरह कोसता या उससे इतनी नफरत नहीं करता। अपना गुस्सा थोड़ा कम करने के लिए, मैं बकरियों को इकट्ठा करने के लिए रेगिस्तान की ओर वापस जाते समय अपनी छाती पर दो बार हाथ मारा।
आज मैं उस ड्राइवर की लाचारी समझ सकता हूँ, जो अरबाब को सालों से जानता होगा। पता नहीं अरबाब ने मुझसे बात करने की कोशिश की होती तो क्या किया होता। एक बार, जब गेहूँ के ट्रेलर के ड्राइवर ने मुझसे बात करने की कोशिश की, तो अरबाब बंदूक लेकर गाड़ी से कूद पड़ा। मुझे याद है, अरबाब ने पानी के ट्रक के ड्राइवर को मुझसे बात करने की कोशिश करने पर राइफल के बट से गिरा दिया था। मेरे जैसे कितने लोग इस मुसीबत में फँस चुके होंगे? शायद उनमें से किसी एक को बचाने की कोशिश का दुखद अंजाम उस पाकिस्तानी के मन में ताजा रहा होगा। शायद वह अपनी गाड़ी में बैठा मुझे इतनी बेरहमी से छोड़ने पर फूट-फूट कर रो रहा होगा। अगर ऐसा नहीं भी था, तो भी मैंने यही मानना बेहतर समझा। मैंने अपने दिल को यही यकीन दिलाने की कोशिश की। बस इसी तरह मैं अपने कई दुखों से पार पा सका। रहमदिल अल्लाह, मुझे इन कठोर दिनों से गुजरना ही होगा जो आपने मेरे लिए

तय किए हैं। उस निर्दोष आदमी से नफरत करने और उसे कोसने के लिए मुझे माफ कर दीजिए।

शुरू में, मसारा में हर चीज़ से घिनौनी बदबू आ रही थी। बकरियों के मूत्र की गंध, उनके गोबर की दुर्गंध, और मूत्र से भीगी घास और भूसे की बदबू। अगर मैंने इससे पहले कभी ऐसी बदबू महसूस की थी, तो वह सर्कस के तंबू में थी।
बकरियों के दूध में भी वही दुर्गंध थी। जब भी मैं दूध में खुबू डुबोकर खाती, वह गंध मेरी नाक में चुभती। शुरुआती दिनों में कितनी बार उल्टी हुई! लेकिन धीरे-धीरे वह दुर्गंध कम होती गई। या यूं कहूँ कि मैं उसे भूल गई। बाद में, कई बार कोशिश करने के बावजूद, मैं उसे फिर कभी महसूस नहीं कर पाई। वह दुर्गंध मेरे अंदर इतनी घुलमिल गई थी कि मुझे विश्वास ही नहीं होता था कि कभी ऐसी दुर्गंध भी होती थी। इतना ही नहीं, मैं बकरियों से आने वाली कई तरह की गंधों में फर्क कर सकती थी। बकरियों की एक खास गंध होती थी और भेड़ों की दूसरी। सैकड़ों तरह की भेड़ें थीं, हर एक की अपनी अलग गंध। गर्भवती बकरियों की एक अलग गंध होती थी; बच्चे को जन्म देने वाली बकरियों की अलग गंध होती थी। उस गंध के आधार पर, मैं बकरी के बच्चे के जन्म की तारीख का भी अनुमान लगा सकती थी। नवजात मेमनों की गंध बड़े मेमनों से अलग होती थी। मद में आई बकरियों की गंध अलग होती थी। ऊंटों की गंध बाकी सभी से अलग थी। ऊंट दो प्रकार के होते हैं—एक कूबड़ वाले और दो कूबड़ वाले। हर एक की गंध अलग थी। उस मसारा में केवल एक ही जानवर ऐसा था जिसकी कोई गंध नहीं थी, और वह मैं ही था।
एक दिन, मुझे सैनू को पत्र लिखने की तीव्र इच्छा हुई। मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि वह पत्र उस तक कैसे पहुँचेगा। मुझे लिखना ही था। लिखना ही था। खूबूस और पानी के दोपहर के भोजन के बाद मिले थोड़े से अंतराल में, मैंने पलंग के नीचे से अपना बैग निकाला। उसमें बॉम्बे से लाया हुआ पत्र पैड और कलम थी। मैंने उन्हें बाहर निकाला। बहुत कोशिश करने के बाद कलम से हल्की-हल्की लिखावट शुरू हुई। मैं पहली बार पत्र लिख रही थी। मुझे पता नहीं था कि पत्र कैसे लिखते हैं। फिर भी, मैंने अपने सारे विचार समेटे और लिखना शुरू किया।
मेरी प्यारी सैनू,

मैं सुरक्षित पहुँच गई हूँ। काम में इतनी व्यस्त थी कि चिट्ठी भी नहीं लिख पाई। जानती हूँ आप चिंतित होंगे। चिंता मत कीजिए। आपका घर यहाँ आराम से है। मैं दूध और ऊन उत्पादन करने वाली एक बड़ी कंपनी में काम करती हूँ। यह एक अच्छी नौकरी है। हमें कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। मशीनें सब कुछ संभाल लेती हैं। मैं यहाँ के काम की देखरेख करती हूँ। मेरे दादाजी मुझे बहुत पसंद करते हैं। उन्हें मेरा काम अच्छा लगता है और वे अक्सर मुझे उपहार देते हैं। मैं एक बहुत ही आलीशान जगह में रहती हूँ। अपने पलंग पर बैठकर मैं अपने आस-पास की हर चीज़ देख सकती हूँ। यह बहुत सुंदर है। आह, खाना! दादाजी मेरे लिए कितनी नई और अनसुनी चीज़ें लाते हैं! मैंने चिकन करी और मटन मसाला के साथ खूबूस और एक गिलास शुद्ध दूध पीने के बाद यह चिट्ठी लिखना शुरू किया। सच में, मुझे आश्चर्य होता है कि क्या मैं इन कुछ दिनों में ही मोटी हो गई हूँ! अब दोपहर हो गई है - आराम का समय। मुझे कुछ देर बाद काम पर वापस जाना है। तब तक मैं इस सुहावनी हवा में सो सकती हूँ।
मेरे साथ यहाँ हमारे कुछ स्थानीय लोग भी हैं: रवुथर, राघवन, विजयन, पोकर, इत्यादि।
मैं उनसे ज़्यादा मेलजोल नहीं रखती—अरबाब को यह पसंद नहीं है। अरबाब की एक बेटी है जो हूरी है। हर शाम, मैं और वह टहलने जाते हैं। वह ज़िद करती है कि मैं उसके साथ चलूँ। उसका नाम मरियमुना है।
ये मेरी खबर है। आशा है आप और उम्माह ठीक होंगे।
समय मिलने पर मैं दोबारा लिखूंगा।
आपका अपना इक्का,
नजीब
मैंने कागज़ को मोड़ दिया। आँखें बंद कर लीं। कुछ देर तक रोती रही। सच्चाई उस पत्र में नहीं, बल्कि मेरे आँसुओं में थी। सच्चाई किसी ने नहीं पढ़ी।

बीस

एक शाम, जब मैं बकरियों के साथ टहल रहा था, मैंने देखा कि आकाश का पूर्वी कोना काला और बादलों से घिर गया है। मैंने पिछले कुछ दिनों से रेगिस्तान का अवलोकन किया था। आमतौर पर ऋतुओं के परिवर्तन के साथ धूल भरी आंधी आती है। जब तक धूल भरी आंधी शांत होती, मौसम भी बदल चुका होता था। रेगिस्तान में सभी परिवर्तन

अचानक होते हैं; कुछ भी धीरे-धीरे नहीं होता। पिछला दिन बहुत गर्म हो सकता है, लेकिन अगले दिन ठंड लग सकती है; एक दिन कड़ाके की ठंड हो सकती है और अगले दिन चिलचिलाती गर्मी। एक पल आकाश धूल के एक कण से भी साफ होता है, लेकिन अगले ही पल धूल भरी आंधी उस पवित्रता को उड़ा ले जाती है। यह आंधी भी कुछ इसी तरह आई। पूरा दिन भीषण गर्मी थी और अचानक आकाश के एक कोने में काले बादलों का एक समूह दिखाई दिया। कुछ ही सेकंड में अंधेरा पूरे आकाश में फैल गया और धरती को ढक लिया। एक ठंडी हवा चली, जो मेरे मन और शरीर को चीर रही थी। मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे रेगिस्तान से निकालकर दक्षिणी ध्रुव पर फेंक दिया गया हो। मानो उन्माद में आकर, बकरियां इधर-उधर बेतरतीब ढंग से उछलने लगीं। मुझे भी कुछ ऐसा ही एहसास हुआ। मैं परमानंद से भर गया। बकरियों को वहीं छोड़कर, मैंने अपनी बाहें फैलाईं और उस ठंडी हवा में धीरे-धीरे चलने लगा।

जब अरबाब अपनी गाड़ी में आया और मुझे डांटा, तब जाकर मैंने बकरियों को इकट्ठा किया और मसारा लौट आया। जब तक मैं मसारा पहुँचा, हल्की-हल्की बारिश शुरू हो चुकी थी। जब पहली बूँद मुझ पर गिरी, तो मैं ऐसे तड़पा जैसे किसी ने मुझे छुरा घोंप दिया हो। मेरे हिसाब से आठ-दस महीने हो गए थे जब पानी की एक बूँद मेरी त्वचा को छूई थी। यह अनुभव बेहद दर्दनाक था। थोड़ी देर में बारिश तेज हो गई। और जैसे-जैसे हर बूँद मुझ पर गिरती गई, मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा शरीर छेदा जा रहा हो। उस असहनीय दर्द को सहन न कर पाने के कारण, मैं कंबल ओढ़ने के लिए भागा। और सिर्फ मैं ही नहीं, बकरियाँ भी परेशान हो गईं। वे अजीब सी आवाज निकालते हुए मिमियाने लगीं। आमतौर पर शांत रहने वाले ऊँट बारिश में भीगते हुए परेशान और दुखी लग रहे थे।

बारिश के साथ-साथ गरज और बिजली भी चमकने लगी। मुझे लगा कि बिजली गिरेगी और सारा मसारा जलकर राख हो जाएगा।

जब भी बारिश की एक बूँद मेरे सिर पर गिरती, मेरे बाल खड़े हो जाते और काँपने लगते। मेरा शरीर कभी जलता तो कभी काँपता। मेरा मन करता था कि बारिश में भीग जाऊँ और नहा लूँ। पर मैं बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। जब असहनीय हुआ तो मैं अरबाब के तम्बू की ओर भागा। वहाँ का नज़ारा! अरबाब एक कोने में डरपोक की तरह दुबका बैठा था। मुझे लगा कि अरबाब को दुनिया में सबसे ज़्यादा पानी से डर लगता था। मैंने आज तक इतना डरा हुआ आदमी कहीं नहीं देखा था। ऐसा लग रहा

था मानो अरबाब को अपने शरीर पर गिरते पानी से इतना डर लगता हो, मानो वह किसी जिन्न का स्पर्श हो। जैसे ही बारिश की बूँदें तम्बू में आईं, अरबाब और भी ज़्यादा कोने में दुबक गया। मुझे लगा कि अरबाब ने शायद अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी स्नान नहीं किया होगा।

एक अप्रत्याशित भाव से, अर्बाब ने मुझे तम्बू में बुलाया। जब मैंने ज़मीन पर बैठने की कोशिश की, तो उन्होंने मुझे पलंग पर बिठा दिया। एक डरे हुए बच्चे की तरह, उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और फिर बारिश से बचने के लिए कंबल के नीचे सरक गए। उस मुद्रा में बैठे-बैठे मेरा हाथ तकिए के नीचे किसी चीज़ से छू गया। सावधानी से, मैंने उसे फिर से महसूस करने की कोशिश की। यह अर्बाब की बंदूक थी! धीरे से, मैंने उसे बाहर निकाला। अर्बाब ने ध्यान नहीं दिया, वे 'या अल्लाह, या अल्लाह' का जाप कर बारिश रुकने की प्रार्थना कर रहे थे।

मुझ पर एक अजीब सी बेचैनी छा गई। बस निशाना साधो और ट्रिगर दबा दो, तुम बच जाओगे। बाहर एक गाड़ी खड़ी है, चाबी इग्निशन में लटकी हुई है। तुम रास्ता ढूंढकर किसी तरह भाग सकते हो। यही मौका है, यही वो पल है जो अल्लाह रहमदिल ने तुम्हें भागने के लिए दिया है। अगर तुमने इस पल का इस्तेमाल नहीं किया, तो शायद तुम्हें फिर कभी ऐसा मौका न मिले। तुम जानते हो कि ऐसे मौके बार-बार नहीं आते। कर डालो। किसी भी तरह इस नरक से बच निकलो। मेरा हाथ ट्रिगर की तरफ बढ़ ही गया।

अचानक अरबाब ज़ोर-ज़ोर से दुआ करने लगा, ‘हे अल्लाह... तूने हमें बचा लिया। अगर नजीब यहाँ न होता, तो मैं अब तक डर के मारे मर चुका होता।’ यह पहली बार था जब अरबाब ने मेरा नाम लिया। मुझे तो शक था कि वह मेरा नाम भी जानता है या नहीं। वह मुझे अक्सर ‘हिमार’ या ‘इंती’ कहकर पुकारता था। उस दुआ की आवाज़ ने मेरे दिल को नरम कर दिया। मदद के लिए गुहार लगा रहे एक कायर को मारने के बाद मुझे भागने का मन नहीं हुआ। मैंने बंदूक वापस उसकी जगह पर रख दी।

तंबू के अंदर मुझे बहुत गर्मी लग रही थी, इसलिए मैंने अपनी गीली चादर हटा दी और अर्बब का हाथ छोड़ दिया। मैंने गीले कपड़े फेंक दिए और हिम्मत करके बारिश में निकल पड़ी। शुरू में मेरा शरीर दर्द से तड़प रहा था, मानो कई तीर चुभ रहे हों। मैंने दर्द सहन किया और धीरे-धीरे कम हो गया। उसके बाद बारिश की हर बूँद मुझे तरोताज़ा कर रही थी। मुझे बारिश बहुत अच्छी लग रही थी। जैसे मेमने बारिश आने

का आभास कर लेते हैं, वैसे ही मैं उछल-कूद कर रही थी। और इस तरह, बहुत देर बाद, बारिश ने मुझे पूरी तरह से साफ़ कर दिया। धूल-मिट्टी धीरे-धीरे मेरे शरीर से बह गई।

रात में किसी समय, जब बारिश धीमी हुई, तो अर्बाब तंबू से बाहर भागा और अपनी गाड़ी में बैठकर चला गया। दूसरा अर्बाब उस रात नहीं आया। थोड़ी देर बाद, बारिश फिर तेज़ हो गई। पूरी रात मैं आज़ाद था, किसी के दबाव या नियंत्रण से मुक्त। उस रात मैं भाग सकता था। लेकिन मैं कहीं नहीं गया। हमेशा की तरह, मुझे नहीं पता था कि सुरक्षित जगह तक पहुँचने के लिए कहाँ जाना है। इसलिए मैंने भागने की इच्छा छोड़ दी। हम रोज़ाना भागने के कितने मौके गंवा देते हैं? हम वो लोग हैं जो अवसरों का सुनहरा प्याला हाथ में आते ही ठुकरा देते हैं।

उस रात, मुझे कुछ करने की तीव्र इच्छा हुई। कुछ ऐसा जो कैद को तोड़ दे, कुछ ऐसा जिससे अर्बाब नाराज़ हो जाए। अगर मैं कुछ नहीं करती, तो आज़ादी के उन अनमोल पलों का व्यर्थ ही आनंद होता। यह इच्छा तुरंत मेरे मन में जागी: मुझे पास के मसारा जाना ही होगा, मुझे अपने हकीम से मिलना ही होगा। जिस रात हम इस देश में आए थे, उसी रात उसे वहाँ छोड़ दिया गया था, और तब से उसका कोई अता-पता नहीं था। मुझे यह भी नहीं पता था कि वह ज़िंदा है या मर गया है या भाग गया है। बेचारा लड़का इतना पास था, फिर भी इतना दूर। तभी मुझे अपने सीमित जीवन का एहसास हुआ। मैंने एक-दो बार अर्बाब से हकीम के बारे में पूछा था, लेकिन उन्होंने मेरी बात अनसुनी कर दी, मानो उन्होंने सुना ही न हो। उस मूसलाधार बारिश में, मैं हकीम के मसारा की ओर चल पड़ी। डरते-डरते मैंने लोहे के ताले से बंद गेट पर दस्तक दी। मुझे डर था कि अगर अर्बाब मौजूद हुए तो मैं मुसीबत में पड़ जाऊंगी। फिर भी, मैंने आवाज़ लगाई। 'हकीम, हकीम, क्या तुम मुझे सुन सकते हो? मैं नजीब बोल रहा हूँ... वही नजीब जो तुम्हारे साथ खाड़ी में आया था... क्या तुम वहाँ हो?'

लगातार दस्तक देने के बावजूद कोई जवाब नहीं मिला। मैं निराश होकर वापस जाने ही वाला था कि तभी दूर कहीं एक परछाई हिलती हुई दिखाई दी। मैंने ज़ोर से पुकारा, 'हकीम! क्या तुम हो? मैं नजीब हूँ।' मुझे डर था कि बारिश की तेज़ आवाज़ में मेरी आवाज़ दब जाएगी।

लेकिन मैंने एक धुंधली आकृति को धीरे-धीरे मेरी ओर आते देखा।

'हकीम, क्या तुम हो? पास आओ, मैं नजीब हूँ।'

जब वह आकृति मेरे पास आई, तो मैंने उसे ध्यान से देखा। सांवला, दुबला-पतला, बिखरे बालों वाला, बदसूरत। एक और डरावनी आकृति। यह मेरा हकीम नहीं था। वह हकीम जैसा नहीं दिखता था। हकीम तो सुंदर था। गोरा, देखने में बेहद आकर्षक। अपनी उम्र के हिसाब से तगड़ा। मैंने तो उसे मजाक में यह सलाह भी दी थी कि वह मुंबई में ही रुक जाए और हिंदी फिल्मों में अपनी किस्मत आजमाए।
'क्या यहाँ हकीम नाम का कोई है? वो मेरा दोस्त है। वो मेरे साथ आया था। उसके बाद से मैंने उसे नहीं देखा। क्या आप उसे जानते हैं, या वो कहाँ है?' एक ही साँस में, मैंने उस डरावने व्यक्ति पर सवालों की बौछार कर दी, जैसे ही वो मेरी तरफ बढ़ा।
कुछ देर तक वह भयानक आकृति द्वार के दूसरी ओर से मुझे घूरती रही, मानो मैं किसी अजीब भाषा में बोल रही हूँ। फिर अचानक ही उसने अपना सिर द्वार से टकराया और रोने लगा। मैं डर गई। फिर सिसकियों के बीच से उसकी दिल दहला देने वाली आवाज़ निकली, 'मेरे नजीब इक्का।' तभी, तभी मैंने हकीम को पहचाना। घबराकर मैं समझ गई कि परिस्थितियाँ किसी इंसान का रूप इस कदर बदल सकती हैं कि उसे पहचानना मुश्किल हो जाता है। मैं समझ सकती थी कि उन्हीं परिस्थितियों ने मुझे भी पूरी तरह बदल दिया होगा। रेगिस्तान में आने के बाद से मैंने कभी आईने में नहीं देखा था। अगर देखा होता, तो शायद मैं खुद को भी न पहचान पाती।
वह अपनी उम्माह, उप्पा, रिश्तेदारों और अल्लाह को याद करके बहुत रोया। मेरे पास उसके सवालों के जवाब नहीं थे। मेरे पास बस इतनी ही हिम्मत थी कि मैं लोहे की रेलिंग के पार से उसके हाथों को अपने सीने से लगाकर उसके साथ रो सकूँ। रात आँसुओं में बह गई।

इक्कीस

दो दिन और बारिश हुई। बारिश रुकने तक मसाड़ा पूरी तरह से गंदा और कीचड़ से भरा हुआ था। बकरियों के गोबर, पेशाब, सड़ती हुई घास और भूसे की दुर्गंध हवा में फैली हुई थी। इसे साफ करने में मुझे तीन-चार दिन की कमरतोड़ मेहनत करनी पड़ी।
फिर सर्दियों के लिए रेगिस्तान के दरवाज़े खुल गए। सुबह के समय घना कोहरा और ठंड होती थी। जब मैं उठा और चारों ओर देखा, तो मुझे बस सर्दियों की सफ़ेद चादर

ही दिखाई दी। सब कुछ—मसारा, बकरियाँ, अर्बाब, तंबू—उस सफ़ेदी में गायब हो गया था। लगभग नौ बजे ही कोहरा छटा और सब कुछ फिर से दिखाई देने लगा—हालाँकि समय का अंदाज़ा लगाना मुश्किल है, क्योंकि मैं अकेला था और मुझे समय का कोई ज्ञान नहीं था—और इस तरह, मेरी सारी दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो गई। गर्मियों में दिन बहुत लंबे होते थे। सूरज बहुत जल्दी, लगभग तीन बजे उग जाता था, और रात आठ बजे तक रोशनी बनी रहती थी। लेकिन सर्दियों में, सूरज नौ बजे तक नहीं उगता था, और दोपहर के भोजन के तुरंत बाद रोशनी कम हो जाती थी। चार बजे तक पूरी तरह अंधेरा हो जाता था। इसलिए काम करने के घंटे सीमित हो जाते थे। सर्दियों में काम लगभग छह से सात घंटे में खत्म करना पड़ता था, वही काम जो गर्मियों में दस से पंद्रह घंटे में होता था। इसके अलावा, ठंड के कारण ठीक से काम करना मुश्किल था। दोपहर में भी कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। मैं पानी को छू भी नहीं पा रहा था। पानी से काम करने पर मेरे हाथ सुन्न हो जाते। उन्हीं दिनों मुझे पता चला कि ठंडा पानी भी त्वचा को जला सकता है। एक बार तो ठंडे पानी में कुछ देर रहने के बाद मेरी बाईं हथेली पर छाले पड़ गए, मानो गर्म पानी से जल गए हों। मैंने सुना है कि ध्रुवों पर ठंड होती है, लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि रेगिस्तान में इतनी ठंड कहां से आती है!

मेरे पास ठंड से बचने के लिए कोई खास कपड़े नहीं थे। मेरे पास बस वो अबाया थी, वो लंबा, बिना धुला कपड़ा जो मुझे पहले दिन अरबाब ने दिया था, जिसे मैंने कभी अपने शरीर से नहीं उतारा। मेरे पास बस वो ऊनी कंबल था जो उस डरावनी आकृति ने छोड़ दिया था। मैंने उसे सर्दियों के शुरुआती दिनों में पहना, लेकिन वो बहुत असुविधाजनक था। कोई कंबल पहने बकरियों के पीछे कैसे भाग सकता है और पानी या घास भरने के लिए मसारा में कैसे जा सकता है? मैंने उसे छोड़ दिया। उस एक कपड़े में ही ठंड में चलना मेरी आदत बन गई थी।

हालांकि मुझे इसका एहसास थोड़ा देर से हुआ, लेकिन एक ऐसी चीज थी जो मुझे कड़ाके की ठंड में भी गर्माहट देती थी: भेड़ें! उनके बीच चलना सचमुच सुकून देता था। जब ठंडी हवा सीटी बजाती हुई आती, तो मैं भेड़ों को अपने शरीर से लगा लेता। जब भी ठंड कंबल को भेदकर मेरे शरीर को जकड़ लेती, तो मैं मसारा (भेड़खाने) में जाकर भेड़ों को गले लगाकर लेट जाता। मैंने पूरी सर्दी भेड़ों के बीच एक भेड़ बनकर बिताई।

तेज़ हवा के अलावा, सर्दियों में मसारा में एक और बिन बुलाया मेहमान आ जाता था: मक्खियाँ। चारों तरफ मक्खियाँ ही मक्खियाँ थीं। जब भी खुबूस को बाहर निकाला जाता, उस पर हज़ारों मक्खियाँ बैठ जातीं। उन्हें भगाने के लिए हमेशा एक हाथ खाली रखना पड़ता था। अगर कोई मसारा में जाता, तो उसे ततैया की तरह उनकी भिनभिनाहट सुनाई देती। हालाँकि मुझे उन बदकिस्मत मक्खियों से नफ़रत थी, लेकिन मुझे लगने लगा कि उन्हें भी कहीं तो रहना ही होगा। और अगर उन्हें मसारा सबसे ज़्यादा पसंद है, तो रहने दो उन्हें!

उस सर्दी में, अगर मैं चाहता, तो हकीम के साथ घने कोहरे में छिपकर भाग सकता था। लेकिन बारिश की पहली रात को जो शंका मेरे मन में थी, उसी ने मुझे जकड़ लिया और भागने से रोक दिया। कहाँ जाऊँ? मुझे इस देश के बारे में कुछ नहीं पता था, यहाँ तक कि उस इलाके के बारे में भी नहीं जहाँ मैं था। किस दिशा में भागूँ—पूरब, दक्षिण, पश्चिम या उत्तर—ताकि बाहर निकलने का रास्ता मिल सके? यहाँ, यकीनन, मेरे पास पर्याप्त भोजन, पानी, कपड़े, सोने के लिए कोई उचित जगह, मजदूरी, सपने या आकांक्षाएँ नहीं थीं। लेकिन मेरे पास एक अनमोल चीज़ बची थी—मेरी ज़िंदगी! कम से कम मैंने उसे तो बचाए रखा था। अगर मैं किसी अनजान रेगिस्तान में भाग जाता, तो शायद मैं उसे भी खो देता। फिर अब तक मैंने जो कुछ सहा था, उसका क्या अर्थ रह जाता?
हर जेल में सुरक्षा का अपना एक अलग ही माहौल होता है। मुझे उस सुरक्षा के घेरे को तोड़ने की हिम्मत नहीं हुई। मैंने उचित अवसर का इंतज़ार करने का फैसला किया—जब मुझे पूरा यकीन हो जाए कि मैं किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया हूँ। क्या मेरा फैसला सही था? मुझे नहीं पता।

सर्दी की शुरुआत में ट्रकों से और भी भेड़ें मसारा में उतारी गई थीं। यह उनका प्रजनन काल था, गर्मी आने से पहले के छह महीने। दरअसल, भेड़ें ठंडे, पहाड़ी इलाकों में सबसे अच्छी तरह जीवित रहती हैं। उन्हें रेगिस्तान में पालना उनके साथ अन्याय है। रेगिस्तान बकरियों के लिए अनुकूल है क्योंकि वे उच्च तापमान सहन कर सकती हैं। अरबाब भेड़ों को इसलिए रखता था क्योंकि वह उनकी ऊन बेचकर मुनाफा कमाता

था। हालांकि गर्मी आने तक तीन-चौथाई भेड़ें बिक जाती थीं, लेकिन जो बची रहती थीं, वे कष्ट सहती थीं। जैसे-जैसे तापमान बढ़ता गया, वे अपनी ही ऊनी कोट में घुट-घुटकर मर गईं। मैंने यह कई बार देखा। अरबाब किसी भी मृत भेड़ को फेंकता नहीं था। वह उन्हें अपनी गाड़ी में घसीटकर ले जाता था। बाद में उन्हें किसी न किसी रेस्तरां में ताज़ा मटन के रूप में परोसा जाता होगा।

एक दिन, जब सर्दी खत्म होने वाली थी, दो आदमी भेड़ों की ऊन काटने आए। वे सूडानी थे और दोनों के चेहरे पर चौड़ी मुस्कान थी। लंबे समय बाद लोगों से मिलने की खुशी से मैं पिल्ले की तरह उनके पीछे-पीछे चलने लगा। लेकिन उन्हें मेरी बातें ज़्यादा समझ नहीं आईं और न ही मुझे उनकी बातें समझ आईं। लेकिन उनकी चौड़ी मुस्कान ही उनकी मेरी बातों को अनसमझे रहने का जरिया बनी रही।

उस साल सूडानी लोग ऊन काटने की मशीन और उसे चलाने के लिए जनरेटर लेकर आए; इससे पहले वे हाथ से चलने वाली कैंची का इस्तेमाल करते थे। जनरेटर और मशीन चालू करते ही अरबाब किसी परेशान जिन्न की तरह उछलने-कूदने लगा। उसका पहला डर यह था कि उसकी भेड़ें बिजली के झटके से मर जाएँगी। बेचारे लोगों को अरबाब को समझाने में बहुत मशक्कत करनी पड़ी कि मशीन से भेड़ों को बिजली का झटका नहीं लगेगा। अरबाब का दूसरा डर यह था कि मशीन ज़रूरत से ज़्यादा ऊन काटेगी और गर्मी में भेड़ें जलकर मर जाएँगी। (बाज़ार में ऐसी भेड़ों की कोई मांग नहीं होगी।) जब उन्होंने एक भेड़ पर यह दिखाया कि मशीन एक निश्चित मोटाई तक ही ऊन काटती है, तब जाकर अरबाब ने आधे मन से अपनी सहमति दी। फिर भी वह मशीन के इस्तेमाल पर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करता रहा।

ऊन काटने के लिए भेड़ों को सुरक्षित रखना मेरा कर्तव्य था। मुझे अपने सारे दैनिक काम निपटाने के बाद यही करना पड़ता था। मैं भेड़ों को उनकी गर्दन से अपने घुटनों के बीच पकड़ता था, जैसे बधिया किए हुए बच्चों को पकड़ता हूँ। एक भेड़ की ऊन काटने में मुश्किल से एक या दो मिनट लगते थे, लेकिन दो दिनों में लगभग छह सौ भेड़ों को इस तरह पकड़े रहना मेरे लिए कमर तोड़ मेहनत का काम था। मशीन भेड़ों की पूरी ऊन काट देती थी, बस उनकी पूंछ पर थोड़ी ऊन छोड़ देती थी। सूडानी व्यक्ति ने अपने सफेद दांत दिखाते हुए मुस्कुराते हुए कहा, 'हमारे यहाँ इसी तरह ऊन काटी जाती है। पूंछ के बाल भेड़ों के लिए हमारा उपहार हैं, ताकि वे मक्खियों को भगा सकें।'

अगली दोपहर तक सभी भेड़ों की ऊन उतार दी गई थी और वे बेहद खूबसूरत लग रही थीं। शाम तक सूडानी लोग ऊन को बोरियों में भरकर अपनी पिक-अप गाड़ी में चले गए। उनके जाने पर मुझ पर कितना गहरा दुख छा गया! तब तक मैं दो इंसानों की खुशबू का आनंद ले रहा था। अब वहाँ सिर्फ जानवर और मैं ही थे। दुख बारिश की तरह बरस पड़ा।

सर्दी का मौसम ही वह समय था जब मुझे यह पता चला कि मनुष्य के कुकर्मों के बावजूद इस धरती से जीवन को मिटाना असंभव है। यह रेगिस्तान कितने महीनों से झुलसा देने वाली गर्मी में पड़ा था! उस जलती हुई रेत पर जीवन का कोई निशान नहीं था। जैसे ही ठंडी हवा चली, गर्मी के अंत का संकेत देते हुए, सूखी रेत पर एक हरी चादर सी बिछ गई। यह बारिश के दो दिन के भीतर ही हुआ था! ऐसा लग रहा था मानो जीवन की सारी सुगंध उस भूरी सतह के नीचे सुप्त पड़ी थीं, पुनरुत्थान का संगीत सुनने के लिए बेताब: कैक्टस, लताएँ, चट्टानी कवक, टच-मी-नॉट, चमकदार पत्तियों वाली झाड़ियाँ। और आकाश के छोर से पक्षियों के झुंड अपने लंबे पंख फैलाते हुए आए, चहचहाते अबाबील, चहचहाते हरे तोते, गुटरगू करते कबूतरों के जोड़े। ये सब कहाँ से आए थे?
यह जानकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई कि वे पेड़-पौधे और जीव-जंतु चुपचाप लेटे हुए थे —अपने जीवन की रक्षा कर रहे थे, रेगिस्तान की भीषण गर्मी सहन कर रहे थे। मैंने अपनी आँखों से देखा कि कैसे वे छोटे-छोटे पौधे बड़े हुए, फूल और फल लगे, और धरती की गोद में भविष्य के लिए जीवन संजोए रखा। मैं उनकी कितनी प्रशंसा करता था! उन पौधों ने मुझे जीवन के आशा के महान पाठ सिखाए। उन्होंने मुझसे कहा: नजीब, रेगिस्तान के गोद लिए बेटे, हमारी तरह तुम्हें भी अपने जीवन की रक्षा करनी होगी और इस रेगिस्तान से संघर्ष करना होगा। गर्म हवाएँ और झुलसा देने वाले दिन बीत जाएँगे। उनके आगे हार मत मानो। हिम्मत मत हारो, वरना तुम्हें अपनी जान गंवानी पड़ सकती है। हार मत मानो। अधमरे लेटे रहो, मानो ध्यान कर रहे हो। शून्यता का आभास करो। ऐसा जताओ कि तुम कभी पुनर्जीवित नहीं होगे। चुपके से दयालु अल्लाह से प्रार्थना करो। वह तुम्हारी उपस्थिति को पहचान लेगा। वह तुम्हारी पुकार सुन लेगा। और अंत में तुम्हारे लिए एक उपयुक्त क्षण आएगा। यह गर्म हवा बह

जाएगी। यह गर्मी छंट जाएगी। समय की ठंडी हवा तुम्हें बुलाएगी। तब, केवल तभी, धीरे-धीरे अपना सिर धरती से उठाओ, अपनी उपस्थिति का ऐलान करो और फिर तेज़ी से आज़ादी की ओर छलांग लगाओ। कल खिल उठो और फल दो।
मैंने नन्हे पौधों की बातें ध्यान से सुनीं। मैंने धैर्यपूर्वक उचित समय की प्रतीक्षा की।
बाईस

हालांकि मुझे नर बकरियों से डर और नफरत थी, एक बार ऐसा भी हुआ जब उनमें से एक ने मेरी जान बचाई। एक दिन, मैं हमेशा की तरह उन्हें सैर पर ले गया। उन्हें वहीं छोड़कर, मैं एक रेत के टीले पर चढ़ गया और बैठ गया। पता नहीं क्यों, मेरे मन में अपने वतन की यादें जाग उठीं। मेरे सारे दबे हुए विचार ज्वालामुखी की तरह फूट पड़े। मुझे यहाँ से भागना होगा। मुझे घर जाना होगा। मुझे अपने उम्माह पहुँचना होगा। मुझे अपने सैंन को देखना होगा। मुझे अपने नबील को देखना होगा। मुझे अपनी ज़मीन देखनी होगी। मुझे अपनी धूल भरी सड़कें देखनी होंगी। मुझे अपनी नदी देखनी होगी। मुझे अपनी नाव देखनी होगी। मुझे अपनी बारिश देखनी होगी। मुझे अपनी धरती देखनी होगी। ऐसे क्षणों में, मैं वास्तव में पुरानी यादों का अर्थ समझ पाता हूँ। यह एक तीव्र लालसा है। एक ऐसी तीव्र लालसा जो हमें अपनी वर्तमान स्थिति से नफरत करने पर मजबूर कर देती है। फिर, वह लालसा घर लौटने की एक बेकाबू इच्छा का रूप ले लेती है, जैसे कोई जंगली सूअर गोली लगने के बाद गन्ने के खेतों में बेतहाशा दौड़ता है। ऐसा कभी-कभार ही होता है। लेकिन जब ऐसा होता है, तो भावनाओं के उफान को रोकना आसान नहीं होता है।
अरबाब अपनी गाड़ी पर खड़े होकर दूरबीन से देख रहे थे। मैं रेत के टीले के दूसरी तरफ बैठा था, इसलिए दूरबीन की पहुँच से बाहर था। मैंने इसे भागने का मौका समझा। मैंने मन ही मन सोचा कि अगर मैंने ज़रा भी देर की तो इस जीवन में मेरा अंत निश्चित है। मैं अल्लाह के बुलावे पर उछल पड़ा। मैंने और कुछ नहीं सोचा और रेगिस्तान में दौड़ पड़ा। तभी, मेरे पास खड़ा एक बकरा भी मेरे साथ दौड़ने लगा। मैंने उसे रोकने की कोशिश की, लाठी से मारा और धक्का दिया, लेकिन वह मेरा पीछा करता रहा। भागने की तीव्र इच्छा के कारण मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। बस दूर, जितना दूर हो सके, यही मेरा दिमाग कह रहा था। मुझे पता नहीं था कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। बस भागो, बस बच जाओ, यही मैं खुद से कहता रहा। बकरा मेरे ठीक पीछे

था, और ऐसे दौड़ रहा था मानो मुझे सींगों से मार गिराएगा। डर के मारे मैंने अपनी गति दोगुनी कर दी।
अचानक, मुझे अपने पीछे एक वाहन की तेज़ आवाज़ सुनाई दी। डर मेरे अंदर आग की तरह भड़क उठा। अरबाब ने मुझे भागते हुए देख लिया था! अरबाब जल्द ही मेरे पास पहुँच जाएगा और मुझे पीट-पीटकर मार डालेगा। अचानक, एक गोली चलने की आवाज़ आई। सौभाग्य से, गोली मुझे नहीं लगी। हालाँकि मैं जानता था कि मैं बच नहीं पाऊँगा, फिर भी मैं भागता रहा, और तेज़ दौड़ने की कोशिश करता रहा। जैसे ही दूसरी गोली चली, बकरी ज़ोर से चिल्लाते हुए मेरी ओर दौड़ी और मेरे ऊपर लुढ़क गई। उसके सीने से खून ऐसे बह निकला जैसे किसी मोटर पंप से। दर्द से तड़पते हुए, वह उछली और भाग गई। थोड़ी दूर जाकर, थककर वह गिर पड़ी। तब तक अरबाब मेरे पास पहुँच चुका था। मैं दौड़ा और उसके पैरों पर गिर पड़ा। अरबाब ने अपनी बेल्ट निकाली और मुझे कोड़े मारे। मैं चीख उठा। अरबाब ने मुझे गाड़ी में बैठने का आदेश दिया। जैसे कोई पिटा हुआ पिल्ला अपनी पूंछ दबाकर अपने पिंजरे में भागता है, वैसे ही मैं दौड़ा और अरबाब की पिक-अप के पीछे बैठ गया। तब तक बकरी मर चुकी थी। उस आदमी ने उसे घसीटकर गाड़ी में फेंक दिया और मुझे एक और थप्पड़ मारा। मैं उदास होकर वहीं बैठा रोने लगा।
आँखें खुली हुई, बकरी का शव मेरे बगल में पड़ा था। यह जानकर मेरा सिसकना और तेज़ हो गया कि उसकी मौत मेरी वजह से हुई है। मेरी प्यारी बकरी... तुम्हें मेरे पीछे आने के लिए किसने कहा था? उस गोली के सामने अपनी छाती दिखाने के लिए जो मेरे लिए तय थी? भागने का मेरा यह एहसास बिल्कुल गलत था। मैंने अल्लाह के बुलावे को गलत समझा था। अक्सर ऐसा ही होता है; हम अपनी इच्छाओं को अल्लाह का बुलावा बताकर सही ठहराते हैं। लेकिन सब कुछ अल्लाह की मर्ज़ी से ही होता है। उसकी मर्ज़ी को सही ढंग से समझने के लिए, अल्लाह के करीब होना ज़रूरी है। मैंने संकेतों का अनुमान नहीं लगाया था। लेकिन अल्लाह ने मेरी रक्षा की। क्या तुम्हें मेरी जगह कुर्बान किया गया? उस बकरी की तरह जिसे पैगंबर इब्राहिम के बेटे की जगह कुर्बान किया गया था?
गाड़ी तंबू के सामने रुकी। अर्बाब ने मुझे घसीटकर बाहर निकाला और बांधकर एक मसारा में बंद कर दिया। फिर उसने जी भर कर मेरी पिटाई की। मेरे शरीर के हर हिस्से से खून बह रहा था। फिर भी मैं नहीं रोई। मैंने एक आंसू भी नहीं बहाया। मैंने

सब कुछ सहन किया। एक बकरी ने मेरे लिए अपनी जान दे दी। अगर मैं अपनी किस्मत पर रोऊंगी तो अल्लाह भी मुझे माफ नहीं करेगा।
मालिक ने वहीं बकरी की खाल उतारी। उसने उसे टुकड़ों में काटकर खुले में आग पर भूना। उसने पेट भरकर खाया और बचा हुआ मेरे पास ले आया। जब मैंने मना किया, तो उसने मुझे और मारा और जबरदस्ती मांस मेरे मुंह में ठूंस दिया। मुझे उल्टी जैसा महसूस हुआ, मानो मैं अपने ही भाई का मांस खा रहा हूँ। मैं उसे बिल्कुल नहीं खा सका। जो थोड़ा सा मेरे पेट में गया, वो भी मैंने उल्टी कर दिया। तब से मैंने कभी मटन नहीं खाया। मुझे कभी उसे खाने की इच्छा ही नहीं हुई।
उस दिन और अगले दिन भी अरबाब ने मुझे मसारा में बंद रखा। उसने मुझे बिल्कुल भी बाहर नहीं निकलने दिया, पानी की एक बूँद या खुबूस का एक टुकड़ा भी नहीं दिया। दो दिन तक मैं वहाँ बिना शिकायत किए पड़ा रहा। दूसरी रात तक मुझे बहुत भूख लग गई थी। जब मुझे यकीन हो गया कि अरबाब सो गया है, तो मैंने धीरे से अपने पैर खोले और बकरियों के बीच से रेंगते हुए पानी के पात्र तक पहुँचा और प्यास बुझने तक पानी पिया। दूसरे पात्र में बकरियों द्वारा न खाए गए कुछ गेहूँ के दाने थे। मैंने उन्हें इकट्ठा किया और लालच से खा लिया। कच्चा गेहूँ। बिना छिलके वाला। पास ही एक छोटी बाल्टी में थोड़ा नमक था। मैंने नमक के साथ गेहूँ खाया। उसी दिन मुझे एहसास हुआ कि कच्चा गेहूँ भी स्वादिष्ट हो सकता है! मैंने फिर से पात्र से पानी गटक लिया। पेट भर जाने पर मुझे आखिरकार चैन मिला। मैं बकरियों के साथ मसारा में सो गया। तब तक मैं सचमुच एक बकरी बन चुका था।

तेईस

गर्मी का मौसम शुरू हो चुका था, लेकिन गर्मी बर्दाश्त करने लायक थी। पर बाद में मुझे पता चला कि यह तो बस मौसम की शुरुआत थी। दिन बीतने के साथ-साथ तापमान लगातार बढ़ता गया। गर्मी हवा में पूरी तरह भर गई। हर बार जब हवा चलती, तो ऐसा लगता जैसे मैं किसी भट्टी के अंदर हूँ।
आपको क्या लगता है, रेगिस्तान में अपनी पहली गर्मी के दौरान मेरी सबसे बड़ी चाहत क्या थी? आज़ादी? पानी? अच्छा खाना? अपने बच्चे को देखना? अपने सायन को एक बार पुकारना? नहीं, इनमें से कुछ भी नहीं। मेरी दिली तमन्ना थी कि कुछ देर के लिए

छाया में बैठ जाऊं। आप मेरी तकलीफों का अंदाज़ा लगा सकते हैं, अगर यही मेरा सपना था और यही मेरी चाहत थी! मैंने अपने कपड़ों से छाया बनाने की कोशिश की। मैंने अपनी लाठी की छाया में भी छाया ढूंढने की कोशिश की। मैंने सिर्फ़ ऐसी जगहों के बारे में सुना था जहाँ कौवे के पंख जितनी भी छाया नहीं होती। रेगिस्तान में ही मैंने इसका हकीकत अनुभव किया।

लेकिन इस गर्मी में, मैंने अपने पलंग पर ऊनी कंबल बिछाकर किसी तरह एक तंबू बना लिया। जब मैं उसके नीचे बैठा, तो गर्मी कुछ हद तक सहन करने लायक थी। पर मुझे आराम करने का समय मुश्किल से ही मिला। काम सुबह पाँच बजे शुरू होता था और रात दस बजे तक भी खत्म नहीं होता था। जब मैं मसारा के एक हिस्से से बकरियों को लेकर लौटता, तब तक अरबाब दूसरे हिस्से से बकरियों को छोड़ चुका होता था। मुझे बस दो मग पानी पीने का समय मिलता था—वह पानी जो जंग लगे लोहे के टैंक में सचमुच उबल रहा होता था! तब तक बकरियाँ रेगिस्तान में फैल चुकी होतीं और अगर मैं उन्हें इकट्ठा नहीं करता, तो वे अपने-अपने रास्ते चली जातीं। उसके बाद उन्हें इकट्ठा करना नामुमकिन होता। मैं मसारा में एक मिनट भी बर्बाद किए बिना, पागल कुत्ते की तरह मुँह से झाग निकालते हुए, उनके पास दौड़ पड़ता।

मैं आकाश की ओर देखता और पूछता, ऐ अल्लाह, मैंने आपके और अपने पिता के विरुद्ध ऐसा कौन सा अपराध किया है कि मुझे इस रेगिस्तान में भटकते हुए उस बेबस बेटे की तरह जानवरों के साथ छोड़ दिया गया है? अल्लाह जलते हुए सूर्य के रूप में मेरी ओर देखता। वह मुझसे कहता, तुम्हारे कष्ट के दिन अभी समाप्त नहीं हुए हैं। रेगिस्तान में किसी पैगंबर की तरह, मैं गर्म रेत पर घुटने टेककर आकाश की ओर देखते हुए प्रार्थना करता: ऐ अल्लाह, मुझे इस कष्ट से मुक्त कर। मेरे लिए एक उद्धारकर्ता भेज, जैसे तूने मूसा को इस्राएलियों के पास भेजा था। मुझे इस गुलामी से मुक्त कर।

मुझे नहीं पता था कि अल्लाह ने मेरी प्रार्थना सुनी या नहीं। लेकिन अल्लाह की कृपा मुझ पर बनी रही, इस विश्वास ने मुझमें एक नया आत्मविश्वास भर दिया। नास्तिकों, आपमें से जो लोग अल्लाह की दी हुई हरियाली में सुखमय जीवन जी रहे हैं, उन्हें शायद प्रार्थनाएँ निरर्थक रस्में लगती हों। मेरे लिए प्रार्थनाएँ मेरी शरणस्थली थीं। केवल आस्था के कारण ही मैं शरीर से कमज़ोर होते हुए भी मन से बलवान रह सका। अन्यथा मैं उस चिलचिलाती हवा में घास की तरह मुरझाकर जल जाता।

रेत जितनी तेज़ी से गर्म होती है, उससे कहीं ज़्यादा तेज़ी से ठंडी हो जाती है। रात के आठ-नौ बजे तक रेत एकदम ठंडी हो जाती थी। तब रेत पर सोना कितना सुखद लगता था। ऐसा लगता था मानो धरती के भीतर से कोई झरना फूट पड़ा हो, जो रेत और मेरे ऊपर लेटे हुए शरीर को ठंडा कर रहा हो। आह, कितना सुखद था! इससे दिन भर की सारी थकान दूर हो जाती थी। मैं यह मानने को तैयार नहीं कि धरती का भीतरी भाग इतना गर्म है। मैं यह भी नहीं मानता कि रेगिस्तान में पानी नहीं है। मुझे पूरा यकीन है कि जिस रेतीले मैदान पर मैं लेटा था, उसके नीचे एक नदी चुपचाप बह रही थी। मैं उस धारा पर ऐसे सोया जैसे किसी नाव पर। उस अनुभव के बारे में सोचते ही अब मेरी शांति और नींद दोगुनी हो जाती है। हालांकि, मेरी यह शांति ज़्यादा देर तक नहीं टिकी। यह डर के साथ खत्म हो गई। मैं आपको बताता हूँ क्यों।

एक सुबह जब मैं मसारा में दाखिल हुआ, तो मैंने चार-पाँच बकरियों को ज़मीन पर मरा पड़ा देखा। मैं डर गया। कल तक तो वे सब बेफिक्र उछल-कूद कर रही थीं। उनमें से एक तो बच्चा देने ही वाली थी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हुआ है। क्या उन्हें कोई बीमारी हो गई थी? अल्लाह, क्या यह कोई संक्रामक रोग है? अगर ऐसा है, तो क्या मुझे कोई लक्षण नहीं दिखते? घबराकर मैं अरबाब के तम्बू की ओर भागा। मैंने उन्हें सब कुछ बताया। मलयालम में। अरबाब तब तक मेरी भाषा सीख चुके होंगे। वैसे भी, यह तो कई बार साबित हो चुका है कि ज़रूरत पड़ने पर सुनने वाला कोई भी भाषा समझ सकता है। लेकिन मेरा अनुभव यह भी है कि चाहे कोई भी भाषा हो, सुनने वाला तब तक नहीं समझेगा जब तक बोलने वाले की संवाद करने की ज़रूरत सुनने वाले की समझने की ज़रूरत से ज़्यादा हो।

अरबाब उठे और मेरे साथ मसारा तक गए; उन्होंने मरी हुई बकरियों के चारों ओर चक्कर लगाया, उन्हें पलटा और उनकी जाँच की। उनकी पलकें खोलकर उनमें देखा। मैं इंतज़ार कर रहा था, मुझे लग रहा था कि मुझ पर इल्ज़ाम लगाया जाएगा और मेरी पिटाई होगी। लेकिन कुछ नहीं हुआ। अरबाब सुराग ढूँढ़ते हुए मसारा में इधर-उधर घूमते रहे। फिर वे पिक-अप से एक फावड़ा लाए और मुझे एक गड्ढा खोदने को कहा। जब मैंने गड्ढा खोदना खत्म कर लिया, तो अरबाब बकरियों को घसीटकर उसमें डाल दिया। मैं बहुत हैरान था। क्या मेरे अरबाब, जो ज़ख्म पर नमक लगाने में भी कंजूसी नहीं करते, इतना सारा मांस बर्बाद होने देंगे? मुझे कुछ समझ नहीं आया, न ही उन्होंने समझाया। मैं अपने रोज़मर्रा के काम में लौट गया।

मैंने बकरियों का दूध दुहा और थोड़ा दूध अर्बाब को पिलाया, थोड़ा खुद पिया और बाकी मेमनों को दे दिया। मैं बकरियों के साथ बाहर गई, वापस आई और दो खुबू खाए, मसारा साफ किया और सारे बर्तन भर दिए। मेरे काम रुके नहीं। बकरियों के ज़िंदा होने या मरने से मुझे क्या फर्क पड़ता था? नुकसान तो सिर्फ अर्बाब का था। मुझे कुछ भी हासिल या खोना नहीं था। फिर भी, दिन भर एक दर्द बना रहा, जैसे किसी कीड़े के डंक से होता है। खुद को शांत रखने की लाख कोशिशों के बावजूद, वे मौतें मुझे सताती रहीं। खासकर गर्भवती बकरी की मौत। वह बकरी पहली बार बच्चे को जन्म देने वाली थी! उसकी हर हरकत और नज़र में मुझे उसका गर्व साफ दिख रहा था। बकरी होने के बावजूद, उसके भी सपने तो होंगे ही। उसने कितनी बार माँ बनने, अपने बच्चे को दूध पिलाने और उसके साथ खेलने का सपना देखा होगा? बेचारी, सब कुछ एक ही रात में खत्म हो गया। यही तो ज़िंदगी है।

हे बकरी, मेरी प्यारी बकरी, तुम्हारा और मेरा जीवन किसी और का उपहार है। न तो तुम्हें और न ही मुझे उस ईश्वर द्वारा दिए गए जीवन से एक दिन भी अधिक जीने का अधिकार है जिसने हमें यह जीवन दिया है। हम इस दुनिया से तब तक नहीं बच सकते जब तक हम अपने भाग्य में लिखी हर पीड़ा को न सह लें। हे बकरी, तुम्हारे सितारे बदकिस्मत थे, तुम्हें अपने बच्चे को देखने से पहले ही मरना पड़ा। मैं दुगनी बदनसीब हूँ। मुझे भी इस नरक में तड़पना होगा। मैंने भी अपने बच्चे को नहीं देखा है। कितना दुखद जीवन है!

रात को, खुबस का भोजन करने के बाद, मैं नंगी रेत पर लेट गया, और एक पत्थर को तकिया बना लिया।

मुझे आश्चर्य हुआ जब अरबाब ने अपनी गाड़ी स्टार्ट कर दी। मेरे मन में एक उम्मीद जगी कि शायद वह थोड़ी देर के लिए कहीं चले गए हों। अगर ऐसा है, तो मुझे भाग जाना चाहिए। मैं ऐसे लेट गया जैसे मैंने उन्हें देखा ही न हो। लेकिन मेरी सारी इंद्रियां पूरी तरह सतर्क थीं। अरबाब मसारा के चारों ओर गाड़ी चलाने लगे। बहुत धीरे-धीरे, मानो कुछ खोज रहे हों। चार-पांच चक्कर लगाने के बाद, वे तंबू में वापस आए और गाड़ी रोक दी। फिर वे तंबू के अंदर चले गए। पल भर में, उम्मीद की ओर बढ़ते सारे तारे अंधेरे में डूब गए। मैं क्रोधित और निराश था। मैंने हर चीज़ को कोसा। मैंने अल्लाह को भी कोसा।

उस रात अरबाब ने मसारा के चारों ओर कई बार चक्कर लगाए। मुझे समझ नहीं आया कि वह ऐसा क्यों कर रहा था, और न ही मैंने पूछा। आखिर बकरियां इंसानों से बात तो नहीं करतीं।

रेतीले आराम में लेटे-लेटे मैं सो गया। रात काफी हो चुकी थी जब बकरियों के शोरगुल और इधर-उधर भागने की आवाज़ से मेरी नींद खुली। जब मैंने चारों ओर देखा, तो अरबाब घबराया हुआ लोहे की बाड़ के चारों ओर भाग रहा था। वह मुझे भी पुकार रहा था, 'हय्या, हय्या...'। मैं उछलकर उसके पास गया। अरबाब ने मुझे एक छड़ी दी और मुझे मसारा में धकेल दिया। मैं पूरी तरह से घबराया हुआ वहीं खड़ा रहा, जबकि अरबाब ने जगह को रोशन करने के लिए अपनी गाड़ी चालू की। बकरियां मिमियाती रहीं। धीरे-धीरे, एक-एक बकरी को हटाकर, मैंने यह देखने की कोशिश की कि उन्हें क्या परेशान कर रहा है। आखिरकार, मुझे वह कारण दिखाई दिया जिसकी वजह से बकरियां इतनी घबराई हुई थीं। एक सांप! एक सांप बकरी के पैर से लिपटा हुआ था। मैं डर के मारे रोते हुए बाहर भागा।

घर पर, मैं कम से कम तीन दिनों तक उस दिशा में जाने से भी कतराता था जहाँ कीचड़ वाला साँप या पानी वाला साँप देखा गया हो। साँप का नाम सुनते ही मुझे डर लगने लगता था। मुझे इतना डरा हुआ देखकर, अर्बाब गुस्से से बाहर आया और मुझे वापस अंदर धकेल कर बाहर से ताला लगा दिया। अब मेरे पास केवल दो ही विकल्प थे। या तो साँप को मार डालूँ या साँप के काटने से मर जाऊँ। मजबूरी इंसान को वो साहस देती है जिसकी उसे खुद भी पहचान नहीं होती। मेरे अंदर कई अधूरी इच्छाएँ धड़क रही थीं, इसलिए मुझे साहसी बनना पड़ा। जीना ही मेरी ज़रूरत थी।

दबे पांव चलते हुए, मैंने उस बकरी के पैर पर निशाना साधा जिस पर सांप कुंडली मारकर बैठा था। लोगों या बकरियों की भीड़ में सांप को मारना बहुत मुश्किल होता है। जैसे ही मेरी छड़ी उसके शरीर को छूकर निकली, वह मेरी तरफ मुड़ा और फुफकारने लगा। मैं बाहर भागा। लेकिन मसारा का दरवाजा बंद था। डर से पागल होकर, मैं इधर-उधर वार करने लगा। ज्यादातर वार बकरियों की पीठ पर लगे। वे इधर-उधर भागने लगीं, लेकिन मैं वार करता रहा। एक भी वार सांप पर नहीं लगा। लेकिन वारों की आवाज से वह जरूर डर गया होगा, क्योंकि वह खुद ही चला गया।

मुझे अर्बाब ने खूब डांटा। मेरी मार से एक बकरी मर गई। उस रात मेरी नींद उड़ गई। ठंडी रेत पर सोने का सुख भी छिन गया। कितने दिनों से मैं ज़मीन पर ज़हरीले साँप के

रहमो-करम पर सो रहा था? वह मेरे पास रेंगकर आ सकता था, मुझे काट सकता था और मार सकता था। मैंने सुना था कि रेगिस्तानी साँप बहुत ज़हरीले होते हैं। उनका छूना ही जान ले सकता है। लेकिन जितने दिन मैं ज़मीन पर सोया, कोई साँप मेरे पास नहीं आया। वे शायद यह जानकर दूर चले गए होंगे कि मैं वहाँ सो रहा हूँ। अल्लाह, जो रहम करने वाला है, सब कुछ पहले से तय करता है। सब कुछ उसकी योजना के अनुसार ही हुआ। उसकी मर्ज़ी के खिलाफ़ किसी साँप ने भी नहीं काटा। अल्लाह, तेरी तारीफ़ हो!

अगली सुबह, मसारा में तीन बकरियों के बच्चे मृत पाए गए। उनमें से एक मेरा नबील था।

चौबीस

अगर मुझसे पूछा जाए कि मैंने रेगिस्तान में सबसे खूबसूरत नज़ारा कौन सा देखा है, तो मेरा जवाब होगा: सूर्यास्त। सूरज किसी कछुए की तरह रेत में गोता लगाता हुआ लगता है। धीरे-धीरे वह रेतीले जंगल में समा जाता है। मैं अक्सर चाहता था कि सैनू मेरे साथ सूर्यास्त देखने के लिए होती। हालाँकि मैंने कहा था कि मैं अपने घर, अपनी जन्मभूमि और सैनू की यादों को दूर रखने की कोशिश करता हूँ, फिर भी ऐसे मौकों पर वह मेरे विचारों में आ जाती थी। तब मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगता था। दुनिया के सबसे बड़े दुखों में से एक है किसी खूबसूरत नज़ारे को साझा करने के लिए किसी का न होना। मैंने सूर्यास्त से अपनी नज़रें हटाईं और पलंग पर पीठ के बल लेट गया। किसी अनाथ की लाश की तरह...

उस रात मैं तारों से भरे आकाश के नीचे सो गया। लेकिन जब मैं जागा तो हवा धूल से भरी हुई थी, हालांकि हवा का कोई नामोनिशान नहीं था। धूल कहीं से चुपके से आ गई थी और हवा में भर गई थी। अपने शरीर को देखकर मुझे हंसी आ रही थी। किसी फिल्म के कॉमेडियन की तरह, मेरा पूरा शरीर धूल की परतों से ढका हुआ था। मैंने बकरियों को देखा; वे भी धूल के रंग में रंगी हुई थीं। मसारा में रखी बाल्टियाँ, लोहे की बाड़, ऊँट, अरबाब का तंबू, गाड़ी, मेरा पलंग, भूसे के गट्ठे—सब कुछ धूल से ढका हुआ था। इससे मुझे ठंडे देशों में बर्फबारी दिखाने वाले फिल्मी दृश्य याद आ गए।

मैंने अपना सिर हिलाया और मेरे बालों से इतनी धूल निकली कि मानो किसी ईंट भट्ठे में घुस जाए। जब मैंने अपने बालों में उंगलियां फेरने की कोशिश की, तो वे रेत और गंदगी

से इतने उलझे हुए थे कि उंगलियां अंदर नहीं जा पा रही थीं। मेरे बाल कंधे तक लंबे हो चुके थे। मेरी दाढ़ी भी बढ़ गई थी। मैंने बड़ी सी भेड़ की ऊन काटने वाली कैंची ली और पागलों की तरह अपने बाल और दाढ़ी काटने लगा। कभी-कभी बिना धुले बालों और दाढ़ी से मुझे बहुत खुजली होती थी। मेरी बगल और गुप्तांगों के गंदे बालों से छाले पड़ गए थे और देखने में घिनौने लगने लगे थे। बकरियों के शरीर से जूं, कीड़े और कुछ अन्य छोटे-छोटे कीट वहां बस गए थे। रात को पसीना आने पर उनमें बहुत खुजली होती थी। मेरा शरीर कीटों का भंडार बन गया था। जूं और कीड़ों ने मेरी त्वचा पर पपड़ी बना ली थी। बकरियां मुझसे ज्यादा साफ थीं।

पच्चीस

क्या मैंने आपसे पोचक्करी रमानी की कहानी सुनाने का वादा नहीं किया था? और अब मैं सुनाऊँगी। पोचक्करी रमानी के अलावा, मैंने मसारा में हर बकरी को एक नाम दिया जिसे मैं पहचानती थी, ताकि उन्हें डांटना और प्यार करना आसान हो जाए। मेरे मोहल्ले के लोग जैसे अरवु रावुथर, मरमैमुना, इंडिपोक्कर, नजंदु राघवन, परिप्पू विजयन, चक्की, अमिनी, कौसु, रौफत, पिंकी, अम्मू, रजिया और थाहिरा, और जगथी, मोहनलाल और यहाँ तक कि खुद ईएमएस जैसी जानी-मानी हस्तियाँ भी मेरे मसारा का हिस्सा थीं। उनमें से हर कोई किसी न किसी तरह से मेरे लिए प्रिय था। क्या आपने कभी किसी बकरी के चेहरे को ध्यान से देखा है? यह काफी हद तक इंसान के चेहरे जैसा होता है। मैंने बकरियों के नाम सिर्फ उनके चेहरे को देखकर ही नहीं रखे, बल्कि उनके कुछ चरित्र गुणों, उनकी चाल, उनकी आवाज़ों और उनसे जुड़ी घटनाओं के आधार पर भी रखे। ठीक वैसे ही जैसे घर पर उपनाम रख दिए जाते हैं।

मैंने आपको उस बकरे के बारे में बताया है जिसने मुझ पर हमला करके मेरा हाथ तोड़ दिया था। मैंने उसका नाम हमारे गाँव के सबसे बदमाश लड़के के नाम पर अरवु रावुथर रखा था। एक दिन, मेरे दादाजी एक संकरे पुल से नदी पार कर रहे थे। रावुथर दूसरी तरफ से आ रहे थे। पुल इतना संकरा था कि उस पर एक ही व्यक्ति बड़ी मुश्किल से चल सकता था। यह जाने बिना कि मेरे दादाजी आधा पुल पार कर चुके हैं, रावुथर उनके पास गए और उन्हें पीछे हटने को कहा। दादाजी नहीं माने। रावुथर ने उन्हें एक बार चेतावनी दी, और जब दूसरी चेतावनी के बाद भी मेरे दादाजी नहीं हिले, तो उन्होंने चेतावनी दोहराने की ज़हमत नहीं उठाई, बल्कि उछलकर उनके सीने पर

ज़ोरदार टक्कर मार दी! दादाजी लगभग बारह फीट नीचे नदी में गिर गए। उनकी कोहनी एक ग्रेनाइट चट्टान से टकराई और उनका हाथ टूट गया। हालाँकि उन्हें तुरंत अलाप्पुझा ज़िला अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उनका हाथ कमज़ोर और टेढ़ा रह गया। इसी वजह से मेरे दादाजी का उपनाम 'छोटे हाथ वाला अब्दू' पड़ गया। मैंने बकरी का नाम अरवु रावुथर बिना किसी कठिनाई के रख दिया क्योंकि उसने मुझे ठीक उसी तरह टक्कर मारी जैसे मुझे लगता है कि असली अरवु रावुथर ने मेरे दादाजी पर हमला किया होगा। साथ ही, मेरा हाथ भी ठीक उसी तरह टूट गया जैसे मेरे दादाजी का टूटा था।

इसलिए मैंने बकरियों को जो भी नाम दिए, उनके पीछे कई अजीब और व्यक्तिगत कारण थे। हो सकता है कि दूसरों को इन नामों का तर्क समझ में न आए, लेकिन मुझे ये पूरी तरह से समझ में आते थे।

मरमैमुना नाम की भी ऐसी ही कहानी है। मरमैमुना मेरी प्रेम कहानी की पहली नायिका थी। मेरा पहला प्रेम प्रसंग पाँचवीं कक्षा में पढ़ते समय शुरू हुआ। वह मेरी जान-पहचान की सबसे बुद्धिमान और खूबसूरत लड़की थी, और एक बेहतरीन गायिका भी। उसके बारे में मेरे सपनों की कोई सीमा नहीं थी। किसी तरह, मेरे उम्माह को पता चल गया। उस चालाक धोखेबाज़—मेरे बड़े भाई इक्का अब्दू—जिसने मुझसे मेरा राज़ उगलवा लिया था, उसने ही उसे बताया होगा। यह सुनकर मेरे उम्माह के लोग अपने बड़े-बड़े स्तनों को उछालते हुए हँस पड़े।

'उसके नाम से तो लगता है कि वह ईसाई है,' उम्माह ने ठहाकों के बीच भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

‘नहीं, उम्माह, वह हमारे धर्म की है,’ मैंने उत्तेजित होकर बीच में ही टोक दिया।

‘हमारे धर्म में मरियम?’ उम्माह जोर से हंस पड़ी।

तभी मैंने उसके धर्म के बारे में गंभीरता से सोचा—कि शायद वह हमारे धर्म से बिल्कुल भी संबंधित न हो। ‘वह मरियम नहीं है, उम्माह,’ मैंने उसे एक नाम बताया जो मेरे मन में आया, ‘वह मरियमूना है।’

‘ठीक है। मैं तुम्हारे स्कूल आ रही हूँ। मैं उस नाम वाली लड़की को देखना चाहती हूँ,’ उम्माह हँसते हुए बोली।

मेरी उम्माह मेरी मरमैमूना से मिलने स्कूल नहीं आ सकी। उनके आने से पहले ही मैंने स्कूल जाना छोड़ दिया। उसी साल मेरे पिता का देहांत हुआ था।

यह एक ऐसा नाम था जिसे मैं पूरी तरह भूल चुकी थी। मरमैमुना। लेकिन जब मैंने मसारा में एक बेहद खूबसूरत बकरी देखी, तो सारी यादें एक साथ उमड़ आईं। मुझे वह बकरी मरमैमुना जैसी ही खूबसूरत लगी!

अगर मैं आपसे कहूँ कि मेरे मसारा में ऐसी बकरियाँ थीं जो जगथी की तरह हँसती थीं, मोहनलाल की तरह चलती थीं और ईएमएस की तरह हकलाती थीं, तो क्या आप विश्वास करेंगे? मसारा में कुछ ही बकरियाँ स्थायी रूप से रहती थीं: मादा बकरियाँ जो लगातार बच्चे देती थीं और भरपूर दूध देती थीं, और कुछ तंदुरुस्त नर बकरियाँ। बाकी सभी को किसी न किसी समय बाज़ार भेज दिया जाता था। सबसे दिलचस्प बात यह थी कि जब किसी खास नाम वाली बकरी चली जाती थी, तो वह नाम मिटता नहीं था। कुछ समय बाद, उसी तरह के गुणों वाली एक और बकरी आ जाती थी। फिर मैं वही नाम दोहराता था: जगथी, मोहनलाल, नजंदू राघवन, कौसु, अमिनी... मुझे लगता है कि इंसानों और बकरियों दोनों के लिए, जन्म पीढ़ी दर पीढ़ी पुनर्जन्म ही है।

जब मुझे दूध दुहने का काम सौंपा गया, तो मैंने सबसे पहले जिस बकरी के पास जाकर उसे पोचक्करी रमानी नाम दिया, उसका नाम मैंने रख दिया। यह वही बकरी थी जिसके थनों को मैंने पहली बार छुआ था। इस नाम का संबंध मेरे बचपन की एक घटना से है। मेरे एक मामा, पोक्कर मामा, अक्सर हमारे घर आते थे। जब भी वे आते, मुझे दोपहर में सैर के लिए बाहर ले जाते थे। बाहर निकलने से पहले वे मेरी उम्मत से कहते, 'अत्ता, मुझे पच्चीस पैसे दो ताकि मैं उसके लिए मिठाई खरीद सकूँ।' और हर बार उम्मत उन्हें पच्चीस पैसे दे देती, लेकिन मुझे कभी मिठाई नहीं मिलती थी। इतना ही नहीं, पोक्कर मामा मुझे सिर्फ पास के खेत में ले जाते थे। हम वहाँ औरतों के घास काटने आने का इंतज़ार करते थे। रमानी उन कई औरतों में से एक थी जो घास काटने आती थीं। मामा की आदत थी कि वे उम्मत से मुझे मिठाई खरीदने के लिए मिले पैसे रमानी को दे देते थे ताकि वे उसके स्तनों को सहला सकें।

मुझे भी उसके स्तनों को छूने की इच्छा हुई! पोचक्करी रमानी ने कहा, 'अगर तुम मुझे पच्चीस पैसे ला दोगे तो तुम भी मेरे स्तन छू सकते हो।' जब मैंने उसे बताया कि मेरे पास पैसे नहीं हैं, तो उसने मेरे सिर पर एक थप्पड़ मारा और मुझे भगा दिया। घर पर मैं पैसे मांगने से डरता था। मुझे सिर्फ मार ही पड़ती। फिर भी, मुझे उसके स्तन छूने ही थे। इसलिए मैंने उम्माह के चावल के डिब्बे से पच्चीस पैसे चुरा लिए। इस तरह, एक दिन, मुझे भी खुशी हुई जब मुझे चारा चराने वाली रमानी के स्तन छूने और उस

अनुभव का आनंद लेने का मौका मिला। लेकिन उम्माह, जो हर पैसे का हिसाब रखती थी, ने मेरी चोरी पकड़ ली। जब उसने मुझसे पूछताछ की तो मैंने सच बता दिया। उस घटना के बाद पोक्कर मामा का हमारे घर आना बंद हो गया और उसे 'स्तन मामा' उपनाम मिल गया। पोचक्करी रमानी आखिरकार हमारे इलाके में एक मशहूर वेश्या बन गई!

छब्बीस

अगर कोई साथ हो तो हम किसी भी तरह का दुख सह सकते हैं। अकेलापन बहुत निराशाजनक होता है। शब्द मेरे अंदर चांदी जैसी मछलियों की तरह फड़फड़ा रहे थे। अनकहे भाव मेरे मुंह से निकलकर उमड़ रहे थे। अपने दुखों को किसी को सुनाने वाला कोई, मुझे देखने वाली कोई आंखें और मेरे बगल में कोई गाल होना मेरे लिए बहुत जरूरी हो गया था। इनके अभाव में इंसान पागल हो जाता है, यहां तक कि आत्महत्या करने की सोचने लगता है। शायद यही कारण है कि एकांत कारावास में रहने वाले लोग पागल हो जाते हैं।
उन शब्दों को बाहर निकालना, उन्हें बहा देना, सबसे बड़ी मानसिक शांति प्रदान करता है। जिन्हें यह अवसर नहीं मिलता, वे शब्दों के घुटते ही मर जाते हैं। मैं भी शायद ऐसे ही मर जाता। लेकिन पोचक्करी रमानी, मरमैमुना, कौसु और अरवु रावुथर को सुनाई गई कहानियों के माध्यम से ही मेरे भीतर जमा हुए शब्द बाहर निकल आए। मैं उनसे ऐसे बात करता रहा जैसे मैं अपने प्रियजनों से बात कर रहा हूँ, जब मैं उनके साथ चलता था, उनका दूध निकालता था, उनके बर्तन भरता था और उन्हें चारा देता था। मैंने अपने आँसू, दर्द, पीड़ा, भावनाएँ और सपने उनके सामने उड़ेल दिए। मुझे नहीं पता कि वे कुछ समझ पाए या नहीं। लेकिन उन्होंने मेरी बात सुनी, मुझे ऊपर उठाकर देखा, यहाँ तक कि मेरे साथ आँसू भी बहाए। मेरे लिए इतना ही काफी था।
उन दिनों जब मेरे पास साथी के रूप में केवल बकरियाँ थीं, एक बार ऐसा हुआ कि मैंने उनके साथ न केवल अपने दुख-दर्द बाँटे, बल्कि अपना शरीर भी साझा किया। एक रात, जब मैं लेटा, मुझे नींद नहीं आ रही थी। मुझे पता नहीं क्यों, लेकिन मैं पसीने से तरबतर था। मेरे अंदर एक अतृप्त इच्छा थी, एक जुनून जो रेगिस्तानी तूफान की तरह उमड़ रहा था। कुछ समय से मैं नपुंसक था। मैंने सोचा भी नहीं था कि मुझे फिर

से यौन इच्छा होगी। लेकिन ऐसा हुआ। जो इतने लंबे समय से सुप्त था, वह अचानक जाग उठा। उसे शांत करने के मेरे सभी प्रयासों ने मेरी लालसा को और भी बढ़ा दिया। मोहक नग्न स्त्री आकृतियाँ मेरी आँखों के सामने रेंगने लगीं। मैं उस भावनात्मक उफान में पिघल गया। मुझे किसी शरीर की ज़रूरत थी जिसके पास मैं लेट सकूँ। मुझे किसी गुफा की ज़रूरत थी जिसमें मैं भाग सकूँ। मैं पागल हो गया। उस पागलपन की तीव्रता में, मैं उठा और बाहर भागा। जब मैंने सुबह अपनी थकी हुई आँखें खोलीं, तो मैं मसारा में था। पोचक्कारी रमानी मेरे पास लेटी हुई थी।
जब मुझे पता चला कि हकीम पास के ही रेगिस्तान में है, तो उसे दोबारा देखने की मेरी इच्छा और भी बढ़ गई। मेरी आँखें किसी इंसान को देखने के लिए तड़प रही थीं। वह भी मुझसे मिलने का रास्ता ढूंढ रहा था। हमें एहसास हुआ कि रेगिस्तान में अब तक हमारी मुलाकात इसलिए नहीं हुई थी क्योंकि हम अपनी बकरियों को अलग-अलग दिशाओं में ले जा रहे थे। हमारे दोनों रेगिस्तानों के बीच एक छोटी सी घाटी थी। इसने हमारी मुलाकात की सारी संभावनाएँ खत्म कर दी थीं। लेकिन धीरे-धीरे मैं उस घाटी की ओर बढ़ने लगा। मुझे दूर से हकीम दिखाई देने लगा। वह भी मेरी ओर बढ़ने लगा। हम मिलने लगे, हालाँकि अरबाब अक्सर मुझे इस बारे में डांटता था। लेकिन मैंने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। उसके साथ लगातार रहने से मेरा डर खत्म हो गया था। क्या होता? कुछ डांट, कुछ थप्पड़। मुझे दोनों की आदत हो गई थी।

हकीम का दादा मुझसे भी ज़्यादा बुरा था। कभी-कभी वो मुझे अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों के बारे में बताता था। उसके दादा का शौक था हकीम के चेहरे पर उबलता पानी छिड़कना, उसके बाल खींचना, उसकी पीठ में डंडा मारना, उसकी छाती पर लात मारना, उसका सिर पानी में डुबोना वगैरह। इसलिए हकीम को बहुत डर लगता था कि कहीं हमारे मिलने की खबर उसके दादा को न मिल जाए। जब कभी वो आता भी, तो एक-दो शब्द बोलकर भाग जाता। हमने मिलने के तरीके भी ईजाद कर रखे थे। इसके लिए मैं किसी बकरी के गुदा में डंडा मारता या उसकी पूंछ मरोड़ देता। फिर बकरी पागलों की तरह भागने लगती। मैं उसके पीछे भागता और उसे मारता, जिससे वो और भी तेज़ भागने लगती। इस तरह किसी तरह मैं हकीम के पास पहुँच जाता। जब दादा दूर से दूरबीन से देखता, तो उसे लगता जैसे मैं किसी भागती हुई

बकरी का पीछा करते हुए वहाँ पहुँच गया हूँ। हम जल्दी से एक-दो शब्द बोल लेते। हमारी बातचीत वहीं खत्म हो जाती। वहीं खत्म होना ज़रूरी था। अगर हम थोड़ा और समय लगाते, तो अरबाब अपनी गाड़ी से आ जाते। ज़रा सोचिए, हमें अपने सारे विचारों को दो शब्दों में समेटने के लिए कितना संयम बरतना पड़ा। जो व्यक्ति दिनभर लगातार बोलता रहता है, वह मेरी पीड़ा को आसानी से नहीं समझ पाएगा।

सत्ताईस

एक दिन मैं रेत के टीले पर बैठा बकरियों को देख रहा था। दूर से मुझे हकीम अपनी बकरियों के साथ दिखाई दिया। मैंने सोचा कि जाकर उससे थोड़ी बात कर लूँ। लेकिन मेरे मुखिया ने दूरबीन से अपनी नज़रें नहीं हटाई थीं। पिछले कुछ दिनों में उनकी निगरानी बढ़ गई थी। उन्होंने तो मुझे हकीम से मिलने से सख्ती से मना कर दिया था। शायद उन्हें डर था कि हमारी बार-बार की मुलाकातों से हम दोनों के मन में एक साथ भागने की इच्छा जाग उठेगी। लेकिन मेरे मुखिया ने जो कारण बताया वो कुछ और ही था—कि दूसरे मसारा में कीटाणु और बीमारियाँ हो सकती हैं जो हकीम के संपर्क में आने से हमारे मसारा और हमारी बकरियों तक फैल सकती हैं। सच कहूँ तो, मुझे हंसी आ रही थी—जैसे कि मेरा मसारा स्वच्छता का गढ़ हो!

खैर, मैंने हकीम से बात करने की अपनी इच्छा को दबा लिया। मैं मार-पिटाई और डांट-फटकार तो किसी तरह बर्दाश्त कर सकता था, लेकिन हकीम को उसी अंजाम की ओर क्यों धकेलूँ?

शायद हकीम के उस दूर के दृश्य के कारण, अचानक मुझे अपने वतन की याद सताने लगी। मसारा में रहते हुए ऐसा अक्सर नहीं होता था। मेरी सारी इच्छाएँ एक साथ उमड़ आईं। मेरे सैंन, मेरा उम्माह, मेरा बेटा... मेरी बेटी...? मेरा घर, मेरी नाव। मैंने प्रवासी जीवन की यादों के बारे में कितनी बार सुना था? बाद में मुझे अक्सर आश्चर्य होता था कि उन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मैंने अपने टूटे सपनों पर कभी शोक नहीं किया। मुझे लगता है कि ऐसे विचार केवल उन्हीं लोगों के मन में आते हैं जिन्हें कोई रास्ता दिखाई देता है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं उस नरक से बच निकल पाऊँगी जिसमें मैं फँसी हुई थी। एक बार फँस जाने के बाद, मैं बिना किसी उम्मीद के जीती

रही। मरे हुए लोग जीवन के सपने नहीं देखते। लेकिन उस दिन, मेरे भीतर एक धुंधली सी उम्मीद जगी कि शायद मैं भी बच निकलूँ।

दयालु अल्लाह, आप अनेकों के जीवन में बड़े-बड़े चमत्कार करते हैं: एक भिखारी को अचानक बड़ा इनाम मिलता है, एक बीमार व्यक्ति एक सुबह ठीक हो जाता है, दुर्घटना का शिकार व्यक्ति बाल-बाल बच जाता है, विमान दुर्घटना में एक व्यक्ति बच निकलता है जबकि सैकड़ों अन्य मारे जाते हैं, जहाज़ टूटने से बचा नाविक किनारे तक पहुँच जाता है, भूकंप के मलबे से कोई हफ़्तों बाद ज़िंदा निकल आता है। ऐसे कितने ही वाकये हैं जो समझ से परे हैं? क्या आप मेरे जीवन में भी ऐसा ही कोई चमत्कार नहीं करेंगे? बस आपको अपनी इच्छाशक्ति का इस्तेमाल करना होगा। क्या होगा अगर घास ढोने वाला कोई ट्रक चालक मेरे लिए अपना वाहन रोक दे? क्या होगा अगर पानी ढोने वाला मुझे सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दे? क्या होगा अगर स्वयं अल्लाह मुझ पर दया करके मुझे वापस भेज दे? बस आपकी इच्छाशक्ति और आपकी कृपा ही काफ़ी है। मैंने आकाश की ओर देखा। वहाँ फीके बादल अनाथों की तरह तैर रहे थे, मुझे आशा की कोई किरण नहीं दिखा रहे थे।

तभी मैंने दो बकरियों को सींग लड़ाते देखा। जब ये बकर एक-दूसरे से सींग लड़ाती थीं, तो उनका आक्रामक रूप दुगना हो जाता था। वे तब तक नहीं रुकती थीं जब तक उनके सींग टूटकर उनके सिर से खून न बहने लगे। एक बकरे का दूसरे पर कितना गुस्सा था! मैं उनकी ओर दौड़ा और उन्हें मारा। गुस्से से उबलता हुआ एक बकरा दूर हट गया। दूसरा मेरी ओर मुड़ा और अपनी नाक से आग उगलते हुए मेरी आँखों में आँखें गड़ा दीं। उसने अपना सारा गुस्सा अपने सींगों में समेट लिया। मैं जहाँ खड़ा था वहीं डटा रहा। जैसे ही वह मुझ पर झपटा, मैं तेज़ी से उससे बच निकला। मैंने यह तरीका अनुभव से सीख लिया था। एक बकरा कभी अचानक हमला नहीं करता। वह रुकता है, निशाना साधता है और फिर झपटता है। तब तक आपको स्थिर रहना चाहिए। जैसे ही वह आपकी ओर दौड़े, उससे बचने के लिए छलांग लगाएँ। गति के कारण वह दिशा नहीं बदल सकता। बकरे के हमले से बचने का यही एकमात्र तरीका है।

जैसे ही बकरी का निशाना चूका, वह ज़मीन पर जा गिरी। गिरने से उसका गुस्सा शांत हो गया। किसी तरह वह उठी और दूसरी दिशा में चली गई। बकरी के गिरने से रेत में एक गड्ढा बन गया था। जब मैंने यूं ही देखा, तो मुझे कुछ नज़र आया। पहले खुदाई के

कुछ निशान थे। घबराकर मैं उस जगह के पास गया। नज़ारा देखकर मैं दंग रह गया। मैंने अरबाब की तरफ देखा। वह आराम कर रहा था, उसकी नज़र दूरबीन से हटी हुई थी। मैं बैठ गया और धीरे-धीरे खोदने लगा। मेरा शक सही निकला। उसे देखकर मैं डर के मारे उछल पड़ा। यह एक इंसान की हथेली थी! एक ऐसी हथेली जो सड़ कर हड्डियों में तब्दील हो रही थी। बहुत डर और घबराहट के साथ मैंने रेत हटाना शुरू किया। मैंने अभी मिट्टी की एक परत ही हटाई थी कि एक इंसान का कंकाल नज़र आया। अब मैं सचमुच बहुत डर गया था। जैसे ही मैं पीछे हटा, किसी चीज़ ने मेरे पैर पर चोट मारी। एक चमड़े का बेल्ट जो अभी तक सड़ा नहीं था। एक बेल्ट जो जानी-पहचानी लग रही थी। अचानक, बिजली सी गिरी। मैंने उस बेल्ट को उस डरावनी आकृति की कमर पर देखा था जो मेरे पहुंचने के तीसरे दिन मसारा से गायब हो गई थी।

मैं बकरियों को वहीं छोड़कर मसारा की ओर भागा। मैं जाकर अरबाब के चरणों में गिर पड़ा। 'मैं कहीं नहीं जाना चाहता। मैं इस जगह से भागने वाला नहीं हूँ। बस इतना ही काफी है कि आप मुझे मार न डालें। मुझे इस तरह जीने में भी कोई आपत्ति नहीं है। मुझे मौत से डर लगता है।' मैं रोता रहा। अरबाब अचंभित था। उसे मेरी अचानक इस तरह की प्रतिक्रिया समझ नहीं आ रही थी!

अट्ठाईस

जीवन के हर अनुभव का एक चरम बिंदु होता है, चाहे वह सुख हो, दुःख हो, बीमारी हो या भूख। जब हम अंत तक पहुँचते हैं, तो हमारे पास केवल दो ही रास्ते बचते हैं: या तो हम अपने जीवन के साथ जीना सीख लें या फिर अंतिम प्रयास में विरोध और संघर्ष करके इससे मुक्ति पा लें। यदि हम दूसरा रास्ता चुनते हैं, तो जीतने पर हम सुरक्षित रहते हैं; अन्यथा, हम या तो मानसिक अस्पताल में भर्ती हो जाते हैं या आत्महत्या कर लेते हैं।

अब तक मैंने भागने की कोशिश नहीं की थी। शुरुआती कुछ प्रयास अनुभवहीन थे। तब तक मैं अपनी सहनशक्ति की सीमा तक नहीं पहुंचा था। वास्तव में, मैंने अपनी परिस्थितियों के साथ जीना सीख लिया था। मेरे अनुभव ने मुझे सिखाया कि चाहे हमारा दर्द कितना भी तीव्र हो या हम कितनी भी कठिन परिस्थितियों का सामना करें, समय

के साथ हम अपनी परेशानियों को स्वीकार कर लेते हैं। एक साल के भीतर मैं अपने जीवन का आदी हो गया। अब मुझे यह बोझिल नहीं लगता था। पहले मैं सोचता था कि भिखारी, अत्यंत गरीब, स्थायी रूप से बीमार, अंधे और विकलांग लोग अपना जीवन कैसे जीते हैं, उनके चेहरों पर खुशी की मुस्कान कैसे खिल उठती है। अब मुझे इसका जवाब जीवन से ही मिल गया था। मुझे ऐसा नहीं लगता था कि मेरे जीवन में अब कोई कठिनाई है। मुझे क्या करना था? सुबह उठना, बकरियों का दूध दुहना, जानवरों को चारा देना, बकरियों को सैर पर ले जाना, वापस आना, खुबस खाना, दिन के उजाले और चांदनी में सो जाना। कोई विचार नहीं, कोई चिंता नहीं, कोई इच्छा नहीं। मुझे और क्या चाहिए था? मुझे बाहरी दुनिया में क्या हो रहा था, इसकी कोई जानकारी नहीं थी। मैं अपने परिवार, अपने घर, अपनी मातृभूमि को भूल चुका था। वे मेरे लिए ऐसे लोग बन गए थे जो किसी और जन्म या समय में मेरे साथ रहे थे। उनके दुखों या तकलीफों का मुझ पर ज़रा भी असर नहीं था। मेरा जीवन सुखमय था। खुशहाल।
इस प्रकार, मेरे जीवन में गर्मी आई, सर्दी आई, हवा चली, धूल भरी आंधी आई, कभी-कभार बारिश हुई, ट्रक सप्ताह में एक बार आए। सब कुछ आया, सब कुछ चला गया। केवल मैं और मेरी बकरियाँ ही मसारा में बिना हिले-डुले रहे। और हकीम और उसकी बकरियाँ पास के मसारा में। तभी एक अभागा तीसरा हमारे बीच आ गया। उसे हकीम के मसारा में लाया गया। हकीम और वह हर समय साथ रहते थे। यह पहली बार था जब मैंने किसी दूसरे इंसान से इतनी गहरी ईर्ष्या की। वास्तव में, मैं उदास हो गया था। हकीम के पास बात करने, संवाद करने के लिए कोई था। मैं बकरियों के मसारा में एक बकरी बनकर रह गया। मुझे खुद से और भी नफरत होने लगी।

उनतीस

हकीम में आए बदलाव साफ दिखाई दे रहे थे। मैं उस नए मेहमान के बारे में कुछ नहीं जानता था, न वो कौन था और न ही कहाँ से आया था। लेकिन उसने हकीम की जिंदगी में बड़ा बदलाव ला दिया। उसके चेहरे पर बड़ी-बड़ी मुस्कानें खिल उठीं। उसकी बातें खुशी से भरी थीं। मैं ईर्ष्या से सिकुड़ कर बैठ गया। मुझे पूरी दुनिया से गुस्सा और नफरत महसूस होने लगी। मैंने अपनी कड़वाहट को मसारा में बकरियों पर निकाला

—नवजात नर बकरियों के अंडकोष कुचलकर, दूध देने वाली बकरियों के थनों पर लाठी से वार करके और भेड़ों के पिछवाड़े में डंडे डालकर।
शुरू में हकीम उस जगह आने से झिझकता था जहाँ मैं बकरियाँ चराता था। लेकिन जब उसे एक साथी मिल गया, तो वह अक्सर वहाँ आने लगा। हालाँकि वह बहुत पास नहीं आता था, लेकिन आवाज़ लगाने की दूरी तक आ जाता था। हालाँकि उसके दादाजी उसे बार-बार आने पर मारते थे, लेकिन अपने नए साथी से मिली हिम्मत के कारण हकीम अब भी वहाँ आता रहता था। मैं उसके दोस्त से मिलना चाहता था। लेकिन वह अक्सर बाड़े से बाहर नहीं निकलता था। हकीम बकरियों को बाहर ले जाता था और बाड़े के अंदर के काम करता था।
लेकिन एक दिन हकीम उसे मुझसे मिलवाने ले आया। वह बहुत विशालकाय था। बहुत लंबा। पहली नज़र में मुझे लगा कि वह पैगंबर मूसा के ज़माने का कोई शख्स है। दूर से ही मुझे लगा कि वह पाकिस्तान का कोई पठान है। वे पास आए और हकीम ने उसका मुझसे परिचय कराया: सोमालिया का इब्राहिम खदिरी। मानो वह बरगद का पेड़ हो जो अफ्रीकी रेगिस्तान में उगा हो! हकीम और मैं उस बरगद के पेड़ के सामने मुरझाए पौधों जैसे लग रहे थे। (उस मुलाक़ात के बाद हम दोनों को खूब मार पड़ी!)
उस मुलाकात के कुछ समय बाद, जब हम रेगिस्तान में एक-दूसरे से मिले, तो हकीम एक रेत के टीले पर चढ़ गया और मुझे आवाज़ देकर बोला: 'मैंने तुम्हारे लिए एक नोट छोड़ा है। इसे पढ़ लो।' और वह चला गया। थोड़ी देर बाद, मैं अपनी बकरियों के साथ उस रेत के टीले की ओर गया जहाँ वह खड़ा था। वहाँ, एक पत्थर के नीचे कागज़ का एक टुकड़ा पड़ा था। मैंने उसे पढ़ा।
इब्राहिम खदिरी पहले भी इस देश में आ चुका है। उसे यहाँ के सभी स्थानों और रास्तों की जानकारी है। वह भागने की योजना बना रहा है। हमें भी अपने साथ ले जाएगा। अगर कुछ पता चलता है तो हम आपको बता देंगे। अल्लाह पर भरोसा रखें, जो अत्यंत दयालु है।
मेरे भीतर जो खुशी उमड़ रही थी! उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता! मैं रेगिस्तान में जबरदस्ती खिले फूल जैसी थी। जब मैंने कहा था कि मैं अपने वतन और घर के बारे में नहीं सोच रही थी, तो वह झूठ था। सरासर झूठ। मेरे हर विचार में मेरे वतन की कल्पनाएँ छाई हुई थीं। मैंने उन्हें अपनी परिस्थितियों की राख के नीचे दबा दिया था। जैसे ही मौका मिला, वे फिर से भड़क उठे। मेरा दिल दर्द से भर गया। एक

असहनीय दर्द। मैं रो पड़ी। मैंने पास खड़ी मरमैमुना को गले लगाया और चूमा। मैं जा रही हूँ, लड़की, तुम्हें छोड़कर। मैं जा रही हूँ। क्या यहाँ तुम्हारे साथ रहने के लिए कई अरवु रावुथर और मूरी वसु नहीं हैं? मेरे पास कोई नहीं है। मेरी सैंनु और मेरे पास कोई नहीं है। मुझे उसकी ज़रूरत है। और उसे मेरी ज़रूरत है।

मैंने ज़मीन पर सजदा किया। मैंने अल्लाह, जो अत्यंत दयालु है, का शुक्र अदा किया कि उसने मुझे याद रखा। मेरी पुकार सुनी। मुझे रिहा करने के लिए पैगंबर इब्राहिम खदीरी को भेजा। अल्लाहु अकबर! अल्लाहु अकबर!

मेरा दिन कितना आनंदमय हो गया था! मैंने हर काम कितने उत्साह से पूरा किया। अरबाब को मुझमें आए इस अचानक बदलाव पर आश्चर्य हुआ होगा। अरबाब, सावधान रहो। बस कुछ ही दिन बचे हैं। सब कुछ खत्म हो जाएगा। मैं चला जाऊंगा। तब देखना कि तुम किस पर थूकोगे और किसे बेल्ट से मारोगे। तुम अकेले रह जाओगे। तब तुम्हें इस नजीब की अहमियत समझ आएगी।

मुझे उम्मीद थी कि जल्द ही मुझे आज़ादी मिल जाएगी। लेकिन उस दिन कुछ नहीं हुआ। अगले दिन मैं बेसब्री से इंतज़ार करता रहा। उस दिन मेरी उम्मीद पहले दिन से कहीं ज़्यादा थी। लेकिन कुछ नहीं हुआ। उसके अगले दिन भी उम्मीद जगी, लेकिन उसकी तीव्रता कम हो गई थी। फिर, हर गुज़रते दिन के साथ, उम्मीद की लहर धीरे-धीरे कम होती गई। अंत में, यह भयानक निराशा में तब्दील हो गई। मुझे खुद से नफ़रत होने लगी और इब्राहिम खदिरी और हकीम से भी, जिन्होंने मुझे धोखा दिया था।

दो दिन तक नफरत बनी रही। फिर मन में डर बैठ गया। क्या वे मुझे छोड़कर भाग गए थे? मैं ऐसी कल्पना भी नहीं कर सकता था। अगर ऐसा था, तो मैंने आत्महत्या करके उनसे बदला लेने का निश्चय कर लिया। हर सुबह बकरियों को बाहर ले जाते समय मैं हकीम को चिंता से देखता था। और जब मुझे पता चला कि वे अभी भी वहीं हैं, तो उनके प्रति मेरे मन में एक अजीब सी कोमलता उमड़ आई। यह कोमलता इस एहसास से उपजी थी कि मैं अकेला नहीं हूँ।

धीरे-धीरे, मैं अपनी किस्मत को दोष देने लगा। अल्लाह के लिए मेरे साथ खेलना, लोगों से झूठ बुलवाना, मुझे सताना एक खेल जैसा था। नजीब तो हर तरह की मुसीबतें झेलने को तैयार है। अल्लाह, आपको मेरे साथ ऐसा करने की ज़रूरत नहीं थी।

अगले कुछ दिनों में मेरी सारी उम्मीदें टूटने लगीं। मुझे बचाने के लिए कोई खदिरी-पोदिरी नहीं है। मेरा भाग्य यही है कि मैं यहीं जियूँ और यहीं मर जाऊँ। मेरे दिन फिर से वैसे ही हो गए जैसे पहले थे। आशा की कोई किरण नहीं, सपनों की कोई किरण नहीं। एक बकरी जैसा जीवन।

तीस

यह तब हुआ जब मुझे इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। हकीम एक बकरी को हांकते हुए मेरे पास आया। 'परसों कुछ होने वाला है। तैयार रहना!' इतना कहकर वह भाग गया। ऐसा लगा जैसे उसने मेरे मन में जलते हुए अंगारे गिरा दिए हों। कुछ तो होगा। आखिर क्या? फिर भी, उसने मुझे तैयार रहने को कहा था। यह एक अच्छा शगुन था। लेकिन उस समय जो डर मैंने महसूस किया! अचानक भागने की सारी इच्छा खत्म हो गई। पिंजरे में पली-बढ़ी बकरी, चाहे उसे आज़ाद कर दिया जाए, पिंजरे में लौट ही आती है। मैं भी वैसी ही हो गई थी। मैं इस रूप में कहीं नहीं जा सकती। मैं एक बकरी हूँ। मेरा जीवन इसी मसारा में है। जब तक मैं अपनी जान न दे दूँ या किसी बीमारी से न मर जाऊँ, मैं किसी को भी अपना यह मैला-कुचैला रूप, अपना मैला-कुचैला चेहरा, अपना मैला-कुचैला जीवन नहीं दिखाना चाहती। मेरा जीवन एक बकरी का जीवन है। जब से मैं यहाँ आई थी, तब से इस मौके का इंतज़ार कर रही थी। लेकिन जब मौका मिला, तो मैं बेपरवाह हो गई। ज़िंदगी अजीब विरोधाभासों से भरी है। उन दो दिनों में मैंने कोई तैयारी नहीं की। न ही मुझे कोई खास उत्साह महसूस हुआ। मैंने कितनी बार भागने के ऐसे मौके के लिए मन को तैयार किया था! लेकिन मेरी किस्मत उस दुल्हन जैसी थी जिसका दूल्हा शादी के दिन उसे छोड़कर चला गया हो। इसलिए मैं उम्मीद नहीं लगाना चाहती थी। मैंने हकीम को भी कोसना शुरू कर दिया कि उसने उस अफ्रीकी बदमाश इब्राहिम खदिरी की बातों पर भरोसा किया।

उस शाम, हैरानी की बात यह थी कि अरबाब ने मुझे अपने तम्बू में बुलाया। उन्होंने मुझे अंदर बैठने को कहा। मैं दंग रह गया। 'आज रात बड़े अरबाब की बेटी की शादी है। इसलिए हम दोनों में से कोई भी यहाँ नहीं रहेगा। रात भर जागते रहना और बकरियों की रखवाली करना। लोमड़ी आ सकती है। साँप आ सकते हैं। चोर भी आ सकते हैं। तुम्हें सब कुछ संभाल कर रखना। जब मैं सुबह लौटूँगा, तो तुम्हारे लिए

खूबूस, बिरयानी और मजबूस लाऊँगा। ठीक है? तुम मेरे भरोसेमंद सेवक हो। आज तक तुम्हारे जैसा सेवक मुझे कभी नहीं मिला। यहाँ जितने भी सेवक थे, सब आलसी थे। तुम अच्छे हो। मुझे तुम पसंद हो। अल्लाह तुम्हारी रक्षा करे।'

मैंने सिर हिलाकर सब कुछ सुना। यही वो मौका था जिसका ज़िक्र हकीम ने किया था! अगर ऐसा है, तो आज वो खुशी का दिन है। तितली के पंख की तरह मेरा मन खुशी से झूम उठा। लेकिन मैंने बाहर इसका कोई संकेत नहीं दिया। बेपरवाह सा चेहरा बनाकर मैं तम्बू से बाहर आ गया। वो शब्द अब तक की मेरी सारी मेहनत का फल थे। जी हाँ, सिर्फ़ वो शब्द। मुझे और कुछ नहीं मिला था।

रात में एक ऐसा व्यक्ति आया जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था। उसके कपड़ों की सफेदी और सफ़ाई देखकर ही मुझे अपनी हालत का एहसास हुआ। ओह, मैं कितना दयनीय दिख रहा था! मैंने खुद को अपवित्रता का देवता मान लिया।

जब आगंतुक मेरी अरबी लेकर चला गया, तो मुझमें एक अजीब सा उत्साह उमड़ आया, ठीक वैसे ही जैसे माता-पिता के पार्टी में जाने पर घर पर खेलने के लिए छोड़े गए बच्चों में होता है। मैं खुशी से झूमते हुए मसारा में इधर-उधर दौड़ने लगी। चिल्लाते, हंसते, उछलते-कूदते हुए। मैं हकीम के मसारा की ओर भागी। वहाँ हकीम था, बेहद खुश। जैसे ही उसने मुझे देखा, वह मेरी ओर दौड़ा। उसने मुझे गले लगाया। चूमा। हम गले मिले और रोए। 'इक्का, मैं अपने उम्माह को देखना चाहता हूँ। अपने उप्पा को देखना चाहता हूँ। अपनी बहन शाहिना को देखना चाहता हूँ। मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता, इक्का,' वह दुख से रोते हुए बोला।

"ज़रूर, प्यारे। जो कुछ तुम चाहोगे, वो सब होगा। क्या अल्लाह ने ही हमें इस मुकाम तक नहीं पहुँचाया? बस कुछ ही घंटे और। अल्लाह हमारे साथ है। हिम्मत रखो," मैंने उसके गाल थपथपाते हुए उसे दिलासा दिया।

इब्राहिम चारपाई पर बैठा था। 'क्या हम नहीं जा रहे?' मैं घबराकर उसके पास गया। मेरी ओर मुड़कर उसने मुस्कुराया, उसके मसूड़े दिखाई दिए। एक मासूम सी मुस्कान, बिल्कुल बच्चे जैसी। 'क्या तुमने इतने लंबे समय तक कष्ट नहीं सहा, नजीब?' वह उठा और मेरे कंधे को छुआ, 'बस थोड़ा और इंतज़ार करो। अरबाबों को वहाँ पहुँचने दो जहाँ उन्हें जाना है। जहाँ से लौटने में बहुत समय लगता है। यह मत भूलो कि हम पैदल चलेंगे। तुम्हें अब मसारा लौट जाना चाहिए। जब हम निकलने वाले होंगे तो हम आकर तुम्हें बुला लेंगे।'

इस प्रकार, मेरे दुख भरे दिन समाप्त होने वाले थे। मैं बकरी फार्म से भागने वाला था। मैं भविष्य नहीं देख सकता था। लेकिन मुझे पूरा विश्वास था कि उसमें इतना कष्ट नहीं होगा। हे अल्लाह, अत्यंत दयालु, समस्त प्रशंसा आपके लिए है। समस्त महिमा आपकी है।

मैं दौड़कर मसारा (एक तरह का छोटा सा कमरा) में वापस गई। मेरा बैग पलंग पर पड़ा था। धूप, बारिश, ठंड, हवा और रेत से चूर-चूर हो चुका बैग। उस पर सदियों पुरानी धूल जमी हुई थी। मैंने धूल झाड़ने और ज़िप खोलने की कोशिश की। ज़ोर से खींचने पर बैग का ऊपरी हिस्सा फट गया। उसमें से तीखी गंध आई। मैंने बैग को काफी समय से खोला नहीं था। खोलने की ज़रूरत भी नहीं थी। सैनू का घर से लाया अचार अभी भी बैग में था। एक काला, सूखा हुआ अचार जिसे पहचानना मुश्किल था। यह उन शुरुआती दिनों में खुबस के साथ खाए गए अचार का बचा हुआ हिस्सा था। मैंने उसे पूरा नहीं खाया था, लेकिन सैनू की गर्माहट और खुशबू को सहेजने के लिए उसे बैग में सुरक्षित रखा था। जब सैनू से दोबारा मिलने की मेरी उम्मीदें कम होने लगीं, तो मैं अचार के बारे में भूल ही गई होगी।

मैंने वो पैंट और कमीज़ निकाली जो मैंने खाड़ी में आने से पहले सिलवाई थी। रेगिस्तान में सिल्वरफ़िश के जीवित रहने की उम्मीद तो कोई नहीं कर सकता। लेकिन वो एकदम नए कपड़े पूरी तरह से सड़ चुके थे और किसी काम के नहीं थे! रेगिस्तान की हवा की तीक्ष्णता समुद्र के नमक से भी ज़्यादा थी। मैं सोच रहा था कि उस हवा ने मुझे कितना नुकसान पहुँचाया होगा। मेरे पास घर ले जाने के लिए कुछ भी नहीं था। खाली हाथ लौटना पड़ा। मैंने थैला फेंक दिया।

मसारा के अंदर बकरियाँ बेचैन हो रही थीं, मानो उन्हें मेरे जाने का आभास हो गया हो। जब मैं मसारा में दाखिल हुआ, तो वे मेरे चारों ओर जमा हो गईं। उनकी आँखें मानो मुझसे चिंतित होकर पूछ रही थीं, "अगर तुम चले जाओगे, तो हमारा ख्याल कौन रखेगा?" मुझे शायद ही कभी इन बकरियों से दोबारा जीवन में मिलने का मौका मिले। मेरे प्यारे भाइयों, मैं जा रहा हूँ। अगर मैं यहाँ और रुका, तो मैं मर जाऊँगा। मुझे यहाँ से भागना ही होगा। तुमसे नहीं, बल्कि अपने भाग्य से। मैं तुम सबको बहुत प्यार करता हूँ। अगर तुम यहाँ न होते, तो मैं बहुत पहले ही मर गया होता। तुम ही हो, तुम्हारा प्यार है, जिसने मुझे इतने लंबे समय तक जीवित रहने में मदद की है। मैं दुनिया में जहाँ भी जाऊँगा, तुम्हें उन भाइयों के रूप में याद रखूँगा जो मेरे दुख में मेरे साथ थे। मैं हमेशा

तुमसे प्यार करूँगा। अल्लाह ही मुझे इस मसारा में इस बुरी किस्मत तक लाया है। वही अब मुझे मुक्ति दिलाएगा। मैं उससे प्रार्थना करूँगा कि वह तुम्हें भी इस भाग्य से मुक्त करे। बकरियों, मेरे दोस्तों, मेरे भाइयों, मेरे खून, अलविदा।

एक-एक करके बकरियाँ मेरे पास आईं। सबसे पहले अरवु रावुथर आया। मैंने उसके गाल सहलाए। मैंने उसे सलाह दी कि मेरे बदले आने वाली किसी भी अभागी बकरी का हाथ न तोड़े (भगवान करे किसी और को कभी ऐसा न झेलना पड़े), बल्कि हम सब मिलकर शिष्टाचार से काम करें। उसने सिर हिलाया। फिर पोचक्कारी रमानी आई। वह रोने लगी। मैं भी रो पड़ा। फिर मरियमुना आई। मैंने उसे चूमा। उसने भी मुझे चूमा। मैंने उससे कहा कि अगली बकरी को अपना प्यार दे। उसने उदास होकर सिर झुकाया। फिर इंडिपोक्कर, नजंदु राघवन, परिप्पू विजयन, चक्की, अमिनी, कौसु, रौफत आए। मैंने सबको अलविदा कहा।

जब मैं बकरियों के झुंड के पास पहुँचा तो मुझे रोना आ गया। मुझे ऐसा लगा जैसे कोई दाई अपने हाथों में जन्मे बच्चों से बिछड़ रही हो। उनमें से ज़्यादातर के जन्म के समय मैं वहीं था। मैं ही उनका पिता और माता था। मैंने ही उन्हें पाला-पोसा था। एक पल के लिए मुझे नबील की याद आई। उसके जाने से मेरा दिल दुख से भर गया। मैंने पिंकी, अम्मू, रज़िया और थाहिरा को गोद में उठाया और उन्हें प्यार से सहलाया। अब वे पहले की तरह उछल-कूद नहीं कर रही थीं, जब भी मैं उन्हें पकड़ने जाता था। वे मेरे हाथों में और मेरी छाती की गर्माहट में सिमट गईं। बच्चों, मैं जानता हूँ कि बड़े होकर तुम्हारा क्या होगा। तुम्हें बाज़ार और कसाईखानों में घसीटा जाएगा। मैं अल्लाह से दुआ करूँगा कि वह तुम्हें इस भयानक नियति का सामना करने की शक्ति दे। बेचारा नजीब बस यही कर सकता है। रोते हुए मैं उस झुंड से बाहर आ गया।

मैं ऊँटों के झुंड के पास गया। वे मेरे जाने से दुखी थे। ऊँट ऐसे प्राणी थे जिन्होंने मुझे कभी कोई परेशानी नहीं दी। वे अपने आप आते-जाते थे। जब वे आते थे तो उन्हें थोड़ा चारा और पानी चाहिए होता था। वे उसी से संतुष्ट हो जाते थे। मैं उनके चेहरे के भावों से समझ गया कि वे मुझसे प्यार करते हैं। मैंने उनकी आँखों से प्रेम को उमड़ते देखा। हम रोए, मैंने उन्हें गले लगाया और उन्होंने मुझे। अब मेरे पास अलविदा कहने के लिए कोई इंसान नहीं है। मेरे पास बस तुम हो। तुम ही हो जिन्होंने मुझे इन दिनों जीवित रखा। जिस प्रकार मैं अल्लाह का ऋणी हूँ, उसी प्रकार मैं तुम्हारा सदा ऋणी रहूँगा। मैं और रोया।

आजादी की ओर बढ़ते हुए भी, अपनों से बिछड़ना बेहद पीड़ादायक होता है। आजादी के उस सुखद क्षण में भी मैंने तीव्र दुःख का अनुभव किया।
दूर से हकीम की आवाज़ सुनाई दी। मैं मसारा से बाहर आया। बकरियाँ एक साथ रंभाने लगीं। मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। अगर मैंने पीछे मुड़कर देखा होता, तो शायद मैं उस जगह से निकल ही नहीं पाता। हकीम और इब्राहिम खदीरी मेरा इंतज़ार कर रहे थे। हम साथ चले गए। एक नई दुनिया में, एक नए जीवन में।

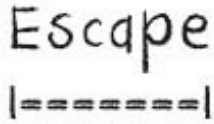

इकतीस

पूरी रात हम पागलों की तरह भागते रहे, मानो आसमान में आग लगी हो। मसारा तक जाने का कोई निश्चित रास्ता नहीं था। वहाँ आने-जाने वाले वाहनों ने रेत की एक सड़क बना दी थी। हम उसी के किनारे-किनारे भागे ताकि रास्ता न भटक जाएँ। हमें नहीं पता था कि वह रास्ता कहाँ जाता है। दूर-दूर तक फैले रेत के टीलों के बीच से घूमता हुआ वह रास्ता एक दूर पहाड़ी ढलान में गायब हो गया। उसके आगे मुझे सिर्फ वाहनों से उड़ती धूल ही दिखाई दी। खैर, हमें यकीन था कि वह रास्ता कहीं न कहीं किसी राजमार्ग से मिल जाएगा। लेकिन हमें यह नहीं पता था कि वहाँ पहुँचने में कितना समय लगेगा।
चांद की रोशनी बहुत तेज थी, इसलिए दौड़ना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं था। हमें ऐसा लग रहा था मानो अल्लाह और कुदरत दोनों हमारे साथ हों। पूरे रास्ते हमने न तो बात की और न ही एक-दूसरे की तरफ देखा। हम बस दौड़ते रहे। इतनी दौड़ के बावजूद, मन में एक डर सा बना रहा कि हम अभी तक काफी दूर नहीं पहुंचे हैं, और यह आशंका भी कि कोई हमारा पीछा कर रहा है। हमें हर आवाज और हवा की सरसराहट से डर लग रहा था कि कहीं वह अरबाब की गाड़ी तो नहीं है। इसलिए, हर पल हमारी दौड़ने की रफ्तार बढ़ती ही जा रही थी।

काफी देर तक इसी तरह दौड़ने के बाद, हम एक ऐसे मोड़ पर पहुँचे जहाँ वह कीचड़ भरा रास्ता दो अलग-अलग रास्तों में बँट गया। एक रास्ता बाईं ओर और दूसरा दाईं ओर। हमें यह तय करने में बहुत असमंजस था कि राजमार्ग तक पहुँचने के लिए कौन सा रास्ता चुनें। बहुत चर्चा के बाद, हमने बाएँ रास्ते को चुनने का फैसला किया। हम फिर से दौड़ने लगे।

कुछ और देर दौड़ने के बाद, दूर से एक रोशनी की किरण दिखाई दी। जब हमने आवाज़ सुनी, तो हमें एहसास हुआ कि यह एक वाहन था, जो धीरे-धीरे हिलता-डुलता हुआ चल रहा था। मुझे राहत मिली। हम राजमार्ग पर पहुँच गए थे। हमारी मुक्ति का अंतिम साधन। अचानक इब्राहिम ने हमें एक रेत के टीले के पीछे खींच लिया। वाहन हमारी दिशा में आ रहा था। हम देखे जाने का जोखिम नहीं उठा सकते थे। वह हमारा अरबाब हो सकता था। या कोई और जाना-पहचाना अरब। फिर हमें सीधे अरबाब की शादी की दावत वाली जगह पर ले जाया जाता। वाहन के रास्ते से हटकर, हम टीले के पीछे छिप गए। वाहन हमारे पास से रेंगता हुआ निकल गया। जब वह पूरी तरह से हमारे पास से गुजर गया, तब हमने पहचाना कि यह एक मिनी-लॉरी थी। इसका चालक वही पठान था जो हमारे मसारा में घास लाया था। ओह, वह मुझे जानता था। इब्राहिम ने अपनी छाती पीटते हुए कहा, 'वह हमें बचाएगा!' जोर से चिल्लाते हुए, हम तीनों वाहन के पीछे दौड़े। लेकिन जब तक हम सड़क पर पहुँचे, वाहन बहुत दूर जा चुका था।

मुझे कितनी निराशा और दुख हुआ! मैंने तो अपनी किस्मत और भगवान को भी कोसना शुरू कर दिया। अपनी किस्मत को यूं ही हाथ से फिसलते देखने से बड़ा दुख और क्या हो सकता है? गुस्से में मैंने अपने बाल नोचे और सीना पीटा।

‘जो चला गया सो चला गया। उसे कभी वापस नहीं लाया जा सकता। उस पर शोक मनाने का क्या फायदा? हम कोई दूसरा रास्ता ढूंढ लेंगे,’ इब्राहिम खदिरी ने कहा।

हमने वहीं रुकने और अगली गाड़ी मिलने की उम्मीद में अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया। रेगिस्तान वीरान और सुनसान फैला हुआ था। मैंने पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की, हे अल्लाह, कोई भी चालक, कोई भी परिचित व्यक्ति हमारे रास्ते में आ जाए। लेकिन हमारी तरफ कोई गाड़ी नहीं आई।

हमारे हर फैसले का हमारे भविष्य पर किसी न किसी तरह से असर पड़ता है। अब जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि हमारे लिए वहीं रुक जाना बेहतर

होता। लेकिन उस रात हमने सोचा कि समय बर्बाद करना ठीक नहीं होगा। हमें लगा कि इंतज़ार करना मूर्खता होगी। हमें जल्द से जल्द, जितना हो सके, वहाँ से भाग जाना था। सुबह सूरज की रोशनी से सब कुछ जगमगा उठेगा; रेगिस्तान में हमारे छिपने की कोई जगह नहीं बचेगी। जब अरबाब मसारा पहुँचेगा और उसे पता चलेगा कि हम वहाँ नहीं हैं, तो वह दूरबीन और बंदूक लेकर आएगा। वह हमें रेगिस्तान में, जहाँ कहीं भी हों, देख लेगा। तब हमारा भी वही हाल होगा जो उस डरावने आदमी का हुआ था। हम ऐसा नहीं चाहते थे। हमने सोचा कि जब हमने भागने का फैसला कर ही लिया है, तो हमें भाग ही जाना चाहिए।

फिर हम भागने लगे। अब मैं आपको एक बात बताता हूँ। अगर आप किसी मुसीबत में फँसे हों, तो आप जो भी करेंगे, वो हद से ज़्यादा बेवकूफी होगी। मैं अपने अनुभव से कह रहा हूँ। अगर कोई तर्कसंगत सोचे, तो हमें गाड़ी की तरफ भागना चाहिए था। लेकिन, घबराहट में हम दूसरी तरफ भाग गए। वह भयानक गलती इस बात का उदाहरण है कि कैसे घबराहट और उलझन हमें सोचने-समझने की शक्ति से दूर कर देती है। अब पीछे मुड़कर देखने पर मैं बस यही सोचकर तसल्ली दे सकता हूँ कि ऐसा होना मेरी किस्मत में लिखा था और मैं बस अपनी किस्मत से टकरा गया।

हम सड़क के किनारे-किनारे भागते हुए अपनी पूरी ताकत से दौड़े। सरदार के पास गाड़ी थी और हम पैदल थे। सरदार पाँच मिनट में उतनी दूरी तय कर सकता था जितनी हमने एक घंटे में तय की थी। इसलिए हमने एक ही रात में जितना हो सके दूर जाने और छिपने के लिए कोई सुरक्षित जगह ढूंढने की कोशिश की।

भागते-भागते हमें एहसास हुआ कि हम अकेले नहीं हैं। रेगिस्तान में और भी मसारे बिखरे पड़े थे। वहाँ भी, हम जैसे बदकिस्मत लोग बकरियों की रखवाली कर रहे थे। रास्ते में हमें कुछ मसारे दिखे जो बड़े खतरे साबित हुए—क्योंकि सभी अरबाब शादियों में नहीं गए थे। एक अंधा अरबाब भी हमें भगोड़ा समझ लेता। हमारी शक्ल देखकर ही हमारी पहचान हो गई। इसलिए, हम रास्ते से एक निश्चित दूरी बनाए रखते हुए भागे। लेकिन एक और समस्या थी। जैसा कि मैंने पहले बताया, चाँद बहुत चमकीला था। अगर हम मैदानों से भागते, तो कोई भी हमें दूर से देख सकता था। और कोई भी हमारी तीन बदसूरत शक्लों को जिन्न न समझ ले। इसलिए, हमने रेत के टीलों और पहाड़ियों के बीच से भागकर जितना हो सके छुपने की कोशिश की। लेकिन इससे हम और भी मुसीबत में पड़ गए।

हम जिस पहाड़ी पर चढ़े, वह हमें सीधे एक संकरी गली में ले गई। हमारे पास छिपने का समय नहीं था। किसी ने हमें देख लिया था। इसके अलावा, हकीम भागते समय किसी पर चढ़ गया। जब वह आदमी उठा और उसने चारों ओर देखा, तो उसने कुछ लोगों को अपने पास से भागते हुए देखा। वह चिल्लाने लगा, 'चोर! चोर!' वह उस संकरी गली में अकेला नहीं था। उसकी आवाज़ सुनकर संकरी गली में मौजूद अन्य लोग जाग गए और हमें पकड़ने की कोशिश में हमारे पीछे भागे। हम उनसे बचकर निकल गए।

तब तक उनके अर्बब जाग चुके होंगे। हमें अरबी में कुछ चीखें सुनाई दीं। अचानक किसी ने मुझे पीछे से धक्का देकर गिरा दिया। मैं मुंह के बल गिर पड़ा। अगले ही पल मुझे गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी। अगर मैं तब न गिरा होता, तो गोली मेरी पीठ में लग जाती। 'उठो मत,' इब्राहिम ने ज़मीन के पास लेटे हुए कहा। जब उन्होंने देखा, तो हमें कहीं नहीं देखा। वे अचंभित लग रहे थे। उन्होंने सोचा होगा कि हम सचमुच जिन्न हैं। हम तीनों धीरे-धीरे रेंगने लगे। हमारे शिकारी कुछ देर तक अंधेरे में अंधाधुंध गोलियां चलाते रहे, फिर मुड़कर चले गए। हम रेंगते हुए एक रेत के टीले के पीछे छिप गए। जब हमने यह सुनिश्चित कर लिया कि वे सब चले गए हैं, तभी हम फिर से दौड़ने लगे।

भागते हुए मैंने इब्राहिम को उसकी दयालुता और सूझबूझ के लिए धन्यवाद दिया, जिसने मुझे ऐन मौके पर नीचे धकेल दिया था। वह हैरान रह गया। 'मैं? तुम मेरी पहुँच से बाहर थे। और तो और, मुझे गोली चलने की बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी।'

‘हकीम, क्या यह तुम थे?’

‘नहीं, मैं नहीं,’ उसने कहा।

मैं कैसे गिर गया, मैंने सोचा। हम घबराकर एक-दूसरे को देखने लगे। तभी हमें एहसास हुआ कि हमारे बीच एक चौथा व्यक्ति भी मौजूद है। कृतज्ञता से मेरी आँखें भर आईं।

बत्तीस

भोर होते-होते हमने रेगिस्तान में अपनी दौड़ पूरी की—हम पहाड़ियों, रेत के टीलों और खाईयों को पार करते हुए, कभी भागते, कभी रुकते, कभी गिरते, कभी उठते और दौड़ते रहे। रात में किसी समय चाँदनी गायब हो गई और रेगिस्तान अँधेरे की

गुफा में बदल गया। फिर भी, हम उस वीरान इलाके में अपनी जान बचाने के लिए दौड़ते रहे।

हकीम सबसे पहले रुका। 'बस बहुत हो गया। मैं नहीं कर सकता। मुझे आराम चाहिए।' वह हांफते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा। हमें पूरा यकीन था कि हमने काफी दूरी तय कर ली है और हमें जल्दी कोई पकड़ नहीं पाएगा। इसी विश्वास में मैं भी उसके साथ बैठ गया। असल में, मैं उसके बगल में ही गिर पड़ा। मेरे पैरों में बहुत दर्द हो रहा था। मैं कुत्ते की तरह हांफ रहा था। मेरा गला इतना सूख गया था कि मैं एक शब्द भी नहीं बोल पा रहा था। मेरा दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था मानो किसी भी पल मेरी पसलियां टूट जाएंगी। मेरी नज़र धुंधली हो गई थी। कुछ देर बैठने के बाद मुझे लेट जाने का मन हुआ। सांपों या कनखियों के खतरे की परवाह किए बिना, मैंने अपनी बाहें फैलाईं और लेट गया। लेकिन इब्राहिम के चेहरे पर थकान का कोई निशान नहीं था। वह आया और हमारे साथ बैठ गया जैसे किसी हल्के-फुल्के काम के बाद ठंडी हवा का आनंद ले रहा हो। उसकी ताकत के आगे हम आवारा कुत्तों की तरह सिकुड़कर लेटे रहे।

भोर होते ही एक नया सूरज पुकारने आया—आज़ादी की, नए जीवन की। इब्राहिम की आवाज़ सुनकर मैं आँखें मलते हुए जागा। हम कहीं गहरी नींद में सो गए थे। एक पल के लिए मुझे लगा कि मैं मसारा में हूँ और अरबाब मुझे बुला रहा है। लेकिन जब मैंने आँखें खोलीं, तो मेरे सामने कोई मसारा नहीं था—न बकरियाँ, न ऊँट, न अरबाब, न तम्बू। हकीम पास ही में सिकुड़कर लेटा हुआ था। अचानक मैं सतर्क हो गया। होश में आकर मैंने हकीम को हिलाया। 'हकीम, देखो, हम यहाँ हैं। नरक में हमारे दिन समाप्त हो गए हैं। अब हम हमेशा के लिए आज़ाद हैं। अल्लाह, आपका शुक्रिया। हे समस्त प्राणियों के स्वामी, आपकी कृपा महान है। आपका प्रेम असीम है।' मैं आकाश की ओर देखते हुए रो पड़ा। मैंने हकीम को हिलाया और उसे फिर से पुकारा। मेरा हाथ झटककर उसने करवट बदल ली। वह आज़ादी की गहरी नींद का आनंद ले रहा था। जब तक मन भर न जाए, लेटने की आज़ादी। मैंने उसे सोते हुए छोड़ दिया। पीठ सीधी करके मैंने चारों ओर देखा। चारों ओर छोटी-छोटी पहाड़ियाँ और रेत के टीले थे। मुझे दूर तक कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। मैंने इब्राहिम खदिरी को ढूँढा। वह एक रेत के टीले पर खड़ा दूर तक देख रहा था।

‘इब्राहिम, क्या तुम्हें वहाँ से कोई सड़क दिख रही है?’ मैंने पुकारा। उसने कुछ नहीं कहा, बस मुझे अपनी ओर इशारा किया। मुझे डर था कि आगे क्या होगा, इसलिए मैं रेत के टीले पर चढ़ गया। रेगिस्तान! एक असली रेगिस्तान! दूर-दूर तक फैली रेत की अंतहीन पट्टी, जहाँ तक नज़र जाती थी, आगे-पीछे, दाएं-बाएं। क्षितिज से क्षितिज तक लहरदार रेत का सागर! मेरी दृष्टि में कोई बाधा नहीं थी। न कोई पेड़, न कोई पौधा, न कोई पहाड़ी। कुछ भी नहीं। बिलकुल कुछ भी नहीं।

तभी मुझे उस जगह का थोड़ा-बहुत अंदाज़ा हुआ जहाँ मैं पहुँच गया था। दौड़ते-दौड़ते हमें पता ही नहीं चला कि कब हमारे पैर सख्त ज़मीन से छूटकर ढीली रेत में धंस गए। मेरे मन में एक ठंडी सी दहशत दौड़ गई। मैंने इब्राहिम खदिरी का चेहरा देखा। उसके चेहरे पर भी घबराहट साफ झलक रही थी। हकीम अकेला ऐसा नहीं था जिस पर अभी तक उस दहशत का असर हुआ हो। वह गहरी नींद में सो रहा था।

इब्राहिम और मैंने एक-दूसरे को देखा। हे अल्लाह, हम कहाँ पहुँच गए हैं? हम कहाँ से आए हैं? अब हमें कहाँ जाना चाहिए? जिस दुनिया की तलाश में हम आए हैं, वह कहाँ है? पूरब, पश्चिम, दक्षिण या उत्तर? कौन सी दिशा हमें हमारे गंतव्य तक ले जाएगी? कौन जाने! चारों ओर बस रेत ही रेत थी। रेत के टीले। अगर कोई और अवसर होता, तो रेत के उस विशाल सागर का मनोरम दृश्य मुझे मोहित कर देता। लेकिन उस समय, वह सागर मुझे सचमुच डरा रहा था। यहाँ तक कि डोंगी या नाव भी काम नहीं आती, इसे पार करने के लिए एक बड़े जहाज की ज़रूरत थी। हे प्रभु, हम इसे कैसे पार करेंगे? बिना एक बूँद पानी के, बिना एक निवाला भोजन के? एक बार जब सूरज पूरी तरह से निकल आएगा, तो वह अपनी सारी गर्मी हम पर बरसाएगा। क्या हम उससे पहले पहुँच पाएंगे? हे प्रभु, आप ही हमारी शरण हैं। आप पर हमारा असीम विश्वास हमें बचाए।

‘इब्राहिम, तुम्हें याद है ना, कल पूरे दिन हम पश्चिम की ओर दौड़ रहे थे। चलो उसी दिशा में चलते रहें। हाईवे तक न पहुंचना नामुमकिन होगा,’ मैंने कहा।

बिना कुछ कहे, वह बेचैनी से इधर-उधर टहलने लगा। अंततः, बहुत सोच-विचार के बाद, उसने कहा, 'शहर पूर्व दिशा में है। हम पूर्व दिशा की ओर चलेंगे।'

हमने हकीम को जगाया। जब वह उठा और अपने ऊपर से रेत झाड़ी, तो मुझे एक बात समझ में आई। हकीम से भयानक बदबू आ रही थी—वही बदबू जो मैंने मसारा पहुँचने पर पहली बार महसूस की थी। मैंने उस गंध पर ध्यान देना काफी समय से बंद

कर दिया था। लेकिन मसारा से निकलने के बाद वह फिर से आने लगी। दरअसल, मुझमें भी वही बदबू थी। लेकिन मुझे खुद पर उस गंध को महसूस करने में कई दिन लग गए।

हम चलने लगे। यह खुशी मनाने का समय होना चाहिए था क्योंकि आखिरकार हमारे आज़ादी के सपने साकार हो गए थे। लेकिन हम चिंतित थे। अरबाब ज़रूर लौट आए होंगे और हमें ढूंढ रहे होंगे। यह जानकर कि हम तीनों एक साथ भाग निकले हैं, मेरे अरबाब ज़रूर क्रोधित हो जाएंगे। हमें ढूंढने के लिए वह अपना वाहन कहाँ ले गए होंगे? खैर, अरबाब, हम उस दिशा में नहीं हैं जहाँ आप हमें ढूंढ रहे हैं। हम आपकी पहुँच से बहुत दूर आ चुके हैं।

लेकिन क्या हम वाकई इतनी दूर भाग चुके थे कि सुरक्षित हो सकें? हमें अभी इस रेगिस्तान को पार करके राजमार्ग तक पहुँचना था। किसी ड्राइवर को हम पर दया करके हमें शहर तक पहुँचाना ही होगा। अगर किसी अरब ने हमें देख लिया तो सब कुछ खत्म हो जाएगा। हमारे पहनावे और शक्ल-सूरत से कोई भी एक नज़र में समझ सकता था कि हम किसी मसारा (अरब) से भाग रहे हैं। मेरे मन में खुशी से ज़्यादा चिंता भरी हुई थी। फिर भी, हम चलते रहे, उम्मीद की किरण हमारे अंदर थी। नींद ने हमें ऊर्जा वापस पाने में मदद की थी, पिछली रात की थकान अब हमें महसूस नहीं हो रही थी। यह विश्वास कि हम गुलाम नहीं बल्कि आज़ाद इंसान हैं, हमें जोश के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा था।

मुझे इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि हमारे सामने एक ऐतिहासिक रेगिस्तानी यात्रा इंतजार कर रही है।

तैंतीस

रेगिस्तान की भीषण गर्मी हम तक नहीं पहुँच पाई। हम हर दिन उसकी गर्मी और प्यास सहन करते थे। जो व्यक्ति वर्षों से रेगिस्तान में रह रहा हो, उसे रेगिस्तान आसानी से हरा नहीं सकता। केवल महलों में रहने वाले और जिज्ञासा या मनोरंजन के लिए रेगिस्तान में जाने वाले लोग ही उसकी गर्मी से थकते हैं। हम अपने गंतव्य तक तभी पहुँचेंगे जब रेगिस्तान हमें रास्ता दिखाएगा। अल्लाह हमारे साथ था। यह हमारा

विश्वास और आत्मविश्वास ही था जिसने हमें उस रेगिस्तान को साहसपूर्वक पार करने में मदद की।
हम नज़ारों का आनंद लेने लगे। ऐसा लग रहा था मानो हम किसी उत्सव में जा रहे हों। हकीम सबसे ज़्यादा उत्साहित था। वह हर चीज़ के बारे में जानना चाहता था, कि वह क्या है, क्यों है और कैसे है। बच्चों जैसी मासूमियत से उसने इब्राहिम से कई सवाल पूछे। रेगिस्तान के बारे में अपार ज्ञान रखने वाले इब्राहिम ने धैर्यपूर्वक उसके सवालों के जवाब दिए।
जब हम एक घने जंगल वाली घाटी में पहुँचे, जो लगातार आने वाले रेतीले तूफानों की वजह से समय के साथ जीवाश्म बन चुकी थी, तो हम सचमुच मंत्रमुग्ध हो गए। यह जगह हमारी कल्पना से परे थी। एक बड़े क्षेत्र में कई रेत के टीले बिखरे हुए थे। हकीम बहुत उत्सुक था और उनमें से एक को छूने के लिए घाटी में नीचे उतर गया। उस टीले से रेत गिरने लगी। मैं सोचने लगा कि कितनी सदियों के रेतीले तूफानों ने जंगल के पेड़ों और वनस्पतियों को इस तरह बदल दिया होगा। डरते हुए, मैंने कल्पना की कि रेगिस्तान एक घना जंगल है जिसे धूल भरी आंधी धीरे-धीरे निगल रही है।
‘हमें यहां ज्यादा देर नहीं रुकना चाहिए। यह बहुत खतरनाक जगह हो सकती है। अचानक से रेत का तूफान आ सकता है। तब शायद हम कभी बच न पाएं,’ इब्राहिम ने कहा।
हमने अभी मुश्किल से दस कदम ही बढ़ाए थे कि अचानक हमें अपने सामने कुछ हलचल दिखाई दी। पहले तो हमें लगा कि यह पानी है, किसी मृग-तृष्णा का मोहक भ्रम। फिर एक फुफकारने की आवाज़ सुनाई दी। क्या यह वही रेत का तूफान था जिसके बारे में इब्राहिम ने हमें चेतावनी दी थी? हमने गौर से देखा तो सामने का दृश्य ऐसे हिल रहा था जैसे कोई बगीचा हवा में झूम रहा हो। साथ ही, वह धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। इब्राहिम डर के मारे चिल्लाया, 'सांप!' तभी हमें साफ दिखाई दिया। सांपों का एक झुंड अपने सिर हिलाते हुए और रेंगते हुए आगे बढ़ रहा था। एक-दो नहीं। शायद सैकड़ों या हज़ारों सांप एक साथ थे। एक बार फिर, यह दृश्य हमारी कल्पना से परे था। वे एक विशाल सेना की तरह हमारी ओर बढ़ रहे थे, रेगिस्तान की धूल उड़ाते हुए। सबसे आगे एक विशाल सांप था, किसी सेनापति की तरह, अपना सिर उठाए हुए। उसके पीछे कई सैनिक थे!

‘अपना सिर रेत में छिपा लो और हिलना मत। हम और कुछ नहीं कर सकते,’ इब्राहिम ने कहा।

शुतुरमुर्गों की तरह हमने अपने सिर रेत में छिपा लिए और चुपचाप लेटे रहे। थोड़ी देर बाद, फुफकारने की आवाज़ हमारे पास आने लगी। मेरा शरीर डर से कांप रहा था। अगर उन जीवों में से किसी का भी दांत मेरे शरीर को ज़रा सा भी छू लेता, तो दस सेकंड में ही मेरी मौत हो जाती। मन ही मन अल्लाह को ज़ोर से पुकारते हुए, मैं चुपचाप लेटा रहा। वे आगे बढ़े, हमारे ऊपर रेंगते हुए। जैसे ही उनमें से एक ने मेरे शरीर को छुआ, मेरी त्वचा ऐसे जलने लगी जैसे किसी जलती हुई छड़ी से रगड़ी गई हो। जब हमें यकीन हो गया कि वे सुरक्षित दूरी पर हैं, तब हमने धीरे-धीरे अपने सिर उठाए और देखा। हमारे शरीर के वे सभी हिस्से जो नंगे थे, कोड़ों से कोड़े मारे जाने जैसे फफोले पड़ गए थे।

अगर आप रेगिस्तानों से परिचित नहीं हैं, तो शायद आपको आश्चर्य हो कि क्या यह सचमुच रेगिस्तान है भी या नहीं। जीवों से भरा यह रेगिस्तान लगभग जंगल जैसा था। सांप, कनखजूरे, छिपकलियां, मकड़ियां, तितलियां, गिद्ध, भेड़िये, खरगोश, नेवले और उनके जैसे अनगिनत अन्य जीव। हर किसी का अपना रास्ता, अपना इलाका, अपने नियम - मनुष्य, उसका नियम और उसका जीवन यहाँ महत्वहीन थे। ये जीव मानवीय सीमाओं को महत्व नहीं देते थे। वे रेगिस्तान के वारिस थे। अल्लाह ने यह स्थान उन्हें विरासत में दिया था। उन्हें यहीं रहने के लिए बनाया गया था। और मैं घुसपैठिया था। मेरे शरीर पर पड़े छाले तो बस उनकी हल्की सी सजा थे।

दिन में तो हमें ज़्यादा परेशानी नहीं हुई, लेकिन रात में सावधान रहना पड़ता था। सूरज डूबने के बाद, बिलों में छिपे रहने वाले जीव अपने शिकार को पकड़ने के लिए बाहर निकल आते थे। वे साँप बेहद ज़हरीले थे। पचास से भी ज़्यादा तरह के साँप थे। चलते-चलते हमने रेगिस्तान में बिखरे हुए कितने ही साँपों की केंचुली देखीं! इब्राहिम एक केंचुली उठाकर हमें बताता कि वह किस साँप की है और कितने सेकंड में वह हमें काट कर मार सकता है। यहाँ तक कि कुछ रेगिस्तानी मकड़ियों और कनखियों का काटना भी इंसानों के लिए जानलेवा हो सकता था।

क्या आप जानते हैं कि रेगिस्तान में कछुए पाए जाते हैं? हालांकि वे समुद्री कछुओं जितने बड़े नहीं होते, फिर भी उनका आकार काफी बड़ा होता है। वे तब बाहर निकलते हैं जब मौसम बहुत गर्म नहीं होता। वे लगभग सौ साल जीते हैं और उनके

शरीर का लगभग चालीस प्रतिशत हिस्सा पानी होता है। यहां तक कि ऊंट, जिन्हें हम रेगिस्तान का जहाज कहते हैं, उन्हें भी तीन दिन में एक बार पानी पीना पड़ता है। लेकिन रेगिस्तानी कछुए छह महीने तक पानी जमा करके रख सकते हैं।

रेगिस्तान में जिस एक जीव को मैं देखना चाहता था, लेकिन देख नहीं पाया, वो था शुतुरमुर्ग। रेत में अपना सिर छिपाए उसे देखने का सपना आज भी मेरे लिए एक सपने जैसा है। एक और जीव जिसके बारे में मैंने सुना था, वो था ऊंट मकड़ी—कि वो 25 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ते ऊंट के पेट को कुतरती है, उससे चिपकी रहती है और उसका आकार अरब की खाने की थाली जितना बड़ा होता है, इत्यादि। जब मैंने उसे सचमुच देखा, तो मुझे समझ आया कि मैंने जो कुछ भी सुना था, वो सब बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया था। रेगिस्तान में चलते हुए इब्राहिम ने ही मुझे एक मकड़ी दिखाई थी। चूंकि मैंने उन्हें काफी बड़ा समझा था, इसलिए मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या मैंने जो देखीं, वे मकड़ी के बच्चे थे। इब्राहिम मुस्कुराया। मैंने उस बेचारे जीव के बारे में जो कुछ भी सुना था, वो सब मनगढ़ंत कहानियां थीं। इस बात के अलावा कि वो कठोर रेगिस्तान में अपना साहसी जीवन बिताता है, बाकी सब अतिशयोक्ति थी।

रेगिस्तान में मैंने जो अद्‌भुत नजारा देखा, वह था उड़ता हुआ गिरगिट। दोपहर की धूप में चलते हुए, मेरी नज़र के सामने एक सुनहरी चमक कौंधी और गायब हो गई। गिरगिट जिन्न या भूतों जैसे लग रहे थे। वे पलक झपकते ही गायब हो जाते थे। मुझे लगा कि कहीं ये मेरी थकी हुई और धूप से रूखी आँखों का भ्रम तो नहीं है। वे अचानक रेत से निकलकर हमें घूरते, उनकी आँखें डर के मारे इधर-उधर झपकती रहतीं। कभी-कभी हम उन्हें दूर उड़ते हुए देख पाते। दरअसल, उनकी तेज़ी से उड़ने की वजह से ऐसा लगता था जैसे कोई हमारे पीछे से पत्थर फेंक रहा हो। कई बार मैंने पीछे मुड़कर देखा कि कहीं सच में ऐसा तो नहीं है। फिर, रेत की परतों से एक और उड़ती हुई आकृति निकलती, उछलती और उड़ जाती। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि ये गिरगिट होंगे।

फिर एक दिन, जब हम एक रेत के टीले पर चढ़े, तो वहाँ वे सुनहरे रंगों का खेल खेल रहे थे। वे किसी पेड़ की डाल पर उछल-कूद करते चिड़ियों जैसे लग रहे थे। लगभग सौ गिरगिट उस रेत के तालाब में खेल रहे थे। मैं उनमें से एक को पकड़ना चाहता था और यह पता लगाना चाहता था कि क्या उसके पंख हैं या वह केवल अपने पैरों से उड़ता है। लेकिन वे इतनी तेज़ी से उड़ते और रेत में गोता लगाते थे कि पकड़ने की तो

बात ही छोड़िए, मैं उनमें से किसी एक को भी ठीक से देख नहीं पाया। 'ये गिरगिट कभी पानी नहीं पीते,' इब्राहिम खदिरी ने कहा। अगर तुम बिना पानी पिए पूरा जीवन जी सकते हो, गिरगिटों, हे सुनहरे गिरगिटों, जिन्होंने मेरी इस कठिन यात्रा के इस चरण को इतना आनंदमय बना दिया, तो कृपया मुझे भी उस क्षमता का एक अंश दे दो ताकि मैं यह यात्रा पूरी कर सकूँ।

दोपहर होते-होते हवा धूल से भर गई और हमें नींद आने लगी। हम दस फीट से आगे कुछ देख नहीं पा रहे थे। इससे हमारा चलना और भी मुश्किल हो गया। ऐसा लग रहा था मानो दिन को सूरज की रोशनी नहीं, बल्कि आग ने रोशन किया हो। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती गई, हमारा शरीर कमजोर होता चला गया। दिन की शुरुआत में जो जोश हमें घेरे हुए था, वह धीरे-धीरे खत्म हो गया। लेकिन इब्राहिम हमें हिम्मत देता रहा। 'एक मील और, और शायद हम राजमार्ग तक पहुँच जाएँ!' आखिर उम्मीद ही तो इंसान को आगे बढ़ाती है। हम चलते रहे। लेकिन हमारी आँखों के सामने अंतहीन रेगिस्तान ही फैला हुआ था। रेत, रेत और बस रेत।

दोपहर भी बीत गई और शाम हो गई। हमें अभी भी वह चीज़ नहीं मिली जिसकी हम तलाश कर रहे थे। पश्चिम दिशा में हमारे ऊपर रेंगता हुआ सूरज हमें वीरान में अकेला छोड़कर क्षितिज में गायब हो गया। दिन भर बिना पानी पिए, रात करीब आ गई। हांफते और थके-हारे हम रेत पर बैठ गए। मैं फूट-फूट कर रोने लगा। दिन भर चलने के बाद भी कहीं न पहुँचने की पीड़ा ने मुझे रुला दिया। हकीम भी मेरे साथ रोने लगा।

इस देश में आने के शुरुआती दिनों में, मेरी अक्सर यह इच्छा होती थी कि मैं किसी खूबसूरत रेगिस्तान में रहूँ, एक ऐसा रेगिस्तान जहाँ रेत समुद्र की तरह फैली हो। लेकिन जब आखिरकार मैं एक खूबसूरत रेगिस्तान के सामने पहुँचा, तो मैं भयभीत हो गया। हमने रेगिस्तान पार करने वालों की कई कहानियाँ सुनी हैं। हमने पढ़ा है कि वे अपने रोमांच से रोमांचित थे। लेकिन उन सभी की यात्रा में मजबूत ऊँटों ने उनकी सहायता की थी। उनकी मदद के लिए उनके साथ बद्दू थे, जो रेगिस्तान को अपनी हथेलियों की तरह जानते थे। उनके थैले भोजन से भरे थे और उनके पास पानी से भरी चमड़े की बोतलें थीं। जिन्होंने बिना भोजन और पानी के अकेले इस रेगिस्तान को पार करने की कोशिश की, वे रेत में बेहोश होकर मर गए होंगे, अपनी कहानियाँ सुनाने के लिए जीवित नहीं रहे होंगे। अल्लाह, क्या हम भी उन्हीं की तरह बन जाएँगे? हम रेगिस्तान में मौज-मस्ती के लिए नहीं आए थे। न ही जिज्ञासावश। हम जीने के लिए

आए थे। जीवित रहने के लिए। उन लोगों के सुंदर चेहरों से एक बार फिर मिलने के लिए जो हमसे प्यार करते हैं। उनके गालों से हमारे लिए बहाए गए आँसू पोंछने के लिए। हम इसी प्रयास में इस स्थान तक पहुँचे हैं। हे अल्लाह, केवल आप ही, केवल आपकी शक्ति, केवल आपका मार्ग, केवल आपकी सुरक्षा ही हमारी रक्षा कर सकती है। हे अल्लाह, कृपया हमें इस रेगिस्तान में झुलसाकर न मार डालें।

चौंतीस

अगले दिन इब्राहिम खदिरी ने हमें भोर होने से काफी पहले जगाया और कहा, 'गर्मी बढ़ने से पहले चलो टहलते हैं।'
जब मैं उठा तो मेरे सूजे हुए पैर हाथी के पैरों की तरह भारी लग रहे थे। दर्द को नज़रअंदाज़ करते हुए, हम ढीली रेत में अपने पैर घसीटते हुए आगे बढ़े। थोड़ी दूर चलने के बाद, पूर्वी मेहराब पर सूरज दिखाई दिया। हम जानते थे कि इससे रेत में आग लग जाएगी।
आकाश ऊपर से हमें ढके हुए एक उल्टे धूसर-नीले टोकरी जैसा लग रहा था। उसका एक सिरा रेगिस्तान के किसी कोने से शुरू होता था। धीरे-धीरे ऊपर चढ़कर मेरे सिर के ऊपर अपने उच्चतम बिंदु तक पहुँचता था और फिर धीरे-धीरे दूसरे कोने में अपने किनारे तक नीचे आता था। हम उस टोकरी में फँसी मुर्गियों की तरह थे। किसी भी तरह हमें उसे उठाकर बाहर निकलना था। लेकिन ऐसा करने के लिए हमें कम से कम उसके किनारे तक तो पहुँचना ही था। एक ऐसा किनारा जहाँ तक हम इतनी दूर चलने के बावजूद अब तक नहीं पहुँच पाए थे। अनंतता का अहसास हमें घेर रहा था। मेरी नज़र में आकाश के नीले रंग और चमकते सूरज के सिवा कुछ भी नहीं दिख रहा था।
इब्राहिम ने हमें दिलासा देते हुए कहा, 'घबराओ मत। क्षितिज हमसे बस ढाई मील दूर है। और शायद उसके ठीक आगे ही वह रास्ता है जिसकी हमें तलाश है। हिम्मत मत हारो, उम्मीद के साथ चलते रहो। एक बार थक गए तो दिन भर इस धूप में पड़े रहोगे। इसलिए जितना हो सके, चलते रहो, चाहे कितनी भी मुश्किल हो। हमें जल्द से जल्द एक सुरक्षित जगह ढूंढनी है।'

कुछ देर चलने के बाद, हमें एक नदी के निशान दिखाई दिए जो बहुत पहले रेगिस्तान में बह गई थी। मैं दंग रह गया। उस चिलचिलाती गर्मी में यह कल्पना करना मुश्किल था कि कभी इन रेतीले टीलों के बीच से कोई नदी बहती थी। लेकिन उसकी रेखाएँ अभी भी स्पष्ट थीं। मैंने कल्पना की कि अतीत में मनुष्य इसके किनारे खड़े होकर इसे पार करने की कोशिश में डूब गए होंगे। उसी किनारे पर जहाँ वे पानी पीते-पीते मर गए, मैं प्यास से तड़प रहा था, मेरा गला पानी की एक बूँद के लिए तड़प रहा था। अतीत का वह क्षण मेरी स्थिति से कितना दूर है? इस बीच क्या हुआ होगा? मैंने कल्पना की कि नदी धीरे-धीरे सूख रही है और उसमें रहने वाले जीव धीरे-धीरे मर रहे हैं। मैं उसके किनारों पर लगे पेड़ों और झाड़ियों को पानी के लिए विलाप करते हुए सुन सकता था। समय, तेरा चेहरा कितना विचित्र है!

तब तक हम दो रात और डेढ़ दिन बिना पानी पिए गुजार चुके थे। हमारी आँखें मुश्किल से खुली थीं। हम अधमरी हालत में चल रहे थे। जब हमारी सहनशीलता की सीमाएँ पार हो गईं, तो हकीम पानी के लिए तड़पने लगा। समस्या यह है कि हमें पानी के अत्यधिक उपयोग की आदत है। मनुष्य चौदह दिनों तक बिना भोजन या पानी के आसानी से जीवित रह सकता है। इब्राहिम ने उसे समझाया, 'अल्लाह के बारे में सोचते हुए चलने की कोशिश करो।'

लेकिन हकीम पूरे रास्ते पानी मांगता रहा। कुछ और देर चलने के बाद उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। 'नहीं, इक्का। मैं नहीं पी सकता। तुम चलते रहो। मुझे यहीं लेट जाने दो।' मैंने उसे डांटा, 'हकीम, हिम्मत मत हारो। गिरो मत। चलते रहो।' फिर मैंने उसे 'अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर' का जाप किया। उसने भी मेरे साथ 'अल्लाहु अकबर' दोहराया। ऐसा लगा जैसे उस जाप और उसकी गूंज ने हमें नई ताकत दे दी हो। उस ऊर्जा के साथ हम थोड़ी देर और चले। फिर धीरे-धीरे हमारी चाल कमजोर पड़ने लगी। हमारे थके हुए पैर हमें और आगे नहीं ले जा पा रहे थे। हम इतने थक चुके थे कि सुन्नपन और दर्द ने हमें जकड़ लिया था। रेत की गर्मी से हमारे पैरों की त्वचा में दर्द होने लगा था। हकीम के पैर पहले से ही सूजे हुए थे। लेकिन अपनी बची हुई ताकत से उसने अपने पैरों को घसीटते हुए आगे बढ़ने की कोशिश की। अगले कुछ ही पलों में, हमें भयानक रूप से एहसास हुआ कि अब यह संभव नहीं था।

थक-हार कर हकीम ज़मीन पर गिर पड़ा। मानो मैं उसके गिरने का इंतज़ार कर रहा था, मैं भी उसके पास लेट गया। इब्राहिम ने हमें डांटते हुए कहा, 'उठो। यह आराम

तुम्हें और थका देगा, तरोताज़ा नहीं करेगा। यह धूप तुम्हारे शरीर से पानी की आखिरी बूंद तक निचोड़ लेगी। इस तरह रेत में अपने शरीर को मत झुलसाओ, बस थोड़ी देर और रहो। रेत ठंडी हो जाएगी। रेगिस्तान जल्दी ठंडा हो जाता है। तब तुम आराम कर सकते हो। क्या हमने इसे काफी देर तक सहन नहीं किया है? बस थोड़ी देर और रुक जाओ।'

'चले जाओ, कुत्ते!' हकीम दर्द से चिल्लाया। 'क्या तुमने हमें मरने के लिए बाहर निकाला है? क्या यही वादा किया था? हम तो मसारा में ही बेहतर थे। अरबाब की यातना भी इसके सामने कुछ नहीं थी। मैं नहीं कर सकता! मैं थक गया हूँ। अगर मरना ही है तो मुझे मरने दो। अगर तुम चाहो तो खुद को बचा सकते हो।'

उस यात्रा के दौरान मैंने पहली बार इब्राहिम खदिरी की आँखों में आँसू देखे। असहाय होकर उन्होंने अपने हाथ आसमान की ओर उठाए। फिर वे घुटनों के बल बैठ गए और प्रार्थना करने लगे।

रेगिस्तान उबल रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे मैं अल्लाह की कड़ाही में लेटा हूँ। फिर भी, लंबी यात्रा के बाद उस आराम ने मुझे राहत दी। शुरू में गर्मी असहनीय लग रही थी। लेकिन कुछ देर ऐसे लेटे रहने के बाद मुझे उसकी आदत हो गई। तब तक सूरज, रेगिस्तान और मैं, तीनों बराबर गर्म हो चुके थे। जो बात अलग थी, वो थी असहनीय प्यास। लेकिन उसे बुझाने का कोई उपाय नहीं था। मेरे मुँह में थूक की आखिरी बूँद भी बहुत पहले सूख चुकी थी। मैंने अपनी छाती पीटकर अपनी मूर्खता को कोसा कि भागने से पहले मैंने बोतल या किसी बर्तन में थोड़ा पानी क्यों नहीं लिया। हम ऐसे समय में निकले थे जब हमारी सारी समझ जवाब दे चुकी थी। अब हमें इसके परिणाम भुगतने ही थे। और क्या कर सकते थे?

हमें एहसास हुआ कि इब्राहिम की बात सच थी। जितना ज़्यादा हम आराम करते, हमारा शरीर उतना ही ज़्यादा थकता जाता और तरोताज़ा होने से उतना ही इनकार करता। मेरी आँखों के सामने अंधेरा छा गया। मुझे चक्कर आने लगे। मैंने दो बार उल्टी की। थोड़ी देर बाद हकीम ने भी उल्टी कर दी। इब्राहिम ने अपने कपड़े उतारे और उनसे हमारे लिए छाया बनाने की कोशिश की। लेकिन वह भी नाकाफ़ी था। उसने हमें उठाकर बिठाने की कोशिश की। लेकिन हम बस गिर पड़े। मैं गहरी नींद में सो गया। हकीम और मैं वहाँ दो लावारिस लाशों की तरह पड़े रहे। अगर वह चाहता,

तो इब्राहिम हमें छोड़कर भागने का रास्ता खोज सकता था। लेकिन उसने हम पर तब तक नज़र रखी जब तक कि रात होने पर हमने अपनी आँखें नहीं खोलीं।
जब मैं जागा तो मेरा गला बुरी तरह जल रहा था। पर उसे ठंडा करने के लिए पानी कहाँ था? हे अल्लाह, मैंने अपने घर में कितना पानी बर्बाद किया है! अब मैं एक बूँद के लिए भीख माँग रहा हूँ। मुझे अपने वतन की महानता का एहसास हो रहा है। हे अल्लाह, क्या यही उस बर्बादी की सज़ा है? मुझे माफ़ कर दे!
पानी। मुझे एहसास हुआ कि यह कितना अनमोल है।

पैंतीस

हर भाषा और धर्म के लेखकों ने रेगिस्तान को ज्ञान प्राप्ति और आध्यात्मिक पुनरुत्थान का स्थान माना है। कुछ रचनाएँ यह बताती हैं कि रेगिस्तान में जीवन बिताने से मस्तिष्क में ज्ञान का विस्फोट हो सकता है। लेकिन रेगिस्तान ने मुझे किसी भी तरह से पुनर्जीवित नहीं किया। मैं तीन साल से अधिक समय तक रेगिस्तान में रहा। फिर मैंने इसे पार करने की कोशिश की। हर बार रेगिस्तान ने मुझे दुख और निराशा के सिवा कुछ नहीं दिया। शायद रेगिस्तान आध्यात्मिक ज्ञान की तलाश में आने वालों को ही आध्यात्मिक ज्ञान देता है। मैं तो कुछ खोजने निकला ही नहीं था, इसलिए फँस गया। रेगिस्तान ने शायद यही तय कर लिया था कि उसके पास मुझे देने के लिए कुछ नहीं है।
हमें पता नहीं था कि हम कहाँ जा रहे हैं, इसलिए हम दो दिन तक रेगिस्तान में भटकते रहे। हम कहीं नहीं पहुँचे। किसी ने हमारी मदद नहीं की। तब तक हम पूरी तरह थक चुके थे। गर्म रेत पर चलने से हमारे पैरों में छाले पड़ गए थे जो फूट पड़े। सूजन धीरे-धीरे हमारे घुटनों तक फैल गई थी। असहनीय जलन। दर्द। उस दिन दोपहर के आसपास ही हकीम, जो चुपचाप चल रहा था, अचानक आगे बढ़ा और चिल्लाया, 'पानी! पानी! अल्लाह, पानी!'
मैं भयभीत होकर उस दिशा में देखने लगा जिधर वह भाग रहा था। रेगिस्तान में यात्रा का मेरा थोड़ा-बहुत अनुभव होने के बावजूद, मुझे लगा कि यह मृग-तृष्णा है। मैंने उसे वापस बुलाया। लेकिन मेरी पुकार अनसुनी करते हुए हकीम पागलों की तरह चिल्लाता हुआ आगे भाग गया। इब्राहिम और मैं उसके पीछे भागे और उसे पकड़

लिया। तब तक उसके मुँह से झाग निकल रहा था। उसकी नाक से खून बह रहा था। मैंने अपने कपड़ों से उसका चेहरा पोंछा और हमने उसे जबरदस्ती बिठा दिया। उसने बताया कि उसे चक्कर आ रहे हैं। कुछ देर बाद वह अजीब-अजीब हरकतें करने लगा। अचानक वह पागलों की तरह उछल पड़ा और भाग गया।

हम उसके पीछे दौड़े। थोड़ी देर दौड़ने के बाद वह थककर गिर पड़ा। फिर वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। जब हम उसे पकड़ने गए तो उसने हमें धक्का देकर दूर कर दिया और गर्म रेत खाने लगा। हालाँकि इब्राहिम और मैंने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन उसने अपनी शैतानी ताकत से हमें झटक दिया और रेत खाता रहा। फिर उसे उल्टी होने लगी। इब्राहिम और मैं कुछ नहीं कर सकते थे। हम बेबस थे। कुछ देर उल्टी करने के बाद हकीम खून थूकने लगा। वह रेत में पिटे हुए साँप की तरह तड़पने लगा। उसकी आँखें बाहर निकल आईं। उसकी नाक और मुँह से झाग के साथ-साथ और खून बहने लगा।

‘इब्राहिम, कुछ करो! मेरा हकीम अब मर जाएगा,’ मैं रोते हुए बोली। ‘अल्लाह, मेरे मालिक, समस्त संसार के स्वामी, ऐसा न होने दो... मेरे हकीम को कुछ न हो! कृपया उसकी रक्षा करो,’ मैंने सीना पीटते हुए प्रार्थना की।

मैंने आकाश की ओर देखा। धधकते सूरज ने मेरी आँखों को अपनी ओर आकर्षित किया।

मैं रोते हुए फिर से इब्राहिम के पास गई और बोली, 'इब्राहिम, कुछ करो...' वह बिना हिले-डुले बैठा रहा और गुस्से में आकर मैंने उसे मारा, लात मारी और उस पर थूका।

‘हम हकीम को अल्लाह के भरोसे छोड़ने के अलावा कुछ नहीं कर सकते,’ इब्राहिम रोते हुए बोला। मैंने इब्राहिम को इतना बेबस पहले कभी नहीं देखा था।

मैं पूरी तरह टूट गया था। मैं आँखें बंद करके नीचे बैठ गया। मैं हकीम की कंपकंपी नहीं देख पा रहा था। उसकी कराहें और थरथराहट थोड़ी देर तक चलती रहीं। धीरे-धीरे मैंने आँखें खोलीं और उसे देखा। वह मुझे घूर रहा था। वह कुछ कहने की कोशिश कर रहा था। मैं दौड़कर उसके पास गया। 'प्यारे हकीम, चिंता मत करो!' मैंने उसे अपनी गोद में उठा लिया। उसकी आँखें एक बार हिलीं। फिर धीरे-धीरे स्थिर हो गईं। मेरे दिमाग पर अंधेरा छा गया। मेरे शरीर पर जानलेवा थकान छा गई। मैं बेहोश हो गया।

जब मैंने आँखें खोलीं, तो मैं इब्राहिम खदिरी के कंधे से एक मृत शरीर की तरह लटकी हुई थी। रेगिस्तान में धूल भरी आंधी चल रही थी। एक कदम आगे बढ़ाना भी मुश्किल था। फिर भी, इब्राहिम मुझे अपने कंधों पर उठाए तेज़ी से दौड़ रहा था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वह इस तरह क्यों दौड़ रहा है। लेकिन मैं इतनी थक चुकी थी कि नीचे उतर नहीं पा रही थी।

मैं लटकते हुए चारों ओर देखने लगा। रेत के टीले के पीछे कुछ हलचल हुई। यह क्या है, यह सोचकर मैंने ध्यान से देखा। हलचल रेत के टीले के पीछे नहीं थी, बल्कि रेत का टीला ही हिल रहा था। जैसे समुद्र के दूर कोने से लहर आती है, वैसे ही रेगिस्तान से रेत की एक लहर आती हुई दिखाई दी। और उसके पीछे दूसरी विशाल लहरें आ रही थीं। मुझे लगा कि हम रेगिस्तान में नहीं, बल्कि समुद्र तट पर खड़े हैं। मेरे सामने स्थलाकृति लगातार बदल रही थी। रेत के टीले उठते, गिरते और हवा में गायब हो जाते।

'अपनी आँखें कसकर बंद कर लो,' इब्राहिम चिल्लाया। उसने मुझे नीचे उतारा और कसकर गले लगा लिया। 'हिलो मत!' हम एक-दूसरे को गले लगाए वहीं खड़े रहे। कुछ ही पलों में, एक लहर आई और हमें छू गई। मैं गर्म रेत को अपने चेहरे, शरीर और हाथों पर जलते हुए महसूस कर सकती थी। मुझे नहीं पता कि हम उस रेत की गुफा में कितनी देर तक ऐसे ही रहे। जब मुझे यकीन हो गया कि हवा थम गई है, तो मैंने धीरे से अपनी आँखें खोलीं और देखा। मुझे गले लगाए एक रेत की आकृति थी! हवा में सिर्फ धूल थी। मुझे आगे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। चारों ओर रेत ही रेत। हम लगभग कमर तक रेत में डूबे हुए थे। इससे भी ज्यादा, जिस बात ने मुझे हैरान किया, वह यह थी कि मेरे सामने रेत का पहाड़ आगे बढ़ गया था। मानो हमारे सामने कोई नक्शा फिर से बना दिया गया हो। उस तरह के पहाड़ ने मेरे हकीम को हमेशा के लिए दफना दिया होगा।

छत्तीस

किसी तरह इब्राहिम रेत के टीले से बाहर निकला और मुझे भी खींच लाया। वह मुझे अपने कंधे पर बिठाकर चलने ही वाला था कि मैं उसकी पकड़ से छूट गई। 'इब्राहिम, मुझे यहीं छोड़ दो और खुद को बचा लो। मैं हकीम के बिना कहीं नहीं जाना चाहती। मैं भागना नहीं चाहती। हम साथ आए थे। मैं उसके बिना घर नहीं जा सकती। मैं उसकी

उम्मत के सवालों का सामना नहीं कर सकती और न ही उसकी बहन की आँखों में देख सकती हूँ। मुझे यहीं छोड़ दो। मैं उसके साथ जाना चाहती हूँ। मैं उसके साथ जाना चाहती हूँ!'

मैंने हकीम के शव को दफनाने वाले रेत के टीले की ओर दौड़ने की कोशिश की। लेकिन इब्राहिम ने मुझे पकड़ लिया और जबरदस्ती अपने कंधे पर उठा लिया, 'अल्लाह ने मुझे उस रेत के टीले में तुम्हें इस तरह छोड़ने के लिए नहीं भेजा था। मैं हकीम को नहीं बचा सका, लेकिन मैं तुम्हें मरने की इजाज़त तभी दूंगा जब मैं मर जाऊंगा।'

मुझमें उसका विरोध करने की ताकत नहीं थी। मैं मुरझाए हुए पौधे की तरह उसके कंधे से लिपट गई। मैं एक छोटे बच्चे की तरह सिसक रही थी। मुझे गोद में लिए वह उस रेतीले जंगल से गुज़रा। प्यास, डर और भूख हम पर हावी हो गई। मैं अपने दिल की धड़कन महसूस कर सकती थी। पल बीतने के साथ-साथ वह धीमी होती गई। मेरी साँसें भी धीमी पड़ गईं। मेरी जीभ भारी हो गई, मानो मैं उसे फिर कभी हिला न सकूँ। दुनिया अँधेरी हो गई और मेरे चारों ओर घूमने लगी। भाप की तरह मेरे सिर से गर्मी निकल रही थी। मैं अपने होश खोने लगी। मुझे एहसास हुआ कि मैं हकीम की तरह अपने आखिरी पलों में पहुँच रही हूँ। इस दुनिया में मेरे पास ज़्यादा समय नहीं बचा है। अलविदा कहने का समय आ गया था। मैंने उन सभी को याद करने की कोशिश की जिन्होंने मुझे प्यार किया और जिन्हें मैंने प्यार किया। ज़्यादा लोगों के चेहरे मेरे दिमाग में नहीं आए। उम्माह, सैनू, हकीम... लेकिन मेरी मसारा की बकरियाँ एक के बाद एक मेरी आँखों के सामने आ गईं। नबील, अरवु रावुथर, पोचक्करी रमानी, मैरीमैमुना, इंडी पोक्कर, नजंडू राघवन, पारिप्पु विजयन, चक्की, अम्मिनी, कौसु, रौफत। शायद ऐसा इसलिए था क्योंकि वे बकरियाँ इंसानों से ज़्यादा मुझसे प्यार करती थीं। उन सभी ने मुझे अलविदा कहा.

शाम हुई। रात हुई। हम फिर से रेत पर लेट गए। पूरी रात एक-दूसरे से एक शब्द भी नहीं बोली। मुझे नहीं लगता था कि मुझमें उस रात को गुजारने की हिम्मत है। लेकिन मैं बच गया। अगली सुबह मैं ज़िंदा था।

सैंतीस

हवा थम गई थी और सुबह असामान्य रूप से शांत थी। हम धीरे-धीरे उठे, हममें से किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा। सारी उम्मीदें और अपेक्षाएँ खत्म हो चुकी थीं। हम बस किसी जगह पहुँचना चाहते थे। मैं तो कहीं पहुँचना भी नहीं चाहता था, बस जल्द से जल्द मर जाना चाहता था। प्यास और गर्मी बर्दाश्त नहीं हो रही थी। हे अल्लाह, हमें बचा ले, जैसे तूने हकीम को इस नरक से बचाया।

रेत पर चलते हुए मेरे पैर ज़मीन पर ठीक से नहीं टिक रहे थे। मैं अधमरे व्यक्ति की तरह चल रहा था। इब्राहिम ने कई बार मुझे अपने कंधों पर उठाने की पेशकश की, लेकिन मैंने उसे ऐसा करने नहीं दिया। मुझे पता था कि मैं उसी दिन मर जाऊंगा। मेरे शरीर में बस थोड़ी सी ही जान बची थी। मैंने चलने का फैसला किया, इस उम्मीद में कि चलने से शायद मेरी मौत जल्दी हो जाए।

कुछ देर चलने के बाद, हमें रेत पर कुछ जीवों के पदचिह्न दिखाई दिए। उनके छिपकर घूमने के हल्के निशान। इब्राहिम ने उनका पीछा किया और देखा कि वे कहाँ जा रहे हैं। वे दूर तक फैले हुए थे और जंगल में जाकर खत्म हो रहे थे। यह पुष्टि करते हुए कि यह रेगिस्तान का मध्य भाग है, वह मुझे दूसरी दिशा में ले गया। हम लगभग दोपहर तक चलते रहे होंगे कि अचानक हमें रेत पर एक बड़ी छिपकली दिखाई दी।

“छिपकली!” चिल्लाते हुए इब्राहिम उसके पीछे भागा। मुझे उसकी उत्तेजना समझ नहीं आई। मैं पहले से ही आधी नींद में झूल रहा था, मानो किसी भी पल गिर जाऊँगा...

‘नजीब, तुमने देखा क्या? वो तो एक छिपकली थी!’ इब्राहिम ने खुशी से चिल्लाते हुए कहा।

‘तो?’ मैंने भौंहें चढ़ा लीं।

‘क्या आप जानते हैं कि रेगिस्तान में छिपकली का क्या मतलब होता है? इसका मतलब है कि आसपास कहीं पानी है,’ उसने खुशी से कहा।

‘सचमुच?’ अचानक, मैं आशा से जाग उठा।

उसने सिर हिलाया। ‘अब हमें हर कदम पर बेहद सावधानी बरतनी होगी। हमें रेगिस्तान में वापस नहीं जाना चाहिए। यही हमारा आखिरी मौका है,’ इब्राहिम ने चेतावनी दी।

इसलिए हम बहुत सावधानी से चल रहे थे। हर कदम पर हम और छिपकलियों की तलाश कर रहे थे। हम उसी दिशा में बढ़ रहे थे जिधर वे भागी थीं। हम एक रेत के टीले की चोटी पर पहुँच गए थे कि मुझे वह साफ दिखाई दिया। दूर-दूर तक हरे-भरे

पहाड़! खजूर के पेड़। छोटी-छोटी झाड़ियाँ। आस-पास पानी जरूर होगा! उसके बाद मुझे समझ नहीं आया कि मैं दौड़ रहा हूँ या उड़ रहा हूँ। सारी थकान भूलकर मैं उस ओर दौड़ पड़ा। हालाँकि मेरे पैर हाथी के पैरों जितने भारी थे, फिर भी मैं उन्हें घसीटते हुए दौड़ा। हालाँकि मेरे पैरों में चोट लगी थी और खून बह रहा था, फिर भी मैं पत्थरों पर से दौड़ता हुआ आगे बढ़ा, उन्हें नजरअंदाज करते हुए। इब्राहिम खदिरी मेरे पीछे था। हालाँकि मैं मौत की कामना करते हुए चल रहा था, फिर भी जीने की इच्छा मेरे भीतर गहरी थी। शायद यही लालसा थी जिसने मुझे अंत तक जीवन से जुड़े रहने में मदद की।

क्योंकि मुझे पानी की मौजूदगी का पूरा यकीन था, मैं घनी झाड़ियों के बीच पागलों की तरह दौड़ पड़ा। मेरे सिर में हजारों मधुमक्खियों की भिनभिनाहट गूंज रही थी। मेरी आंखों के सामने हजारों सफेद गोले मंडरा रहे थे। मैं हकीम के आखिरी पलों में किए गए पागलपन भरे हाव-भाव से खुद को जोड़ पा रहा था। मैं प्यास से पागल हो गया था। मैं इधर-उधर भटक रहा था, हर दिशा में भाग रहा था। लेकिन इब्राहिम शांत और व्यवस्थित तरीके से पानी की तलाश कर रहा था। वह हरियाली वाली जगहें ढूंढ रहा था। ऐसी जगहें जहां रेत थोड़ी नम हो। आखिरकार उसे झाड़ियों के बीच एक छोटा सा तालाब मिल गया। उसने आसमान की ओर हाथ उठाए और जोर से पुकारा, 'अल्लाहू अकबर! पानी! पानी! अल्लाहू अकबर!'

वो आवाज़ मेरे कानों में पड़ते ही मेरा दिमाग आग की तरह जल उठा। मैं पागलों की तरह उसकी तरफ दौड़ा। जब मैंने उसे देखा, तो मेरी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं। झाड़ियों के बीच एक छोटा सा तालाब। इतना सारा पानी! प्यास से बेहाल होकर मैं उसकी तरफ भागा। अचानक इब्राहिम ने मुझे खींच लिया। 'पानी मत पियो!' वह चिल्लाया। मेरी आँखें गुस्से से लाल हो गईं। मेरा खून खौल उठा। अपनी पूरी ताकत इकट्ठा करके मैंने उसकी गर्दन पर ज़ोरदार प्रहार किया। उस अचानक हमले से वह लड़खड़ा गया।

मैं फिर से पानी की ओर बढ़ा। तभी इब्राहिम ने मेरे पैर पकड़ लिए और मुझे घसीटते हुए दूर ले गया और नीचे लिटा दिया। ‘मुझे छोड़ दो, कुत्ते। मुझे प्यास लगी है! मुझे पानी पीना ही है,’ मैं चिल्लाया।

लेकिन उसने मुझे जाने नहीं दिया। मैंने अपना सीना पीटते हुए रोना शुरू कर दिया। ‘हे मेरे प्रभु, आप मेरी इच्छा पूरी करना इतना मुश्किल क्यों बना रहे हैं? इस दुष्ट को

बिजली से मार डालिए। मैं इतने दिनों से उसके साथ चल रही हूँ। उसने हकीम को मार डाला। अब उसकी योजना मुझे मारने की है। वह बदमाश तालाब का सारा पानी पी जाएगा। मुझे अपनी जीभ भी गीली करने को नहीं मिलेगी। मरने से पहले मुझे थोड़ा पानी पीना ही होगा। मुझे उसका स्वाद चखना ही होगा,' मैं छटपटाते हुए चीखी।
इब्राहिम मुझे तालाब से इतनी दूर ले गया था कि मुझमें उठकर तालाब की ओर जाने की ताकत नहीं बची थी। वह तालाब की ओर गया। उसे सारा पानी पीते हुए देखकर मैं अपनी आँखें बंद कर लीं।
अचानक मुझे अपने होंठों पर नमी महसूस हुई। मैंने आँखें खोलीं। इब्राहिम मेरे पास बैठा था। उसके हाथ में एक गीला कपड़ा था। वह उससे मेरे होंठ गीले कर रहा था। लालच में आकर मैंने अपना मुँह खोला। जैसे ही पानी की एक बूँद मेरी जीभ पर गिरी, मैं ऐसे उछल पड़ा जैसे तेजाब से जल गया हो। उसने फिर से उसी कपड़े से मेरा मुँह पोंछा। पानी की बूँदें धीरे-धीरे मेरी जीभ पर रिसने लगीं।
फिर इब्राहिम गया और कपड़े को गीला किया। पानी मेरी जीभ से होते हुए मेरे गले तक पहुँच गया। वह नमी मेरे पेट तक पहुँची और मेरे सारे दर्द वाले हिस्सों में जलन पैदा कर दी। जब मेरा मुँह पूरी तरह से गीला हो गया, तब जाकर जलन धीरे-धीरे कम हुई और मुझे प्यास लगने लगी। इब्राहिम मुझे उस झरने तक ले गया। उसने हथेलियों में पानी भरकर धीरे-धीरे मेरे मुँह में डाला। मैंने तब तक पिया जब तक मेरी प्यास पूरी तरह बुझ नहीं गई। मुझे सुखद एहसास हुआ कि नमी मेरे शरीर की हर कोशिका में फैल रही है। अंत में, जब मैंने पर्याप्त पानी पी लिया, तो मैं थककर ज़मीन पर गिर पड़ा। तभी इब्राहिम खदीरी ने पहली बार उस गीले कपड़े को अपनी प्यासी जीभ पर लगाया।
अपनी छोटी सोच को याद करके मैं फूट-फूटकर रोने लगी।

अड़तीस

हम अगले तीन दिन तक उसी नखलिस्तान में रुके रहे। हमने खूब पानी पिया और खजूर के पेड़ों से खजूर खाए। हमने पर्याप्त नींद ली और उन दिनों की थकान को अपने शरीर से दूर कर दिया। लेकिन दर्द, सूजी हुई टांगें और जले हुए तलवे बने रहे। हर सुबह इब्राहिम इलाके का जायजा लेने निकलता और शाम को लौट आता। उसका

मकसद इंसानी मौजूदगी का पता लगाना था, ताकि हम और जानकारी जुटा सकें... क्या हमारे लिए बाहर निकलने का कोई रास्ता था? हम कहाँ थे? वगैरह।
पहले ही दिन इब्राहिम ने मेरे साथ चलने का प्रस्ताव ठुकरा दिया। उसने कहा, 'रेगिस्तान में तुम मुरझाते हुए फूल की तरह हो। तुम्हारी यात्रा का अगला चरण तभी शुरू होगा जब हमें कोई उचित रास्ता मिल जाएगा।' मुझे डर था कि कहीं वह भटकते-भटकते रास्ता न भटक जाए और मेरे लिए वापस न आ पाए। मुझे उसका साथ बहुत प्यारा था और मैं इस धरती पर अकेला नहीं रहना चाहती थी। जब वह देर से लौटा तो मेरी चिंता बढ़ गई। मैं अकेलेपन की कल्पना भी नहीं कर सकती थी। मुझे तभी चैन मिलता जब मैं उसे किसी दूर रेत के टीले पर देख पाती।
इब्राहिम खदिरी के दिन भर का काम खत्म करके चले जाने के बाद, मैं पूरे नखलिस्तान में घूमता था। आमतौर पर, नखलिस्तान की हरियाली कई एकड़ में फैली होती है। अरबवासी और यात्री यहाँ आते हैं। लेकिन यह वैसा बिल्कुल नहीं था। यह दुनिया का सबसे छोटा नखलिस्तान हो सकता था, इतना छोटा कि बस एक तालाब था। इसमें एक छोटा सा तालाब, कुछ खजूर के पेड़, कुछ अनजान कैक्टस और कुछ छोटे पौधे थे। इस छोटे से हरे-भरे हिस्से के चारों ओर रेत का अंतहीन विस्तार था। एक नन्हा सा नखलिस्तान। मानो ईश्वर का स्वर्ग हो। मैं अक्सर सोचता था कि क्या ईश्वर ने यह नखलिस्तान सिर्फ हमारे लिए ही बनाया है।
तीसरे दिन दोपहर को इब्राहिम खुश होकर लौटा। इसका मतलब था कि उसने कुछ ऐसा देखा था जिससे उसे खुशी हुई थी। मैं घिसटते हुए उसके पास पहुँचा। 'क्या हुआ, इब्राहिम, सड़क के कोई निशान दिखे?'
'हम जीवन से बहुत दूर नहीं हैं, नजीब,' उसने कहा। 'आज मुझे तीन पत्थर मिले। तीन पत्थर जिनका इस्तेमाल इंसानों ने किया था। कुछ लोग उस रास्ते से आए थे। खाना पकाने के लिए पत्थरों से बने चूल्हे में आग जलाई थी। यह एक अच्छा संकेत है।'
अगली सुबह, हम उसी दिशा में चल पड़े। नखलिस्तान में ज़्यादा देर रुकना व्यर्थ था। इसलिए हमने पानी की सुरक्षा छोड़कर उस ओर चलना शुरू किया जहाँ अल्लाह हमें ले जाना चाहता था। मैंने वे पत्थर भी देखे जिनके बारे में इब्राहिम उत्साहित थे। उस खुले मैदान में ढीली रेत नहीं थी। जैसे-जैसे हम चारों ओर निरीक्षण करते गए, धीरे-धीरे एक रास्ता दिखाई देने लगा। वाहनों के नियमित आवागमन से बना एक रास्ता। मानव उपस्थिति का एक और प्रमाण। यह शहरवासियों के मनोरंजन के लिए आने-जाने का

स्थान हो सकता था। यदि ऐसा था, तो यह रास्ता निश्चित रूप से हमें एक सुरक्षित गंतव्य तक ले जाएगा! एक बार फिर हमारी उम्मीद बढ़ने लगी कि हम बच जाएँगे। इसी उम्मीद के साथ हम तेज़ी से उस रास्ते पर चल पड़े। हर मोड़ पर, हर पहाड़ी के पीछे, हमें मानव उपस्थिति की उम्मीद थी। लेकिन वह रास्ता हमें बंजर और निर्जन भूमि से होकर ले गया। तभी, हमने उसे देखा। एक लंबा निशान, गिलहरी की पीठ पर बनी रेखाओं की तरह, एक रेत के टीले के बीचोंबीच से गुजर रहा था! मेरी भूखी आँखों ने उसे दूर से ही देख लिया। मैं तेज़ी से उसकी ओर दौड़ा।

मेरा शक सही निकला। ये पहियों के निशान थे। हे मेरे प्रभु, इस निशान से कई बातें पता चल सकती हैं। कि यहाँ कोई इंसान आया था! कि आस-पास इंसानी मौजूदगी है। कि कहीं आस-पास कोई सड़क है। कि कहीं आस-पास कोई बस्ती है। अंधकार के उस विशाल संसार में आशा की एक छोटी सी किरण जगी।

हमने उस रास्ते पर चलने का फैसला किया। हमें पूरा विश्वास था कि वह हमें सुरक्षित स्थान पर ले जाएगा। पहियों के निशान किसी इंसान के वाहन के नहीं थे। वे अल्लाह के वाहन के पहियों के निशान थे। बचने का संकेत। अल्लाह, शुक्र है। हज़ार शुक्र है। अरबों शुक्र है।

फिर भी हम चिंतित थे। हवा का एक झोंका ही सारी उम्मीदों को तोड़ सकता था। अगर हवा की दिशा बदल जाती, तो पहिए का निशान गायब हो जाता। लेकिन उस दिन अल्लाह हमारे साथ था। उसने हवा को हिलने तक नहीं दिया। अपनी सारी तकलीफें भूलकर हम दौड़ने लगे। मैं अपने पैरों का दर्द, फड़कन, सूजन, पीड़ा, जलन, घाव, सब कुछ भूल गया। हवा के झोंके से रास्ता उड़ जाने से पहले ही हम उस तक पहुँच गए। टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता हमारे साथ-साथ चलता रहा। हमारे सपने भी साकार हो उठे।

मुझे ठीक से याद नहीं कि हम आशा की उस हल्की सी किरण के पीछे कितनी देर तक भागे। शाम ढल रही थी जब हमें यकीन हो गया कि हम लगभग अपनी मंजिल पर पहुँच चुके हैं। लेकिन, दुर्भाग्यवश, दिन भर शांत रही हवा अचानक तेज हो उठी और पहियों के निशानों को अपने पंखों पर उड़ा ले गई।

हम स्तब्ध खड़े थे। जब तूफान थम गया, तो हमारे सामने अनंत सन्नाटा छा गया। मैं फूट-फूटकर रोने लगी। मैंने आकाश की ओर देखा। 'बस करो, प्रभु, बस करो। कृपया मेरे साथ और खेल मत खेलो, प्रभु। मैं अब और तुम्हारा उपहास सहन नहीं कर

सकती।' इब्राहिम खदिरी की आगे बढ़ने की विनतियों को अनसुना करते हुए, मैं रेत की लहरों पर ऐसे लेट गई, जैसे किसी डूबे हुए जहाज का अवशेष हो। एक और शाम आंसुओं में बह गई।

उनतीस

भोर अभी नहीं हुई थी। एक अपरिचित आवाज़ से मेरी नींद टूट गई। ज़रूर यह एक सपना रहा होगा। मैंने आँखें बंद कर लीं। फिर वही आवाज़। मैं जाग गया। रेगिस्तान, अपनी सारी उग्रता त्यागकर, शांति से सो रहा था। दूर की आवाज़ें भी साफ़ सुनाई दे रही थीं। फिर वही आवाज़। मैंने ध्यान से सुना। जब पूरी तरह से भरी हुई गाड़ियाँ राजमार्ग से गुज़रती हैं, तो उनके टायर एक अजीब सी आवाज़ करते हैं। मसारा में रात के सन्नाटे में मैंने कितनी बार यह आवाज़ सुनी थी। ज़रूर, यह भी कहीं दूर किसी वाहन के चलने की आवाज़ है। मुझे बीच-बीच में यातायात की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

मेरे सामने एक काफी बड़ी पहाड़ी थी। इस पहाड़ी के दूसरी तरफ ज़रूर कोई राजमार्ग होगा, कहीं ऐसा न हो कि मेरी इंद्रियाँ पूरी तरह से धोखा खा गई हों और यह आवाज़ मेरे थके हुए दिमाग का भ्रम हो। उस राजमार्ग से गाड़ियाँ गुज़रती थीं! मैं नींद से उछल पड़ा। 'इब्राहिम!' मैं चिल्लाया। 'हम पहुँच गए। हम पहुँच गए।' मेरा मन खुशी से झूम रहा था। मैं दौड़कर वहाँ गया जहाँ इब्राहिम सो रहा था। लेकिन वह वहाँ नहीं था। मैंने चारों ओर देखा। इब्राहिम कहीं नहीं था।

'इब्राहिम! इब्राहिम!' मैं चारों ओर घूमते हुए चिल्लाया। कहीं से कोई जवाब नहीं आया। वह कहाँ चला गया? वह तो मेरे साथ ही सो गया था। 'इब्राहिम! इब्राहिम!' मैं उसे ढूंढते हुए बार-बार चिल्लाया। मेरी सारी चीखें रेगिस्तान के अनंत विस्तार में गुम हो गईं, कोई उत्तर नहीं मिला।

रेगिस्तान के पूर्वी कोने में पहली किरण फूटी। अंधेरा छंट गया। ठीक मेरे सामने रेत और पहाड़ दिखाई देने लगे। रोशनी की सहायता से मैंने काफी देर तक चारों ओर देखा। इब्राहिम खदिरी कहीं नहीं था। एक रेत के टीले पर चढ़कर मैंने चारों ओर देखा। उसका कोई निशान नहीं था। बहुत खोजबीन के बाद ही मैंने सच्चाई स्वीकार

की। मेरे मार्गदर्शक और मेरे रक्षक इब्राहिम खदिरी मेरे जीवन से हमेशा के लिए गायब हो गए थे। बिना कोई सुराग छोड़े।
मुझे अकेलापन और उदासी महसूस हो रही थी, मानो मैं धरती पर अकेला इंसान हूँ। मैं रेत पर बैठकर रोया। इब्राहिम, तुमने मुझे इस तरह अकेला छोड़ दिया, कहाँ जा रहे हो? क्या हम इन दिनों साथ नहीं थे? सारी तकलीफों और दुखों में साथ। और अब हम यहाँ हैं, सुरक्षा की राह पर पहुँचने ही वाले हैं। राजमार्ग तक ज़्यादा से ज़्यादा एक घंटे का पैदल रास्ता है। लेकिन तुम कहाँ हो? पिछली रात कहाँ गायब हो गए? तुम मुझे बता सकते थे। कम से कम अलविदा तो कह सकते थे।
दिन ढलने के बाद ही मैं वहाँ से उठा और चलने लगा। मुझे वह चलना इब्राहिम के साथ बिताए सभी दिनों से सौ गुना ज़्यादा कठिन लगा। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं पीछे की ओर जा रहा हूँ। उस अकेलेपन ने मुझे कितना दुख पहुँचाया! आखिरकार, शाम होते-होते मैं सड़क पर पहुँच गया। यह कोई राजमार्ग नहीं था जिस पर बहुत सारे वाहन चलते हों। इक्का-दुक्का वाहन दिखते थे। ज़्यादातर भारी सामान ढोने वाले ट्रेलर होते थे। कभी-कभार ही कोई कार तेज़ी से गुज़रती थी। थककर मैं हर वाहन को हाथ हिलाकर इशारा करता रहा। लेकिन सभी वाहनों ने मुझे अनसुना कर अपने रास्ते चले गए, जिससे मैं बहुत निराश हो गया। जैसे ही हर वाहन आगे बढ़ता, मैं उम्मीद करता रहता कि अगला वाहन ज़रूर मेरे लिए रुकेगा और मुझे अपने साथ ले जाएगा। लेकिन किस्मत ने मेरा साथ नहीं दिया। किसी भी चालक ने मुझ पर दया नहीं दिखाई। बल्कि, अल्लाह ने किसी भी चालक को ऐसा करने का निर्देश नहीं दिया। इस प्रकार, मैंने एक और रात अल्लाह के बिना अकेले ही गुज़ारी।

चालीस

सुबह हो गई। रात के आखिरी पहर में लगभग थम सा गया वाहनों का आवागमन फिर से शुरू हो गया। इनमें से अधिकतर वाहन भारी सामान लादे हुए थे। सड़क के बीचोंबीच जाकर मैंने हर वाहन को हाथ हिलाकर इशारा किया। उस दिन भी सभी वाहनों ने मेरी अनदेखी की और आगे निकल गए। मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। तीन साल रेगिस्तान में बिताने के बाद मेरी जो हालत थी, उसे देखकर लोग मुझे अपने साथ ले

जाना नहीं चाहते थे। और रेगिस्तान में कई दिनों तक भटकने के बाद तो मैं बिल्कुल ही इंसान जैसा नहीं रह गया था।

मेरी भूख और प्यास बढ़ती ही जा रही थी। नखलिस्तान से निकले हुए तीन दिन हो चुके थे। आज़ादी के इतने करीब आकर अपनी जान गंवाने की कल्पना भी मैं नहीं कर सकता था। मुझे खुद से नफ़रत हो रही थी क्योंकि अल्लाह मेरी तरफ देख भी नहीं रहा था। मैंने ऐसा कौन सा गुनाह किया था जिसके लिए मुझे यह सब सहना पड़ रहा है? मैंने सीना पीटते हुए खुद से पूछा। अल्लाह, तूने मुझे रेगिस्तान में मेरे दोनों दोस्तों से बिछड़वा दिया। रेगिस्तान ने हकीम को सुखाकर मार डाला और इब्राहिम को गायब कर दिया। तू मुझे यहाँ तक लाया है। किसलिए? किसलिए? यह सवाल मेरे मन में अनसुलझा ही रह गया।

दोपहर की तेज़ धूप जल्द ही तेज़ हो गई। और भी गाड़ियाँ मेरे पास से गुज़रती रहीं। मैंने दूर से एक बहुत महँगी कार को तेज़ी से आते देखा। मुझे पता था कि उसे हाथ हिलाने का कोई फ़ायदा नहीं। जब ट्रेलर ड्राइवर भी मुझ पर हँसते हैं, तो उसका ड्राइवर मुझे ऐसी कार में क्यों बैठने देगा! फिर भी, मेरे अंदर कुछ ऐसा था जो मुझे पास आती हुई कार को हाथ हिलाने के लिए उकसा रहा था। स्वाभाविक रूप से, वह रुकी नहीं और मेरे पास से गुज़र गई। लेकिन, थोड़ी दूरी पर पहुँचकर, वह अचानक ब्रेक लगाकर रुक गई। मैं हैरान रह गया। क्या वह मेरे इशारे पर रुकी? एक पल के लिए यह सोचने के बाद कि क्या कार सचमुच मेरे लिए रुकी थी, मैं उसकी ओर दौड़ा। अंदर एक सुंदर, सजे-धजे अरब व्यक्ति बैठा था। कार की खिड़की नीचे करके उसने मुझसे कुछ पूछा। मुझे समझ नहीं आया कि क्या जवाब दूँ। आदरणीय अरब, कल से मेरे पास से कितनी गाड़ियाँ गुज़री हैं? किसी ने मेरे लिए नहीं रुका। आपने यह नहीं पूछा कि आपको क्या चाहिए, आप यहाँ क्यों रुके हैं, आप यहाँ कैसे पहुँचे। आपने तो मानो मेरे लिए ब्रेक लगा दिया हो। बस। इतना ही काफ़ी है मेरे लिए। अनजाने में ही मेरी आँखों से आँसू बहने लगे।

उसके बाद उस अरबपति ने मुझसे कुछ नहीं पूछा। उसने मेरे लिए अपनी गाड़ी का पिछला दरवाजा खोला। उसने मुझे अंदर बैठने का इशारा किया। फिर वह मुझे लेकर सड़क पर आगे बढ़ गया।

उस शानदार गाड़ी की बेदाग सीट पर सीधे बैठने में मुझे झिझक हुई। फिर भी, मैं बैठ गया। मेरे बैठने के कुछ देर बाद, उन्होंने एयर कंडीशनर बंद कर दिया और

खिड़कियाँ नीचे कर दीं। उन्होंने अपनी नाक ढँक ली। मैं जानता था कि यह मेरी बदबू के कारण था। अगर वे चाहते तो मुझे गाड़ी से बाहर निकाल सकते थे। लेकिन उन्होंने कोई नाराज़गी नहीं दिखाई। मैंने उस महान व्यक्ति से थोड़ा पानी माँगा। उन्होंने मुझे पानी की एक बोतल दी। मैंने उसे एक ही बार में खाली कर दिया। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मुझे एक और बोतल चाहिए। मैंने सिर हिलाकर हाँ कहा। उन्होंने मुझे एक और बोतल दी। मैंने उसे भी पी लिया। फिर भी मेरी प्यास नहीं बुझी। लेकिन शिष्टाचार ने मुझे और पानी माँगने से रोक दिया।

धीरे-धीरे मैं सीट पर लेट गया। मैं इतना थका हुआ था कि जल्दी ही सो गया। इसलिए, मुझे नहीं पता कि मैंने कितना सफर तय किया। मैं तभी जागा जब गाड़ी एक शहरी इलाके में रुकी। तब तक लगभग शाम हो चुकी थी। मैंने चारों ओर हैरानी से देखा। बहुत बड़ी-बड़ी इमारतें। बहुत सारे लोग और बहुत शोरगुल। भारी ट्रैफिक। कुछ और दूर चलने के बाद, उस अरब व्यक्ति ने गाड़ी सड़क के किनारे खड़ी की और मेरी तरफ देखा। मैं समझ गया कि यह मेरे लिए उतरने का संकेत था। मैं उस महान व्यक्ति के प्रति अपना आभार कैसे व्यक्त करता जिसने मुझे इतनी देर तक सहन किया? उनकी इस सद्भावना के बदले में, मैं केवल एक आंसू ही दे सकता था। उन्होंने कुछ नहीं पूछा। उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा।

मैं गाड़ी से बाहर निकला और दरवाजा बंद कर दिया। मुझे शहर के बीचोंबीच अकेला छोड़कर, वह अरबपति तेजी से गाड़ी चलाकर चला गया।

मैं रो पड़ी। मुझे एहसास हुआ कि अल्लाह कभी-कभी आलीशान गाड़ी में भी सफर करता है।

इकतालीस

आँखें फाड़कर मैं कुछ देर तक उस जगह खड़ा रहा। मैं देख सकता था कि मेरे पास से गुजरने वाले लोग मुझे ऐसे घूर रहे थे जैसे मैं कोई अजीब प्राणी हूँ। मैं धीरे-धीरे सड़क के किनारे चलता रहा। यह एक लंबी, घुमावदार सड़क के किनारे लगा बाज़ार था। चारों ओर सब्जियों और फलों के ढेर लगे थे। उनकी हल्की खुशबू हवा में फैली हुई थी। अरबों की भीड़ नदी की तरह बह रही थी। काली पोशाक पहने औरतें, जिनकी केवल आँखें दिखाई दे रही थीं, इधर-उधर घूम रही थीं। कई भारतीय विक्रेता

भी थे। व्यापार की आवाज़ें गूँज रही थीं। और उन सबके बीच, मैं एक आदिम इंसान की तरह अलग दिख रहा था। हर कोई मुझे घूर रहा था और मुझे छूने से बचने के लिए मेरे आसपास से निकलने की कोशिश कर रहा था। मुझे कोई तकलीफ नहीं हुई। बल्कि, मुझे खुद अपनी बदबू महसूस हो रही थी।

मुझे बहुत भूख लगी थी। लेकिन मेरे पास खाना खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। खाड़ी देशों में रहने के दौरान, यह पहली बार था जब मुझे पैसों की ज़रूरत महसूस हुई। अगर मैं मसारा में होता, तो कम से कम अरबाब का खुबूस तो खा ही लेता। उसके लिए मुझे पैसों की ज़रूरत नहीं थी। मैं बकरियों के लिए रखा गेहूँ भी खा सकता था। उसके लिए भी पैसों की ज़रूरत नहीं थी। लेकिन शहर में कुछ भी खाने के लिए पैसे देने पड़ते थे। मुझे बिना पैसे लिए खाना कौन देता? मैंने एक-दो दुकानों में घुसने की कोशिश की। मैंने खाने के लिए भीख भी माँगी। लेकिन उनके मालिकों ने मुझे ऐसे भगा दिया जैसे मैं कोई आवारा कुत्ता हूँ।

मेरे दिल में नई उम्मीद जगी और मैं उस बाज़ार में चल पड़ा। कुछ दूर चलने के बाद मुझे चक्कर आने लगे। मैं थोड़ा और आगे बढ़ा ही था कि मुझे एक बोर्ड दिखाई दिया जिस पर 'मालाबार रेस्टोरेंट' लिखा था। कितनी राहत मिली! यह तसल्ली मिली कि कोई तो मेरी भाषा समझ सकता है। कोई तो मेरी बात समझ सकता है। मैंने हिम्मत जुटाई और उसकी तरफ चल पड़ा।

मुझे याद नहीं कि उस जगह पहुंचने के बाद क्या हुआ। बाद में मुझे पता चला कि मैं सीढ़ियों पर बेहोश हो गया था।

Refuge

O

बयालीस

अरब के हर शहर में एक प्रेमपूर्ण, आश्रय देने वाला बरगद का पेड़ होता है।

बाथा बाजार में मलयाली लोगों के लिए एक आश्रय स्थल, कुंजिक्का के होटल के सामने ही मैं बेहोश हो गई थी। अल्लाह की कृपा देखिए! मैं उस बाजार के लिए बिल्कुल अजनबी थी, कहीं भी भटक सकती थी और कहीं भी बेहोश हो सकती थी। मेरी परवाह कोई नहीं करता। लेकिन अल्लाह ने तय किया था कि मुझे कुंजिक्का तक पहुंचना है। इसलिए मैं उस रास्ते पर चली, मालाबार रेस्टोरेंट के दरवाजे पर पहुंची और गिर पड़ी। उन्होंने कुंजिक्का के दिल पर भरोसा किया कि वह बाकी का ख्याल रख लेगा।

शहर पहुँचने के तीसरे दिन जब मैंने आँखें खोलीं, तो खुद को कुंजिक्का के कमरे में पाया। होश आने पर मेरे हाथों और पैरों में तेज़ दर्द हो रहा था। मेरी बांह में सुई लगी थी और ड्रिप लगी हुई थी। मुझे लगा जैसे मैं किसी अस्पताल में हूँ। फिर भी, अपने आस-पास मलयालियों को देखकर मैं रो पड़ी। कुंजिक्का ने मेरा हाथ थामकर मुझे सांत्वना दी। मैं बाथा के मलयालियों के बीच चर्चा का विषय बन गई थी। जब उन्हें पता चला कि मुझे होश आ गया है, तो उनमें से कई लोग दौड़कर कमरे में आए। वे मेरे लिए सेब, संतरे, अंगूर और केले उपहार में लाए। हर कोई मेरी कहानी जानना चाहता था। मैं उस हालत में कैसे पहुँची? मैं वहाँ कैसे पहुँची? उनकी जिज्ञासा उनके चेहरों पर साफ झलक रही थी। लेकिन किसी ने मुझसे कुछ नहीं पूछा। दो दिन बाद, जब एक डॉक्टर आया, उसने मेरी जाँच की और ड्रिप हटाई, तब कुंजिक्का ने धीरे से मुझसे मेरी कहानी पूछी।

मैंने कहा, 'मुझे एक दर्पण चाहिए।'

मेरे बगल में बैठी कुंजिका ने पूछा, 'दर्पण क्यों?'

मैं बस खुद को देखना चाहता हूँ।

वहां मौजूद अन्य लोग एक-दूसरे को घूरने लगे।

मैं बस खुद को वैसे देखना चाहता था जैसे हर कोई मुझे देखता था, वह आदमी जिसे हर कोई दयनीय समझता था।

उनमें से एक मेरे लिए एक छोटा सा दर्पण लाया। मैंने खुद को देखा। मैं उसे काफी देर तक देखता रहा। मैं खुद को बिल्कुल पहचान नहीं पाया। दर्पण में जो व्यक्ति मुझे दिख रहा था, वह एक अजनबी था। उसके बाल छोटे कटे हुए थे, दाढ़ी मुंडी हुई थी। दर्पण में दिख रहा व्यक्ति वह नहीं था जो अपने वतन से निकला था। मैं बिल्कुल कोई और ही था। एक सांवला, कमजोर, दुबला-पतला शरीर, जिसके दांत बाहर निकले हुए थे।

अगर किसी और मौके पर मुझसे कहा जाता कि दर्पण में दिख रहा व्यक्ति मैं ही हूँ, तो मैं विश्वास नहीं करता।
कुंजिक्का ने मुझे समझाया कि कैसे बेहोश होने पर उन्होंने और उनके कर्मचारियों ने मुझे संभाला और मुझे खाना-पानी देने के लिए अपने रेस्तरां में ले आए; कैसे मुझे उनके कमरे में ले जाया गया; कैसे उन्होंने बड़ी कोमलता से मुझे उस दिन, अगले दिन और उसके अगले दिन नहलाया; कैसे एक नाई को बुलाकर मेरे बाल कटवाए और दाढ़ी बनवाई; कैसे एक डॉक्टर को बुलाकर मेरी जांच और इलाज करवाया गया। लेकिन मेरे अवचेतन मन ने इनमें से किसी भी घटना को दर्ज नहीं किया था।
मेरे पास उन्हें देने के लिए आँसुओं के सिवा कुछ नहीं था। बदले में देने के लिए मेरे पास प्यार भी नहीं था। मुझे बस एक ही अफ़सोस था कि बाल और दाढ़ी काटने से पहले उन्होंने मेरी तस्वीर नहीं ली। मैं कभी अपना वह आदिम रूप नहीं देख पाया जिसमें मैं था। आज मेरे पास उस जीवन के प्रमाण के रूप में आपके सामने पेश करने के लिए कोई सबूत नहीं है। बस मेरा अनुभव और यादें। यहाँ तक कि वह पासपोर्ट भी, जो उस देश में मेरे आगमन का प्रमाण था, अरबाब की हिरासत में था...
मैंने वहां मौजूद लोगों से पूछा, 'आज कौन सी तारीख है?'
‘यह तेरहवीं तारीख है।’
'कौनसा महीना?'
उन्होंने भौंहें चढ़ाईं। 'अगस्त।'
'कोनसा साल?'
वे चिंतित हो गए। 'उन्नीस सौ पचानवे।'
‘हे प्रभु! रब्ब अल आलमीन...’ मैंने अपने हाथ अपनी छाती पर रखे। फिर मैंने बीते हुए समय का हिसाब लगाया।
तीन साल, चार महीने, नौ दिन।
मुझे सुनने वाले लोग अवाक रह गए।
फिर, दो दिन बाद, जब मैं थोड़ा चलने-फिरने लायक हो गया, तो कुंजिक्का मुझे उस कमरे से अगले कमरे में ले गई। उस कमरे में एक टेलीफोन था। कुंजिक्का ने मुझे उसके सामने बिठा दिया।
क्या तुम घर फोन नहीं करना चाहते? क्या तुम अपने परिवार और अपनी पत्नी की आवाज नहीं सुनना चाहते?

मैं रो पड़ी। मेरे घर में टेलीफोन नहीं था। मैंने उसे मोपला के पड़ोसी का टेलीफोन नंबर बताया। मुझे आज भी हैरानी होती है कि मुझे वह नंबर कैसे याद रहा, जिसे मैंने इतने लंबे समय से इस्तेमाल नहीं किया था। मैंने आखिरी बार उस नंबर पर मुंबई से कॉल किया था।

कुंजिक्का ने टेलीफोन के सामने बहुत देर तक इंतजार किया। कनेक्शन नहीं लग रहा था।

आखिरकार दूसरी तरफ फोन की घंटी बजी। उसने मुझे रिसीवर थमा दिया। मुझे अपने पड़ोसी को पहचानने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ी। जब आखिरकार उसने मुझे पहचान लिया, तो कुछ देर सन्नाटा छा गया। फिर उसने पूछा, 'नजीब, तुम इतनी देर से कहाँ थे?'

मेरे पास कोई जवाब नहीं था। मैं कल्पना कर सकता था कि मेरे बारे में घर पर कितनी तरह की कहानियां फैल गई होंगी।

'एक चौथाई घंटे बाद फोन करना। मैं तुम्हारी पत्नी को ले आऊंगा,' उसने कहा।

वे पंद्रह मिनट मेरे लिए उस तीन साल से भी लंबे थे जो मैंने उस मसारा में बिताए थे। कुंजिक्का ने आखिरकार फिर से नंबर डायल किया।

इस बार सब आसान था। कुंजिक्का ने मुझे रिसीवर थमा दिया। मैंने बस हेलो कहा। दूसरी तरफ से मेरी सैंनु के ज़ोर-ज़ोर से रोने की आवाज़ आई। फिर काफी देर तक हम दोनों बस रोते रहे। उसने कुछ नहीं पूछा। कहाँ थी तुम? अभी तक फ़ोन क्यों नहीं किया? वहाँ बैठे-बैठे ही उसने मेरे मन की बात समझ ली होगी।

कुछ देर रोने के बाद उसने कहा, 'हमारा बेटा नबील इस साल से बालवाड़ी जाने लगा है। क्या तुम उसे देखना नहीं चाहते? इक्का कब घर आ रही है? इक्का, हमारा उम्माह अब नहीं रहा। पिछले साल। वह दिल टूट जाने से मर गई, तुम्हारे बारे में एक शब्द भी सुने बिना...'

मुझमें और कुछ सुनने की हिम्मत नहीं बची थी। मैंने रिसीवर नीचे रख दिया। मेरा मन दर्द से तड़प रहा था। चेहरा ढँककर मैं रोने लगा। कुंजिक्का ने मुझे दिलासा दिया, 'क्या तुमने बहुत दुख नहीं सहा, नजीब? जो कुछ भी तुम्हें मिला है, वह अल्लाह की देन है। हमें उसकी इच्छा पर सवाल उठाने का कोई अधिकार नहीं है।'

कुंजिक्का की उदारता का सहारा लेकर मैं तीन महीने तक उनके साथ रहा। वहाँ, उनके दिए आश्रय में, मेरे घाव भर गए। मेरे पैरों की सूजन कम हो गई। मैं स्वस्थ हो

गया। और समय-समय पर मैंने कुंजिक्का और उनके दोस्तों को अपनी कहानी सुनाई। उनमें से कई ने मेरी कहानी पर विश्वास करने से इनकार कर दिया। केवल कुछ ही लोगों ने मुझ पर विश्वास किया। यहाँ तक कि जिन्होंने विश्वास किया, उन्हें भी इब्राहिम खदिरी का गायब होना समझ से परे लगा। उनके संदेह जायज़ थे। मेरे पास इसका कोई उचित स्पष्टीकरण नहीं है।

इब्राहिम खदिरी। मेरे रक्षक। रेगिस्तान में मेरे मुक्तिदाता। मेरे पैगंबर मूसा। मुझे सुरक्षा के द्वार तक पहुँचाने के बाद वे कहाँ गायब हो गए होंगे? आपकी तरह, मुझे भी नहीं पता।

जब मेरी तबीयत सुधर रही थी, तब हमीद ने कुंजिक्का के कमरे में पनाह ली। वह एक अरब के खेत में मज़दूर का काम करता था। उसे रात तक कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी और बहुत कम वेतन के बदले बहुत दुर्व्यवहार सहना पड़ता था। जब हालात असहनीय हो गए, तो वह भाग गया। उसका साथ मिलना राहत की बात थी। वरना, कुंजिक्का और उसके दोस्त जब रेस्टोरेंट में काम करने चले जाते थे, तो मुझे अपार्टमेंट में बहुत अकेलापन महसूस होता था। उसकी मौजूदगी ने मेरी ज़िंदगी को खुशनुमा बना दिया।

फिर, कई दिनों की योजना बनाने के बाद, और कई लोगों की सलाह और निर्देशों का पालन करते हुए, हमने बिना देरी किए पुलिस के सामने आत्मसमर्पण करने और किसी तरह जेल पहुंचने का फैसला किया।

तैंतालीस

हर चेहरे को ध्यान से देखते हुए, अरबाब कतार के पास से गुज़रे। उनके हर कदम के साथ मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। मैं दोबारा उस मसारे में जाने की कल्पना भी नहीं कर सकती थी। अल्लाह, फिर से? मैं ऐसा नहीं कर सकती। मुझ पर थोड़ी रहम करो। मेरा दिल जल रहा था और रो रहा था। लेकिन मैं हमीद की तरह विलाप नहीं कर रही थी। मैं वहाँ निडरता से खड़ी रही। वह इंतज़ार मानो कभी खत्म नहीं होगा। आखिरकार, अरबाब आए और मेरे सामने खड़े हो गए। उन्होंने मुझे घूरा। उनकी आँखों में मुझे रेत के टीले लहरों की तरह हिलते हुए दिखाई दिए। उनकी उग्रता ने मुझे डरा दिया। लेकिन मैं हिली नहीं। मैं वहाँ उस पल का इंतज़ार करती रही जब मुझे

कतार से बाहर खींच लिया जाएगा। काफी देर तक वहाँ खड़े रहने के बाद, अरबाब ने एक बार मेरे कंधे पर थपथपाया। फिर, मानो उन्होंने मुझे पहचाना ही न हो, वे अगले व्यक्ति की ओर बढ़ गए। मुझे नहीं पता कि मुझे पकड़ने आए अरबाब का मन कैसे बदल गया। यह एक चमत्कार था, एक महान चमत्कार। मैं इसे और कैसे समझा सकती हूँ? लेकिन अरबाब मेरे मन में संदेह के जलते हुए अंगारों का एक फावड़ा फेंककर चला गया।

परेड खत्म होने के बाद, मैंने एक भले पुलिसवाले से कहा कि उस दिन आए अरबों में मेरा अरबाब भी मौजूद था और अल्लाह की कृपा से ही वह मुझे साथ लिए बिना चला गया। पुलिसवाले ने जवाब दिया कि अरबाब यह कहते हुए वापस चला गया, 'बात बस इतनी है कि वह मेरे वीजा पर नहीं है, वरना मैं उसे घसीटकर वापस मसारा ले जाता!' मैं स्तब्ध रह गया। या तो अरबाब ने अपने शिकार पर दिखाई गई दया को छिपाने के लिए झूठ बोला था या उसने कोई भयानक सच उजागर कर दिया था। क्या वह मेरा प्रायोजक नहीं था? क्या उसने मुझे गैरकानूनी रूप से बंदी बना रखा था? क्या उसने उस दिन हवाई अड्डे पर मेरा अपहरण किया था? क्या मुझे किसी और के वीजा पर लाया गया था? तो अल्लाह... क्या तूने मुझे किसी और का अंजाम भुगतने को मजबूर किया?

करुवट्टा के बहनोई ने बाद में कसम खाकर कहा कि उन्होंने मेरे लिए चरवाहे का वीज़ा नहीं बनवाया था। यह एक निर्माण कंपनी में सहायक का वीज़ा था। सच कौन बोल रहा था, यह तो भगवान ही जानते हैं। मैं इसके बारे में सोचकर अपनी नींद खराब नहीं करने वाला। उस जीवन में जाना मेरी नियति थी। मैंने उस पर विजय प्राप्त कर ली। मैं इसके बारे में और गहराई से नहीं सोचूंगा। अगर मैंने ऐसा किया, तो मैं निश्चित रूप से पागल हो जाऊंगा।

तीन और सप्ताह बीत गए। मैंने उन सभी दिनों में इस डर में बिताए कि अरबाब जाली दस्तावेज़ लेकर वापस आ जाएगा। लेकिन वह नहीं आया। उसने किसी और को काम पर लगा दिया होगा। अल्लाह उस बेचारे पर रहम करे।

हमेशा की तरह, अरब परेड के अगले दिन दूतावास के अधिकारी आए। हम सब कतार में खड़े हो गए। उन्होंने एक-एक करके नाम पुकारे। मैं हमेशा की तरह वहाँ बेमन से खड़ा था। अचानक मुझे लगा जैसे मैंने अपना नाम सुना हो। मैं एक पल के लिए झिझका। क्या सच में उन्होंने मेरा नाम पुकारा था? या यह मेरा वहम था? लेकिन

उन्होंने फिर से मेरा नाम पुकारा। 'नजीब मुहम्मद।' इस बार मैंने साफ सुना। मेरा ही नाम था! मैं धड़कते दिल के साथ आगे बढ़ा। मेरा नाम सुनकर, मेरे साथ मौजूद सभी लोग खुशी के आँसू बहाने लगे। उनमें से जेल में मेरी सबसे वरिष्ठता थी।
उस दिन हम अस्सी लोगों को भारत जाने का 'मुफ्त पास' मिला। यह सरकार की एक परियोजना का हिस्सा था जिसके तहत अवैध रूप से रहने वाले लोगों को उनके मूल देशों में वापस भेजा जा रहा था। इसलिए कुंजिक्का को मेरे टिकट के लिए पैसे जुटाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। मुझे यकीन है कि अगर ज़रूरत होती तो वह ज़रूर जुटा लेते। कुंजिक्का ऐसे ही इंसान थे।
जब दूतावास के लोग रिहाई के कागजात तैयार कर रहे थे, तब मैंने अपने साथ आए सभी लोगों को अलविदा कहा। मैंने सभी को सांत्वना दी। मैं पुलिसकर्मियों से मिला और उन्हें भी अलविदा कहा।
वार्डन के दफ्तर में हमसे कुछ कागज़ों पर हस्ताक्षर करवाए गए। फिर हमें हथकड़ी पहना दी गई। बाद में हमें एक कोने में कतार में खड़ा कर दिया गया। फिर दोपहर होते-होते एक बस आई। वह बस सीधे हवाई अड्डे के लिए रवाना हुई। हमें एक विशेष दरवाजे से अंदर ले जाया गया। मैं कुंजिक्का को फोन करके अपनी रिहाई की खबर भी नहीं दे पाया। उसे किसी से पता चल गया होगा। मुझे आज भी इस बात का अफसोस है कि उससे एक शब्द भी कहे बिना मुझे जाना पड़ा। अगर आप दुनिया के किसी कोने से इसे पढ़ रहे हैं, तो आशा है कि आप मेरी इस चूक के लिए मुझे माफ कर देंगे।
हमारी वापसी की उड़ान रात में थी। दूतावास के अधिकारियों ने बोर्डिंग पास बांटे। हम सब एक साथ विमान की ओर चलने लगे। मुझे यह नज़ारा देखकर ऐसा लग रहा था मानो बकरियों के झुंड को वापस चरागाह में ले जाया जा रहा हो! मैं भी उन्हीं बकरियों में से एक थी। मेरा जीवन सचमुच एक बकरी जैसा था।

लेखक का नोट

एक दिन मेरे दोस्त सुनील ने मुझे नजीब नाम के एक व्यक्ति की कहानी सुनाई। मैंने सोचा कि यह खाड़ी देशों की आम दुखभरी कहानियों में से एक है। मैंने इसे गंभीरता

से नहीं लिया। लेकिन सुनील ने मुझे नजीब से मिलने के लिए प्रेरित किया। उसने ज़ोर देकर कहा कि मुझे उससे बात करनी चाहिए, उसकी बातें सुननी चाहिए और अगर हो सके तो उसके बारे में लिखना चाहिए। सुनील ने कहा कि नजीब की कहानी उन लोगों के लिए एक सबक होगी जो छोटी-छोटी बाधाओं का सामना करने पर हार मान लेते हैं और बिखर जाते हैं। तो मैं गया और नजीब से मिला, जो एक बहुत ही सरल स्वभाव का व्यक्ति था।

नजीब पहले तो अपने अनुभव के बारे में बात करने से हिचकिचा रहा था। उसने कहा, 'वो सब बातें बहुत पहले हुई थीं। मैं उन्हें भूल चुका हूँ।' लेकिन जब मैंने उससे अपनी कहानी सुनाने का आग्रह किया, तो धीरे-धीरे उसने अपने जीवन के उस दौर की कहानी सुनाना शुरू कर दिया। एक-एक करके, वो घटनाएँ जिन्हें वो भूल चुका था, उसकी आँखों के सामने जीवंत हो उठीं। उसकी सशक्त कहानी ने मुझे सचमुच आश्चर्यचकित कर दिया।

उसके बाद मेरी नजीब से कई बार मुलाकात हुई और हमने घंटों बातें कीं। मैंने उनसे सवाल पूछे और खाड़ी में उनके जीवन की छोटी-छोटी बातों के बारे में जाना। मुझे एहसास हुआ कि उस जीवन के बारे में मैंने पहले जो भी सुना था, वह अस्पष्ट, सतही और वास्तविकता से बहुत दूर था।

जब मैं पहली बार नजीब से मिलने गया, तो मेरा इरादा उनकी कहानी पर उपन्यास लिखने का नहीं था। मैं तो बस उस इंसान को जानने के लिए उत्सुक था जिसने जीवन में इतना कुछ झेला था। लेकिन जैसे-जैसे मैंने उनके अनुभवों के बारे में और जाना, मुझे उनके बारे में लिखने की तीव्र इच्छा हुई। खाड़ी देशों में लाखों मलयाली रहते हैं? लाखों लोग वहां रहकर अपने वतन लौट आए हैं! लेकिन उनमें से कितने लोगों ने सचमुच रेगिस्तान की कठोरता का अनुभव किया है? मैंने नजीब की कहानी को बढ़ा-चढ़ाकर या अलंकृत करके पाठक को खुश करने की कोशिश नहीं की। इसके बावजूद भी, नजीब की कहानी पढ़ने लायक है। यह सिर्फ नजीब की कहानी नहीं है, यह असल जिंदगी है। एक बकरी की जिंदगी।

***** समाप्त *****

sjeet

पेंगुइन बुक्स
पेंगुइन ग्रुप द्वारा प्रकाशित
पेंगुइन बुक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, 11 कम्युनिटी सेंटर, पंचशील पार्क, नई दिल्ली 110 017, भारत; पेंगुइन ग्रुप (यूएसए) इंक., 375 हडसन स्ट्रीट, न्यूयॉर्क, न्यूयॉर्क 10014, यूएसए; पेंगुइन ग्रुप (कनाडा), 90 एग्लिंटन एवेन्यू ईस्ट, सुइट 700, टोरंटो, ओंटारियो, एम4पी 2वाई3, कनाडा (पियर्सन पेंगुइन कनाडा इंक. का एक प्रभाग)।
पेंगुइन बुक्स लिमिटेड, 80 स्ट्रैंड, लंदन WC2R 0RL, इंग्लैंड; पेंगुइन आयरलैंड, 25 सेंट स्टीफंस ग्रीन, डबलिन 2, आयरलैंड (पेंगुइन बुक्स लिमिटेड का एक प्रभाग); पेंगुइन ग्रुप (ऑस्ट्रेलिया), 250 कैम्बरवेल रोड, कैम्बरवेल, विक्टोरिया 3124, ऑस्ट्रेलिया (पियर्सन ऑस्ट्रेलिया ग्रुप प्राइवेट लिमिटेड का एक प्रभाग)।
पेंगुइन ग्रुप (न्यूजीलैंड), 67 अपोलो ड्राइव, रोजडेल, ऑकलैंड 0632, न्यूजीलैंड (पियर्सन न्यूजीलैंड लिमिटेड का एक प्रभाग)
पेंगुइन बुक्स (दक्षिण अफ्रीका) (प्राइवेट) लिमिटेड, ब्लॉक डी, रोज़बैंक ऑफिस पार्क, 181 जन स्मट्स एवेन्यू, पार्कटाउन नॉर्थ, गौतेंग 2193, दक्षिण अफ्रीका
पेंगुइन बुक्स लिमिटेड, पंजीकृत कार्यालय: 80 स्ट्रैंड, लंदन WC2R 0RL, इंग्लैंड
www.penguin.co.in
यह पुस्तक सर्वप्रथम मलयालम में ग्रीन बुक्स द्वारा 2008 में 'आडु जीवथम' शीर्षक से प्रकाशित हुई थी। सर्वप्रथम पेंगुइन बुक्स इंडिया द्वारा 2012 में प्रकाशित हुई।
कॉपीराइट © बेन्यामिन 2012
अनुवाद का कॉपीराइट © जोसेफ कोयिप्पल्ली 2012
कवर इलस्ट्रेशन जॉय गोस्वी द्वारा बनाया गया है।
सर्वाधिकार सुरक्षित
यह एक काल्पनिक रचना है। नाम, पात्र, स्थान और घटनाएँ या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से प्रयुक्त की गई हैं, और किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति, घटना या स्थान से कोई भी समानता पूरी तरह से संयोगवश है।
ISBN: 978-01-4341-633-3
यह डिजिटल संस्करण 2012 में प्रकाशित हुआ था।

ई-आईएसबीएन: 978-81-8475-665-4